SHRI SHARIKA LEELA-LEHRI
(NOU TRANGO KA SANGARAH)
SHATI BAAR

श्री शारिका लीला-लहरी

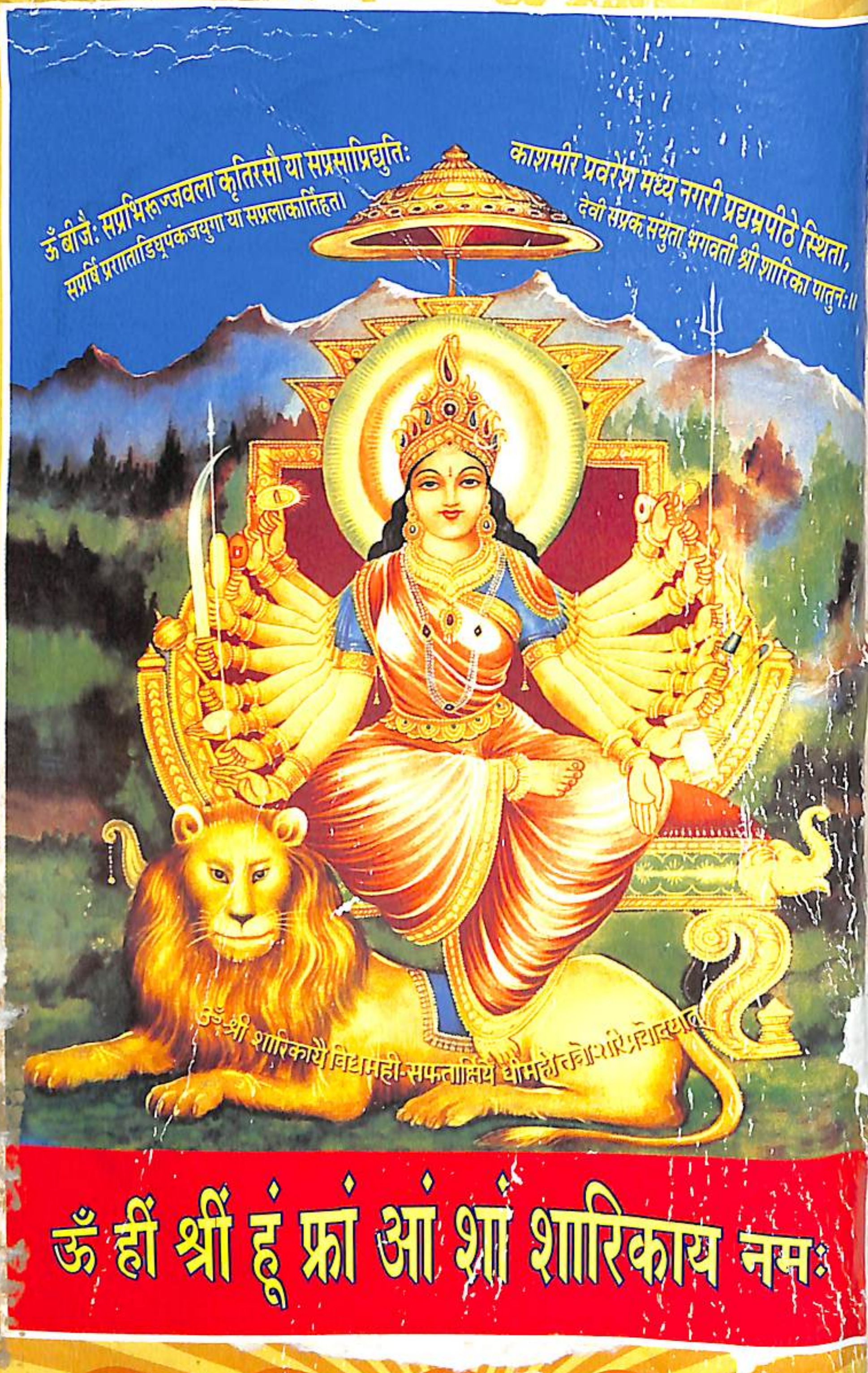
(नौ तरंगों का संग्रह)

जयतु शारिकै:

प्रद्युम्न शिखरासरनां मात चक्रोपशोमिताम्।
पठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम्

छटी बार

प्रकाशक :
श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर अस्थापन (रजि
हारी पर्वत श्रीनगर-काश्मीर


ॐ बीजैः सप्रभिरुज्जवला कृतिरसौ या सप्रसाप्रिद्युतिः
सप्तर्षि प्रगातांडिघ्रपंकजयुगा या सप्रलाकार्तिहत।
काशमीर प्रवरेश मध्य नगरी प्रद्यम्नपीठे स्थिता,
देवी सप्तक संयुता भगवती श्री शारिका पातुनः॥
ॐ श्री शारिकायै विधमहो-सफताक्षिये धीमहि तन्नो शारि प्रचोदयात
ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकाय नमः

जयतु शारिकै:

प्रद्यम्न शिखरासीनां मात चक्रोपशोमिताम्।
पटेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम्।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

छटी बार

प्रकाशक : श्री श्री जगद्म्बा शारिका चक्रेश्वर हारी
पर्वत श्रीनगर-काश्मीर

मूल्य :

"धार्मिक-संस्कृति और कश्मीर"

कश्मीर का प्राग-ऐतिहासिक युग (Pre-historic-Period) उतना ही पुराना है जितनी स्वयं कश्मीर की धरती और इसका परिवेश। भूगर्भ वैज्ञानिक खोज के अनुसार सतीसर का पानी आज से तीन-चार लाख वर्ष पहले यहां से निकास के क्रम में चालू हो चुका था। नीलमत पुराण (B.C. 200) की रचना में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है[1]। दक्ष प्रजापति के हवन की आग में झुलसी सती को उठाकर भगवान शंकर ने कश्मीर के इस अपार सरोवर में अध-जली सती के पार्थिव शरीर को प्रवाहित किया था अतः इस कारण इसका नाम सतीसर पड़ा[2]। इस सरोवर के पानी को निकास देने का प्रयत्न महर्षि कश्यप की निरंतर तपस्या का फल है। इसके अतिरिक्त 'कश्मीर' देशवाचक नाम भाषात्मक तीन बिन्दुओं पर आधारित हैं।

"क+अश्म+ईर"

'क' का अर्थ है पानी, 'अश्म' का अर्थ है पत्थर या पहाड़ और 'ईर[3]' का अर्थ है बहना या निकास देना। अतः महर्षि कश्यप ने पहाड़ों के बीच रुके हुए पानी को तपस्या के प्रभाव से निकास दिया और उसका नाम कश्मीर (क+अश्म+ईर=कश्मीर) पड़ा। कश्यप आर्यों की एक शाखा थी, जिनका विस्तार रूस के कास्पियन सागर (Caspian sea) से लेकर कश्मीर तक था। और इनके प्रमुख नगर काश्यप स्थान[4] (काफिरिस्तान)

1. नीलमत पुराण : श्लोक 45-70, 127, 150-240
2. नीलमत पुराण : श्लोक 127
3. नीलमत पुराण : श्लोक 226-227
4. थामस वाट्टरस : ऑन युवान च्वांगस ट्रेवल इन इण्डिया-122

सिन्धु-कश्यप[५] (हिन्दु कुश) कश्यप-गृह[६] (काशगर) और कश्नीर आदि। यही कारण है कि कश्मीर की वैदिक तथा शैवी कर्मकाण्डीय व्यवस्था के प्रेरक ऋषि लौगाक्षि ने डंके की चोट की तरह इस बात को दोहराया है- "सरिताम् काश्यपीनाँसरितो यज्ञकीर्तिम् इच्छमानानाम'[७]। (यह सूक्त (वैदिक) उन-काश्यपियों के निमित्त है जो यज्ञ कीर्ति की इच्छा को प्राथमिकता देते हैं।) कश्मीर की इष्ट देवी शारदा है और शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी पीठ से उसका स्थान पश्चिम में पड़ता है। वास्तव में दोनों शक्ति पीठों में शिला (चट्टान) का ही भव्य स्वरूप है। अन्तर मात्र इतना ही है कि शारिका-पर्वत पर चक्रेश्वरी स्वयं मौन यन्त्र स्वरूप में विराजमान हैं और शारदा शक्ति पीट में मुखर वाणी स्वरूप सरस्वती है। भक्तजन शारिका के चक्रेश्वर शक्ति पीठ में श्री यन्त्र की तपस्या किया करते थे और तपस्या का वरदान शारदा के शक्ति पीठ के पास मिलता था।[८] शारिका पर्वत के नीचे वितस्ता का प्रवाह है और शारिदा भगवती के नीचे मधुमती नदी का प्रवाह है। नीलमत पुराण के आधार पर कश्यप ऋषि ने सारे देवी देवताओं को कश्मीर बुलाया और सबों ने अपना अपना स्थान यहाँ अपनाया। यही कारण है कि कल्हण राजतरंगिनी में लिखते हैं "तिलांशोपि न यत्रास्ति पथ्व्यारस्ती थैंबहिष्कृत"[९]। (कश्मीर प्रदेश का कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर तीर्थ नहीं है)

5. गिलगित मैनस्क्रप्ट–212
6. गिलगित मैनस्क्रप्ट–107
7. लौगाक्षि पछति (लौगाक्षिकशिका समय 400 B.C. है)
8. षारदा महात्म्य पटल 3
9. कल्हण : राजतरंगिणी 138

कश्मीर देश स्वयं माँ भगवती का स्वरूप है। यह बात स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने कश्मीर में आकर, राजा दामोदर की विधवा रानी यशोवती को कश्मीर के राजसिंहासन पर बिठाते समय इस प्रकार से कही थी "कश्मीर : पार्वती तत्र[10]" (कश्मीर की धरती स्वयं में पार्वती स्वरूप है) धर्म और धार्मिक अनुष्टानों की दृष्टि से कश्मीर शाक्त-धर्म का अनुयायी हरप्पा संस्कृति के साथ-साथ हो रहा है। शाक्त संप्रदाय की मान्यता है कि यह सारा ब्रह्माण्ड मात्र एक अपार सक्रिय चेतना का प्रवाह है[11] (The entire Cosmic-Universe is creative-conscious flow) श्री अभिनव गुप्त[12] ने अपने तंत्रालोक में इस अपार की महाशक्ति को द्वादशकाली के प्रतीक के रूप में इसका विभाजन ३६० डिग्री अंशों या डिग्रियों में आकर इसके स्वरूप का अपार वर्णन किया है जैसे : द्वादशकाली का स्वरूप १२ की गिनती है। प्रतिपद्य (एक) से अमावस्या तक १५ की गिनती बनती है और फिर प्रतिपद्य से पूरिणमा तक १५ की गिनती बनती है इस प्रकार से १५+१५=३०X१२=३६० डिग्री अंश, इस प्रकार हमारी पृथ्वी की अंश रेखा बनती है। यही द्वादशकाली प्रथमतः : सृष्टि (creation) स्थिति (Preservation) और संहार (Destruction) करती रहती है, (क) I सृष्टि + सृष्टि, II सृष्टि + स्थिति, III सृष्टि + संहार (ख) I स्थिति + सृष्टि, II स्थिति + स्थिति, III स्थिति + संहार।

10. कल्हण : राजतरंगिणी 1.72
11. षिवदृश्टि 17
12. अभिनवगुप्तपाद : तंत्रलोक, चौथा अह्निक

(ग) I संहार + संहार, II संहार + सृष्टि, III संहार + स्थिति। इस प्रकार के काल-चक्र का बनना और बिगड़ना निरन्तर चलता रहता है। कश्मीर का प्राचीनतम धर्म इसी दर्शन पर आधारित है। जो कालान्तर में वैदिक धर्म के साथ मिलकर एक नये स्वरूप में उभर आया।

शारिका पर्वत पर अवस्थित चक्रेश्वरी महायंत्र का सिद्धपीठ ब्रह्माण्ड- व्यापी शक्ति (Cosmic - universal energy) का एक स्वयंभूः (Automatic) स्वरूप है। इस महाशक्ति पीठ के चारों ओर आठ भैरवों का निवास है। भैरव का सामान्य अर्थ है :- "भ" भरण (सृष्टि या creation) "र" रमण (स्थिति या Preservation) और "व" वमन (संहार या Destruction)। भैरवों की संख्या आठ हैं, इस का तात्पर्य है : पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर तथा चार कोण, जैसे पूर्वोत्तर कोण, पश्चिमोत्तर कोण, वगैरा। इस तरह इनकी गिनती आठ बनती है। इन आठों भैरवों में पूर्णराज भरव सदा चक्रेश्वरी महायंत्र के सामने रहकर लगातार प्रवाहित-जल से अभिषेक करता रहता है। चक्रेश्वरी महायंत्र के बायें तरफ दक्षिण दिशा में काल शक्ति महाकाली का निवास रहता है और उत्तर में महायंत्र के दायें तरफ शारिका अर्थात विकास और समृद्धि देवी का निवास रहता है और पूर्व में सिद्धलक्ष्मी का निवास है। शीतला आदि देवियाँ भी पीठ के आसपास रहती हैं[13]। चक्रेश्वरी यंत्र के पास दक्षिण के द्वार पर गणनायक

---

13. यामिनी तंत्र

गणपति का वास होता है और उत्तर के आस-पास वामदेव या वामकेश्वर का स्थान होता है। चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ का मुख पश्चिम की तरह बना रहता है क्योंकि हमारी पृथ्वी माता भी अपने दैनिक शक्ति प्रवाह को अपने अक्ष (Axis) पर पश्चिम से पूर्व ओर परिक्रमा (Rotation) करती है। इस परिक्रमा को कश्मीर के तांत्रिक क्रम स्तोत्र में अस्तोदित (Rotation) का नामकरण दिया गया है। शाक्त-तंत्र शास्त्र के आधार पर जहाँ भी इस प्रकार का चक्रेश्वरी महायंत्र होता है उस प्रदेश में आंशिक शक्तियों या भगवतियों का स्थायी आवास आवश्यक होता है। जसे चण्डी, दुर्गा, उमा, राज्ञा बाला, त्रिपुरा, भुवनेश्वरी, सरस्वती, भद्रकाली, जवाला, भर्ग शिखा तथा त्रिसन्ध्या भगवती आदि। यामिनी तंत्र के आधार पर कश्मीर में इन सब ही शक्तियों का भव्य निवास है यही कारण है कि समूचे भारत में "चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र" मात्र कश्मीर में ही है। महाकवि बिल्हण ने 'विक्रमाङ्कदेव चरित' में कश्मीर के प्रद्युम्नपीठ के चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र को इन शब्दों में अपनी भावना प्रकट की है "यत् प्रद्युम्नक्षितिधः रनिभादुत्तमाङ्ग बिभति"[14] (शारिका पर्वत का प्रद्युम्नपीठ महायंत्र गर्व से सिर उठाये हुए हैं)

यामिनी तंत्र के आधार पर चक्रेश्वरी महायंत्र के पाद ल (bottom) में पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में निरन्तर जल कुण्ड का प्रवाह होना आवश्यक है। शारिका

---

14 बिल्हण : विक्रमाङ्कदेव चरित, सर्ग 18, 15, (10th Century A.D.)

पर्वत के पश्चिम में पूर्णरज भैरव का जल-कुण्ड है और पूर्व मे पुष्कर बल (पोखरी बल) का जल कुण्ड है (कश्मीरी भाषा में जहां भी पानी या पानी का प्रवाह होता है, वहां बल साथ जुड़ा रहता है जैसे देवीबल, यारबल, त्रागबल, हजरत बल आदि)

पौराणिक कथा के आधार पर मां शारिका (मैना, कश्मीरी हॉर) का स्वरूप धारण करके अपनी चोंच से मेरु पहाड़ के एक बड खण्ड को उठाकर उस भयंकर राक्षस के ऊपर फेंका जिसके फलस्वरूप वह राक्षस वहीं नीचे दबकर मर गया। शारिका महात्म्य और सोमदेव के कथा सरित सागर में इस प्रकार की कथाएं मिलती हैं। नीलमत पुराण (२०० बी.सी.) में शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी महाश्रीयंत्र का ऐतिहासिक साक्षय इस प्रकार से मिलता है :-

आषाढ़ नवमी चैव यशोविजयकांक्षमि।
पूजनीया महाशक्ति चक्रेशयंत्र वासिनी।।१७

(यश और विजय की कांक्षा रखने वाले मनुष्यों को आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी (9th day of Bright fort night of Ashadha) को चक्रेश्वरी महायंत्र की पूजा करनी चाहिए)।

नीलमत पुराण से लेकर कश्मीर के सब ही संस्कृत इतिहासकारों ने शारिका पर्वत ओर चक्रेश्वरी महायंत्र का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। इस में कल्हण, जोनराज, श्रीवर और शुक विशेष उल्लेखनीय है। प्रवरसेन द्वितीय के समय कल्हण लिखते हैं :-

15. षारिका महात्म्य

16. सोमदेव : कथासरित सागर 73, 109

17. नीलमत पुराण

"श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम"[18]।। (उसी समय श्री पर्वत अर्थात् शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा)

'श्री पर्वत' शारिका पर्वत का दूसरा नाम है, जिसका संबन्ध महाश्रीयंत्र से है। यहां इस बात का संकेत देना आवश्यक वनता है कि मुगल सम्राट अकबर द्वारा वनवाई गई वड़ी दीवार[19] या कलाई से पहले देवी आँगन का इलाका "सिद्धगिरि पाद"[20] तक फैला था। 'सिद्धगिरि' स्थान वाचक नाम भाषा के अपभ्रश के कारण आज 'साजगँरी' मोहल्ला है। जहां पर पूर्णराज भैरव का मन्दिर और अमृतकुण्ड (चश्मा) है। देवी कांगन और सजगरी मोहल्ले के वीच का इलाका आजकल 'हवल' कहलाता है। शक्ति तंत्र के आधार पर इसका प्राचीन नाम "शवर"[21] था जो आज 'हवल' कहलाता है। शवर शव्द का संबन्ध पाशुपत से है। अतः हवल का इलाका पाशुपत संप्रदाय का एक पावन तीर्थ संगम रहा है। पंचरस्तवी में इसका साक्ष्य इस प्रकार से

18. कल्हण : राजतरंगिणी 3267
19. अबुल फजल : अकबर नामा 1084–85
20. कल्हण : राजतरंगिणी 3378 (काष्मीरी भाशा में 'द' का परिर्वतन 'ज़' में हुआ करता जैसे संस्कृत सिद्धकथा (सीधी बात) किन्तु कष्मीरी 'स्येज़कथ' (सीधी बात)
21. सस्कृत में 'षवर' का अर्थ षिकारी। कष्मीरी अपभ्रंष में संस्कृत भाशा की 'ष' ध्वनि 'ह' में बदलती और 'र' 'ध्वनि' 'ल' में बदलती है। इस प्रकार संस्कृत 'षवर' 'हवल' में उभर आया है।

मिलता है :- "शिवामन्वग्यान्तीम् शवरमहमन्वेमि शवरीम्"२२ (शिकारी रूप शिव के पीछे-पीछे चलती हुई- शिकारिनी का रूप धारण किए हुए शिव शक्ति स्वरूप माँ भगवती को बार-बार प्रणाम करता हूँ) कश्मीर के महाराजा रणादित्य के राजकाल का वर्णन करते हुए कल्हण कहते हैं :-

रणरम्भास्वामिदेवौ दम्पतिभ्यां व्यधीयत्।
मठः पाशुपताभ्यां च ताभ्यां प्रद्युम्नमूर्धनि[२३]।।

(इस प्रकार रणादित्य और उसकी महारानी ने रणारम्भा स्वामी तथा रणारम्भा देव नाम के दो मन्दिर बनवाये और पाशुपत संप्रदाय के साधकों के लिए प्रद्युम्न शिखर पर एक मठ का निर्माण किया)।

चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का प्राचीनतम नाम 'प्रद्युम्न-पीठ' रहा है। जैसे "प्राद्युम्नपीठे स्थिता"[२४] (प्रद्युम्नपीठ पर ठहरी हुई)। पचस्तवी में भी चक्रेश्वरी शक्तिपीठ का नाम "प्रद्युम्नसीम्नि" ही मिलता है[२५]। कई टीकाकार भ्रम के कारण 'प्रद्युम्न' का अर्थ कामदेव या भगवान श्री कृष्ण के पोते अनिरुद्ध से जोड़ते हैं जो सरासर गलत थे क्योंकि शाक्तमत श्री कृष्ण से भी प्राचीन रहा है। इस तथ्य को गीता जी में भगवान श्री कृष्ण स्वयं "मम योनि महत्ब्रह्म" (मेरी शाक्त योनि ही विशाल ब्रह्म है) कह कर स्वीकारते हैं। वास्तव में संस्कृत भाषा में 'द्युम्नम्' का अर्थ है- शक्ति, चेतना, सत्ता या बहुमूल्य संपत्ति (Energy, Strength, power valuable Property)

---

22. पंचस्तवी : संकलजननीस्तवः, स्तव 55
23. कल्हण : राजतरंगिणी 3.460
24. षक्तितंत्र
25. पंचस्तवी : चर्चस्तव 2.14

"द्युम्न" के आगे का 'प्र' उपसर्ग (Preflex) है। संस्कृत में 'प्र' का प्रयोग उत्कर्ष (Exalation) के लिए होता है जैसे : ताप (आंच) प्र + ताप = प्रताप (विशेष आंच) इस प्रकार से 'प्रद्युम्न' का अर्थ है "ब्रह्मण्ड व्यापी अपार चेतना" Infinite cosmic conscious energy)। यह एक अद्भुत आश्चर्य का विषय है कि कश्मीर के इतिहासकारों ने शक्ति चक्र चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का नाम "प्रधुम्न" ही प्रस्तुत किया है। कल्हण[२६] ने प्रघुम्न मूर्धनि तथा प्रद्युम्नपीठ, जोनराज[२७] ने प्रद्युम्नाद्रि तथा प्रद्युम्नगिरि, श्रीवर ने प्रद्युम्नशिखर[२८]। सोमदेव ने भी अपने कथासरित[२९] सागर में शारिका पर्वत के लिए प्रद्युम्न पीठ का नाम ही दिया हैं ·जोनराज सुल्तान बडशाह के दरबारी इतिहासकार रहे हैं (1420 59 AD) उनका कहना है कि सुल्तान बडशाह ने प्रद्युम्न पीठ की तलहटी में ही अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा। जोनराज के कहने का तात्पर्य यह कि सुल्तान बडशाह ने शारिका पर्वत के प्रद्युम्नपीठ की छत्रछाया में अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा[३०]।

कश्मीर के शाक्त संप्रदाय (cult) का सीधा संबन्ध विनष्ट हरप्पा की संस्कृति से है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण

26. कल्हण : राजतरंगिणी 3.460, 7.1616
27. जोनराज : राजतरंगिणी–589
28. श्रीवर : जैनराजतरंगिणी–1.7.104; 2.88
29. सोमदेव : कथासरित सागर 73,109
30. जोनराज : राजतरंगिणी – 589

हेरत (शिवरात्रि) के पर्व पर पूजा जाने वाला सन्प-पोतल

(स्थाणु-पुत्तल) है क्योंकि हरप्पा की खुदाई में भी पक्की मिट्टी के 'सन्यपुतल' पर्व 'सन्यवारी' आदि बड़ी तादाद में मिले हैं। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि मोहन-जो-दारो और हरप्पा के लोक शिव और देवी पूजा के उपासक कश्मीरियों की तरह ही रहे हैं। इस कारण हेरत, हार मण्डल, हार-गिन्दुन और हांर (मैना) आदि उनके की धार्मिक उत्सव रहे हैं और इस प्रकार हरप्पा से कश्मीर तक एक ही धार्मिक संस्कृति के लोग आज से ५००० वर्ष पहले रहा करते थे।

अन्त में चक्रेश्वरी के महाश्रीयंत्र के बारे में कुछ कहना आवश्यक बनता है। चक्रेश्वरी महापीठ शिला के रूप में विद्यमान है और शिला पर विभिन्न प्रकार के त्रिकोण, पञ्चकोण, षट्कोण, अष्टकोण, दशकोण, द्वादशकोण, तथा षोडशकोण गोलाकार वलयों की तीन जोड़ियां इसके अतिरिक्त दक्षिण में गणेश जी का सिर, तथा तीन स्थानों पर मैना (हॉर) की आकृतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में मोहन-जो-दारो के आकार के अक्षर और ब्राह्मी लिपि के अक्षर और वण उकेरे या खुदे (Carved) हुए मिलते हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि प्रत्येक खींची हुई रेखा एक तो स्पष्ट और सीधी खींची हुई है और प्रत्येक बिन्दु और कोण का निर्माण करती है। एक व्यवस्थित श्रीयंत्र, जैसा कि बंगाल, आसाम, केरल, कर्नाटक और मध्य भारत के शाक्त पीठों में मिलता है, कश्मीर के प्रद्युम्नपीठ का चक्रेश्वरी यंत्र उनसे यथार्थ में भिन्न है। हमें संयम से इस बात को नये सिरे से समझना है कि कहीं किसी अन्धकार के युग में हमारी अतीत की परंपरा लुप्त हुई है। वर्तमान प्रद्युम्नपीठ के चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ को हम शारिका भगवती का स्थान

समझ बैठे हैं किन्तु सबसे उलझा हुआ प्रश्न यह उभर आता है कि एक ही पीठ पर दो शारिकाओं का अस्तित्व सम्भव नहीं है। सही बात तो यह है कि प्रद्युम्नसिद्ध पीठ से उतर कर जब हम उत्तर दिशा की ओर परिक्रमा के लिए आगे की ओर बढ़ते हैं तो सामने दायें तरफ पहाड़ की तलहटी के ऊपर 'हांरी' भगवती का पावन स्थान मिलता है। कश्मीरी भाषा में 'श' ध्वनि में प्रायः बदलती है इस भाषावैज्ञानिक (Linguistics) नियम के आधार पर संस्कृत 'शारी' या 'शारिका' का स्वरूप हारी या हॉरी या हारिका हुआ है। अतः प्रथमतः हमें यह समझना है कि प्रद्युम्नपीठ का स्थान चक्रेश्वरी यंत्र का स्थान है और शारिका का स्थान 'हॉरी' का स्थान है। वास्तव में अगर हम फिर से इस बात को समझें कि पर्वत का नाम शारिका पर्वत है और वह इतिहास से स्वीकृत भी है रहा प्रश्न शाक्तपीठ चक्रश्वर यंत्र का, वह स्थान किसी भी देवी से संबंधित न होकर केवल प्रद्युम्नपीठ है और प्रद्युम्न का अर्थ है ब्रह्माण्ड की अपार सक्रिय-चेतना शक्ति और चक्रश्वरीपीठ इसी का शक्ति स्रोत है।

सन्तों की चरण धूलि
डॉ० त्रिलोकी नाथ गंजू
८२ सत्थू श्रीनगर।

होराष्टमी संप्तर्षिशुभ संवत् ५०५६
श्रीनगर-कश्मीर (भारत)

वर्ण क्रमानुसार भजन सूची

अ

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ती हुन्दुय टोठ संतान।
महा गणपत जय जयकार।।

त्रि नेत्र धा'र्' छुक च़ एक दन्तो
ड्यूकि छुय धूभान चन्द्रम तार
गज़ मुख वात चन्द्र लम्भुदरो। महा०

सिज हंदि दात छुख च. विनायको
वल्लभा ह्यथ गगुर वाहन
दीवान हंदे च़य सिद्धि दातो।
महा गणपत जय जयकार।।

नमः शिवाय

तारि छुस गोमुत तार दिम भवसर.
शंकर ईन्य आर म्योनुय।।

१. यावुन ह्यथ गोम यिथ प्योम बुजर
स्वप्न वथ ओस लुकचार म्योनुय
न्यथ हाव शिव रूप मंज चिथ मन्दिर. । शंकर०

२. माया ज़ाल वठ रठ च़ट अकि दर.
लवि कनि थव परिवार म्योनुय
अन्तर मुख रोज़ सुख भर. दुःख हर. शंकर०

३. वैराग्य मछ जोर सु.ति त्याग खंजर.
देह अभिमान मद मार म्योनुय
जिन्द थव वांसि सू.ति सेज़र त. पजर.। शंकर०

४. वासनायि म्यानि मंज बस प्रकृति पर.
पछि सुस्त थव आचा़र म्योनुय
लछ़ि प्यठ प्योमुत छुस करतम खर.। शंकर०
५. क्या करे सारे वांसि कोर म्य गर. गर.
कस अकिस वोत उपकार म्योनुय
नशनिक वेल. पशनुय ब्ययि अरसर.। शंकर०
६. वासनायि अरखोरस करनाव अर.
चन्दुन कर दिवदार म्योनुय
यारि ह्यु सब्ज कर अद वन्दस दर.। शंकर०
७. अन्न दात जानि मंज ख्यन चन उदर
सु आहार पूर्ण बेचा़र म्योनुय
असत्वुथ च्य कुन कर शांती श्रोक पर.। शंकर
८. सास ब-ज़ उलट रायि कोह जन गयि ख़र.
घास कचि ह्यु विस्तार म्योनुय
दय छुक त लय कर निर्णय-नय स्वर.। शंकर०
६. प्राख जन्मचि खंडिथय आधि गयि खर.
अति क्या पकि घाटजार म्योनुय
थोद तुल त. पथर प्योमतुत प्यठ थर.। शंकर०
१०.प्रारब्ध फल बूगनुय छुम त. क्या कर.
पोत फेरनस छुन वार ब्योनुय
प्रानि वैर मंज़ कड नवि धैर्य सू.ति दर.। शंकर०
११.दोह आयि छोय दित अन्दर त न्यबर.
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय
परद थव कोंग पोश हरद क्यथ गछ़ भर.। शंकर०

१२.छयोट त. श्रूच़ मत. वुछत. अछत. म्योनुय घर.
शिव लूम ह्यु बनि द्वार म्योनुय
यमदूत खोच़न सू.ति अभय बर.। शंकर०
१३.छ़िट वासना म्यानि छल निर्मल सर.
काम क्रोध चमार मार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति वातिज जन वर हर.। शंकर०
१४.विचित्र पूज़ च्यत नेत्र कमल कर.
इन्द्रिय शुत्र रुग हार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति प्रेधान करनेश्वर.। शंकर०
१५.पाद थकि पकि. पकि. नाद करत. अंदर.
खलवत बनि दरबार म्योनुय
ज़गतचि रक्षायि हेंज़ विन्था कर। शंकर०
१६.उपकार सू.ति पननुय छुक च़ वुपर
रचि वति लगि रोज़गार म्योनुय
दात नाव कडनावतम ज़गत ईश्वर.। शंकर०
१७.कम कार करनि आस गम कास दम भर.
यार छा यि भ्रम संसार म्योनुय
ही अगम अपार ही दिगम्बर हर.। शंकर०
१८.लूक हंज़ि ज्यवि परनाव परात परात
परनय महिमना-पार म्योनुय
पुष्प दन्त आच़ारि बन नन्दकीश्वर। शंकर०
१९.सत संग रंग दिम राय मुख भंग पर.
ध्यान सू.ति प्राण सन्दार म्योनुय
यति तति शुभ अन युथ न. वति प्यठ मर.। शंकर०

२०.अज्ञान काठ ज़ालि भस्माधर
तीज़ रूप थव आकार म्योनुय
देह कतिरिस दुह कास मारस भास्कर.। शंकर०
२१.चित. पीड़ा कास नत. यति क्या कर.
मृत विज़ि छांड हितकार म्योनुय
ही इष्टदीव भ्रष्ट प्रकृत थव म.ज़र.। शंकर०
२२.पाप ज़ाल अग्नि नेत्र सू.ति जटादर.
चय छुक व्यग्न. हरतार म्योनुय
न्यवरथ दिम अछि क्याज़ि लगनम धर.। शकर०
२३.शुरि त. बा'च बुछ वुछ ओश त्रावान जर.
कुस वदुन स्यद करि कार म्योनुय
यिन त्युथ मर. ध्यान. निश गछ़ व्यसमरः। शंकर०
२४.वांसि हन्दि करतूत ब्रोंठकनि गयि खर.
मृत विज़ि ती निवार म्योनुय
मन निम परम सुख दिम परमेश्वर। शंकर०
२५.हे महेश ज़गत ईश हे विशेष ईश्वर.
छति कीश बोज़ ज़ार पार म्योनुय
दीश. दीश. फिर म वातनाव पननुय घर.। शंकर०
२६.मोह मस चथ छुस दूश लद फिर म्य सुर.
आशतोष केंल्ला यार म्योनुय
कृष्णस मोक्ष प्राव नाव अमरीश्वर.। शंकर०

❖❖❖

फुल. वनि सोन्त. छुय म्योन सालो।
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन।।

१. आरवल आर क'च गयि. कमि हालो
चालि चालि ओश दारि हारान छस
वच़ काल गव वुन्य प्रार कूत कालो। लालो०

२. यमबरज़ल लज्मच़ भुमबरनि जालो
प्याल ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुयमु लालो। लालो०

३. माय चानि सुलि विलि फोज़ि ही मालो
ल'यि लोस इ.य कर दिय दर्शुन
व्रिय चानि छम वुन्य यूत नो व. चालो। लालो०

४. रोश रोश करहै पोषन मालो
रोशि मति गमोय ना गोशन म्योन
रोशि मा पोष.नूल दोह गछि वोबालो। लालो०

५. आदनुक याद पाव बाद. मो डालो।
नाद लोय कुकिलव गीविन्द गू.
आदन बाजि म्यानि त्राव शुरि खयालो। लालो०

६. वा'लि वन्त. इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनन्य ग्राय मारान
का'लि मा रा.वव कस क्या मलालो। लालो०

७. साकया प्याल चाव माला मालो
युथ न. स. वाकी रोज़ी ग्राव
मस चथ रस. रस. बन. मुतवालो। लालो०

८. सास मज खास सुय रटहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपालो
भासकर सास छुय ना'ली नालो। लालो०

❖❖❖

१.म्य सोंगो पान. दर्शुन चोन बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज राग चोनुय वनि सन्यमना शारिका दीवी।

२.म्य पियिना माज्य पायस मन, ब. करहय चाञ आराधन
म्य अन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यमना शारिका दीवी।

३.यि दिल म्येन ज़न छु क्रेन्खा अख,
लगित क्रेहञर छु अथ प्यठ सख
अक्षर अथ पन.नि भक्ति हुन्द ख.नखना शारिका दीवी।

४.ब. छुसना क्रुर अज्ञानी, स्यठा मुरखा त. अभिमानी
म्य माता गाश ज्ञानुक सुय अन्यमना शारिका दीवी।

५.लागन कोताह मधुर दुनिया, यि खाली आसवुल स्वप्ना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक न. न्यमना शारिका दीवी।

६.कदवान भ्रम आय मोह माया, दया कीरना महा माया
म्य संसारच यि मोह माया छन्यमना शारिका दीवी।

७.ब. प्रेमी छुस तसुन्द अभिलाश, करिम ना माज्य पूरण आश
उपाया भव.सरस तरनुक करिमना शारिका दीवी।

❖ ❖ ❖

होश, पोश, नूल थव कन
वाणी वन हारि लोलो।।

१. राधा कृष्ण कृष्ण वन लोलनि अशि दारि लोलो
रंग किञ तस ह्य बन वाणी०

२.गु'ड कर मन बिंदराबन अद. नेर ब'रि त. दारि लोलो
श्याम रूप वुछ हन हन वाणी०

३.चाव वीद कामदीनन थन भखचि हंज़ि चड़वारि लोलो
चथ बनि आनन्द गण वाणी०

४.तती व्रच़ गूपियन कुरमुत छु मन तारि लोलो
व्यापक वासुदीवन वाणी०

५.प्रेम. सू.त्य कर मन बिन्द्र बन नाद लायस प्यार लोलो
भक्ति भाव. अख बनि दु'नवाणी०

६.बुज जसुदा छ.स ललवन मूह पूतनायि मारि लोलो
यछ वबि द्रु'ध चन सतज़न वाणी०

७.भक्ति मंज बन अरज़न रथ.बान सुय लारि लोलो
किंसि प्यठ छुस गोवर्धन वाणी०

८.मन. वाजे कृष्ण नाव खन धीर. अल्मास तारि लोलो
गलि पानय क्रूध. दर्योधन वाणी०

९.हिमसाये कंसस मारन सूक्ष्मदारे तलवारि लोलो
माझि यइम राज तस ह्यू ज़न वाणी०

१०.खटय् खटय् छु नोन बासन अंदरिमि छपि छ़ारि लोलो
चि़त् वुज़मल. घट कासन वाणी०

११.वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो
सब्ज ज़न लगि च़रणन वाणी०

१२.दास यति राम खेलन व्यास नारुद त. लारि लोलो
वोलनावुन शुकदीव ज़न वाणी०

१३.यूगीयव भूगिथ भूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो
निर्मल निष्कल निरगुण वाणी०

१४.कृष्णस टोठ विष्णारपन नत. यति क्या लारि लोलो
जान्य मंज तस ति सोहम अन वाणी०

उों महाराज्ञायै नमः

व्यज्ञान मूर्ति राज्ञा ज्योति सुज्ञान आश्राण च्य प्रज्ञावान
सत् चित् आनन्द गण उदैती कोटि सूर्यन हुंद च्य प्रकाश
सुराट भाव. किञ् फैले मची विराट रूपस बाह्य अंतर
सम्राट शक्ति सम्वित ज्योति तत् त्वमसि पद चोन विकास
पूर्णा पूर्ण. तीत सम्वित ज्योति भेदा भेद पर शिवाक्षर

खन्डाखंड अवतरणन भगवती, सत् सौ प्रकाश

❖❖❖

अन अपीक्षत प्रावनावतम पूर्णानन्द म्य मनस
टोठि तस विन केंह न ज़ानुन गव ज़ि टोठ्योम दय मनस।

१. पा'न्य पानय ज़ान ज़ानिहे मानि वूज़ वुज़मानि हे
क्युथ त. क्या, कति तति व्यपान कव. नवि हे त. प्राणि हे
बोज़िनय बूज़िथ त. रोज़ि नय कच़ वाय़ वन्य नय मनस
टोट तस विन्य केंह न. ज़ानुन, गव ज़ि टोठयोम दय मनस

२. भोग भुक्ता क्षेत्र क्षेत्रज्ञ शिव शख्त. ई वुनुय
शम त. दम तय भाव भावना भक्त मुक्त ई वुनुय
चक्रवरतस त. कंगालस वयि वु'न ई वय मनस टोठ०

३. ब्रह्म निर्वाण शब्द प्रकाश अन्दर. न्यवर. अछरी
हु'ल त. स्युद शुज़रिथ श्रोच़व सृ.त्य वार पाटयून वाश रुस्त
दगि. खोलच लगि हे क्या रगि रंगि ई पै मनस टोठ०

४. जग छु संग्रामा त. मन छुय राज. अमिकुय ज़ेन वन्य
वासना न्यरवासना ह्यत अप्रमानस मेनवुन
छुन. पुं त फेरवुन वन. हा कोताह ज़ि लय मनस टोठ०

५. आईनस मंज वुछत केंह मा वुछ वुनिसीय रुस्तुय
आन. मंज मा मु'ख छु खटान, कांह ति अनिसुय रुस्तुय
आस मो उ'न कासती, गव खास कासिंन खै मनस टोठ०

६. मन व्यचारव तय मदारव सू.त्य अनुन होश. सय
मु'त लु'त लु'त होश अनुन पज़ि तिय मनोशसी
नत. क्या सुय पलज वुनुय, आसि ख्यन. ख्यन प्रिय मनस टोठ०

७. शल्प शुल्पत सोर कलपित कलप. कल्पांतन लगुन
पजि दु'य त्रावनि छु प्रावुण युस इ रावन अथि युन
व्यापि कुस तस व्यापकस पुरुपार्थ पोश हा बुय मनस टोठ०

८. ब्रांत तै भ्रम ज़ोनमुत संसार प्रान्यव ई वुनुख
सोंथ हरुद पनुन त. परुद दफत. तिम इम मा च़ छुख
वोन्त छा यथ भवसरस रंग रंग छिर चोय.ई मनस टोठ०

९. साध सन्त छिन. अंत ज़ानान आदि यस छुन. आसवुन
श्रच़ हन्दे आगन्यायि सू.त्यन एक छु अनेक भासवन
सरिनुय सुय जाननुय छुय करतत्र ई. निरनय मनस टोठ०

१०. पान. छन. करता अकरता भाव अभावे बुरमुतुय
राव. राविथ पान पन.नुय होश. बुरमुत परमुतुय
त्यलि पप्यस करमच यि क्रय, ख्यति यलि चलि रै मनस टोठ०

११. आस परमानन्द प्रावित, परमानन्द ब्युन म. रोज़
स'रिसुय मंज सारिसुय ह्यु पार सुय वात नुन म. रोज़
ईय चेतन रूफ प्रोविथ. कति विखेफ ओर लै मनस टोठ०

❖❖❖

१.भूल बाल. बालकन सू.ति खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावनावतम
ज़ान करनाव तम पान परज़ नाव तस
सुधि वान्यन पाठ्य हाव तम रूप।।

२.कठिने भवसर छांठ वायनावतम
मुह पोज वोतुम हटिस.य ताज
लटिस.य वृषभस थप करनाव तम सुधि०

३.थज़रै प्यठ-अख नजरा त्रावतम्
शेशरम नाग म्य थावतम नेव
वनि इत. अनिरकि सनिरै म. रावतम सुधि०

४.ब्रह्मण जन्म दिथ मत. मन्दछावतम
नभ प्यठ बुन मत. दावतम दभ
अमर नाथ अमर बनाव तम सुधि०

५.दासन हुन्द दासा गंज़राव तम
मत मशि रावतम पननी ज़ान
यति छख पाने तोत वात नावतम सुधि०

६.अज़पा जप यज्ञ ज्योति प्रजऋलावतम
होद शीश ज़न मुच़रावतम म्य
ही महेश छति केश मत दिशरावतम सुधि०

७.सत चित् आनन्द अमृत चावतम
नित्य बास नावतम सोहम सू
ॐ शेव शम्भू शब्द शुभरवतम सुधि०

८.मुह मायायि सू.ति मत तंवलाव तम
सत्‌ची कथ पावनाव तम याद
चित्‌ कुयि चेनुन निथ चेन. नावतम सुधि०

६.सत्‌ के निर्नय पयि पक. नावतम
दय पनने नय हावतम वथ
नाव छुम कृष्ण शिव भाव बढरावतम सुधि०

❖ ❖ ❖

आशि चानि बरतल आस अनाथ।
दास कव. छुस उदास अनाथ।।

१.त्रय. ताप. हु'खमुत प्रेमुक स्नेह.
नेह छम न. च्यय व्यन ख्यम ना वेह
वेश. त्रेश. जन्म. जन्म. पिपास अनाथ दास०

२.इन्द्रय हन्दरा'विथ छुम मन
सन्दरिथ लोल रेह छुम न. हिवान
ढुदमुत कमि. क.इ कास. अनाथ दास०

३.होन्यन अथि प्येमुत शाल जन
हाचि सू.त्य रूदुम न. नम न्याल नु'न
काल गु'फि सह सनदि त्रास अनाथ दास०

४.सास क्रूह छंडिथ आशावान
अथ छुन फीर्य फीर्य यूर्य. इवान
लब. तव. देव. बरन्यास अनाथ . दास०

५.होशव बो वूनच़मुत रोशन छुद

वन. क्या हाल म्योन. रोशन छुइ
प्योमुत च्यानि आम. खास अनाथ दास०

६.पजि यी ती करनावत. म्य
ज्यथ ज्यथ मत. मरनावत. म्य
परमानन्द यूग अभ्यास अनाथ दास०

❖❖❖

परम. धामुक म्य चावतम दामो
हत्गुर. मोक्षदायक रामो।।

१.त्र्य. ताप कामनायि आमतावै
व्यसरावान छुम भक्ति भावै
फिरवान त्रशना गाम. गामो सत्गुर०

२.गा'लिथ काम क्रोध ज़ा'लिथ तम
सार द्राव पथकुन कुनुय सोहम
अनुग्रहः चाऩि सू.त्य गाश आमो सत्गुर०

३.जिंद युस मरि तस क्याह् करि काल
रोज़्यस न. गरि गरि मरनच ज़ाल
प्रेम अमृत चावतम दामो सत्गुर०

४.मन तय प्राण युस करि अरपण
रोज़यस न. गरि गरि मरनच ज़ाल
प्रेम अमृत चावतम दामो सत्गुर०

५.तारि भवसागरस चोनुय नाव

नाव तरि त्यलि यलि गलि वरज वाव
फटि न. जि रोज़्यस न. पत. पामो सत्गुर०

६.सूरुम श्रम च्य पुशरोवुम पान
निर्वाणकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मल निष्कल निष्कामो सत्गुर०

७.मूह त.रि सू.त्य छस बर. गोमुत
संताप ताप ज़र ज़र. प्योमुत
होल च़लि चाञि इन लोल आमो सत्गुर०

८.राम लक्ष्मण च्य वन्द वञ पान
परम आनन्द आनन्द प्रावाण
दाम. चावतम योग. बल. रामो सत्गुर०

❖❖❖

च्यथ आकाशस भास्कर म्य बासतम
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भो।।

१.लम्बोदर. सुर. गुरू. हर शंकर गंगाधर सोहम सो
ज़ान गाश सो-प्रकाश आस्तम त. कास्तम हच़र०

२.तन. मन. सुउन वगुन हनि हनि ननि
फना फिला बजान शिव शम्भो
सनिधान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम हच़र०

३.राम. श्याम. कृष्ण विशन शेव भव. भय. हर
सर. कुरजि वुजि ओम हमसू

निष्क्रयमय न्यरणय पयि भारत्तम हच़र०

४.जल. थल. निर्मल. निष्कल. ओजल.
सम. वल स्मरणायि दिम शम्भो
कल. माल दारवञि हनि हनि भारत्तम हच़र०

५.सोवुन्द परमानन्द. आनन्द. कन्द.
नाद. ब्यन्द कृष्ण चन्द शेव शम्भो
ध्यान धारणायि ज्ञान मुख. सुख आरत्तम हच़र०

❖❖❖

कष्ट कास्तम भगवान हरे
सतुष्ट रोजतम गरि गरे।

१.भ्रमचे वुनरे वुन. रोवुस
मूह छटि अञि घटि वति रोवुस
च्यय रुत्स कुस मे अथ. रुट करे संतुष्ट०

२.भव. सर. कूर्म.नय रटिनम खोर
इमज़ोर ला'गिथ गोस कमजोर
छांवरि लुगमुत छस बांवरे संतुष्ट०

३.वीर. ब. लागय शेरि पम्पोश
गद गद वानियन थावतम गोश
वद. वद. यच़ छम मिज मा हरे संतुष्ट०

४.वैकुण्ठ प्यठ इत नन. वोरुय
गरुडस खसिथ त्रा'विथ सवा'री
मुकलावतम संकटच थरि संतुष्ट०

५.संकट मंज तस प्रह्लादस
कन थोवथस आरचर नादस
हरनाकश्यप. अद. मर. वुतर संतुष्ट०

६.हंग आख द्रौपदी नंग रछिथस
नंग. वुछनस तस सामरथ कस
रंग रंग आभरण ना'ल्य तस हरे संतुष्ट०

७.लक्ष्मण छ़ारुन परमानन्द
चर चराचर युस अंद त वंद
लो लो करान नेरि उन लोलरे संतुष्ट०

❖❖❖

सनियासय हा गोसाञे कुञि कञे इखना वञे।

१. जटि मंज छय गंगा जा'री जन छि वसान अमृत धा'री
सूर. भस्मा मलिथ छु तने कुञि०
२. डयूकस प्यठ छिय इम त्रे नेथर शूमवञ ज़न पम्पोश वत्थर
वासुक नाग छुय योञि कञे कुञि०
३. जाय च्य रटथम शिन्या शियन छायि छयूक ह्यथ रूदहम नयन
सर्व व्यापक छुख हनि हने कुञि०
४. खास वृषभा छुय वाहनय सैर. करान छुख ख्भवनय
छय च्य उमा खोवरि कञि कुञि०
५. पान म्यान्यो मो नाज़ तने काल वरिथ नऽथ सू.र वने
शिव च. गारुन मंजवाग मञे कुञि०
६.आ'रतिस कास्तम आ'रचरय घट. कास्तम अमरीश्वरय
मु'ख ग्य हावतम हरमुख कञे कुञि०
७.चोन भुज़न छिय आयुधा शंख चक्र कपाल गधा
सारिन.य मंज छुख अन्दकञे कुञि०

उों नमो जगदंबिकाय।।
श्री शारिका लीला-लहरी
(प्रथम तरंग)

१. गो.डञ गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
पतह़ रथ रठ राजरेनि हुंद खास. दरबार।।

२. व'नित क्या ह्यक. व. देवी चा'ञ लीला।
करै वो'ञ मूर्खगियि किञ मूर्ख खेला।।

३. च़. माता शारिका संतुष्ट ग्य' प्यठ रोज़।
गदा आमुत ब.दर्गाह छुस सदा बोज़।।

४. वहा'रित ज़ाल संसारन वो.लुम नाल।
करुम वो.ञ चार. नत. क्या म्योन छुय हाल।।

५. मदन लोमन मोहन क़र-म़च़ छनम जाय।
कृपाये किञ करुम मो.कलावनुक पाय।।

६. अहंकारन स्याठाह ह्यो.तमुत छुनस तल।
इमन च़ो.न मुशकिलन माता करुम हल।।

७. व.दर्शन छुस न वातान न्यथ भवानी।
क्षमा पापन म्य' करतम मा'जि भवानी।।

८. को.टयन शक्ती अ'छिन थावतै पनुन गाश।
दरई दुनिया फक़त चा'ञिय म्य' छम आश।।

९. म्य' मूर्खस गछत. बूजित मा'जि भवानी।

सिवाये चानि वन. कुस छुम म्यो'नुय।।

१०.दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल.य आस।।

११.कर्मफल. किञ अगर केंछा म्य छुम पाप।
क्षमा सागर च़. य'मि किञ छक करुम माफ।।

१२.कलम तुल. पान. लेख म्या'ञ कर्म लेखा।
करुम स्य'ज़ कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा।।

१३.कृपा सागर. जगत माता छु चोन नाव।
शरण आसै पद्यन पनन्यन तल.य थाव।।

१४.सिवाये चानि छुम नह कांह रछन वोल।
च़. देवी म्या'ञ छखना मा'जि तय मोल।।

१५.भुजव अष्टादशव सूति कर च़. रक्षपाल।
च़. य'मि किञ आस. वञ छख दीन दयाल।।

१६.च्य रुस्तुय कस वन. कुस बोजि म्योनुय।
ब. छुसना नाबकार सन्तान चोनुय।।

१७.यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज़ानान।
कु पुत्र छय कु माता छय न. आसान।।

१८.मंगुन छम न तगान बोजुन तगान छय।
चव.वुन शुर माजि इथ पा'ठ दो.ध मंगान छुय।।

१९.दिलस य'च कोल अमिकुय छुम म्य हावस।
दितम दर्शुन लगय पा'र्य पार्य ब. नावस।।

२०.व. चान्यन पादि कमलन रथ वन्दय ना।।
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करैय ना।।

२१.पनुन ज़व जान वा'लिजि खोंठ वन्दय ना।
पन.नि इम टा'ठ छिम सा'रिय वन्दय ना।।

२२.लगय ना चाजि मायाये लगय ना।
लगय ना वजि दयाये लगय ना।।

२३.इमन पम्पोश. नेत्रन च्यय लगय ना।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना।।

२४.यि केछा छुम चोनुय च्य वन्दय ना।
क्षमा करतम क्षमा करतम च़. क्षसा।।

२५.च़. छकना राजिस्न राजन दिवान राज्य।
अतीत आमुत छुस व. वख्शुम ज्ञानकुय ताज।।

२६.गछान दिथ छक अमीरन च़.य अमीरी।
दरई दुनिया म्य करतम दस्तगीरी।।

२७.च्य निश शाही गदा प्रथ कांह वरावर।
म्य पादन तल कृपाये पनजि किञ वर।।

२८.व. जा'री छुस करान च्य'य दस्त वस्तै।
करय अर्पन जिगर ज़न पोश. दस्तै।।

२९.दो.युम व्याखा च्य ु छुमन. कांह ति दाता।
वहर क.स्मुक मदद कर म्योन माता।।

३०.गंडित गुलि छुस करान च्यय ज़ार. पारह।

प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह।।

३१.परैशा'नी यि म्या'ञिय करत. वो.ञ दूर।
इच्छ़ाये दिल क'रित गछतम म्य मन्जूर।।

३२.च़. छख म्या'ञ इष्ट देवी कष्ट कास्तम।
सदा सन्तुष्ट रूज़ित मनि भास्तम।।

३३.वनान सा'री छि चाञे जायि सिद्ध पीठ।
सिद्धत करतं म्य हयू मोक.लित गछ़िय कीठ।।

३४.व. कश्मीर का.ति व'थि नेकनाम सतजन।
कृपाये चाञि किञ सरतलि वन्योक सो.न।।

३५.मूर्ख बोज किञ न छम शक्ती न भक्ती।
दयालु छख गछुम बख्शित ग्य मुक्ती।।

३६.वत्र छुस आरुत बन्योमुत आर्वल ज़न।
गछर च़लिहेम वनिहेम आ'न. ह्युव मन।।

३७.अगर रछ़हं पद्यन तन कुस म्य पोर्यम।
तवै किञ चा'ञ भक्ती ज़ाह न. सोर्यम।।

३८.कबूल गछ़तम क'रित वो.ञ म्या'ञ ज़ा'री।
वन्दय रथ पादि कमलन मा'ञि चो.पारी।।

३९यि लीला परि युस सुबहन त. शामन।
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन।।

४०.दपान 'दासस' छय चा'निस टा'ठ भक्ती।
व दुनिया सुख व उकवा दिम म्य मुक्ती।।

❖❖❖

उँ श्री गुरुवे नमः।

संसार. सागरस सुम दिथ तर अपोर।
गछ शरण सतगोर. न अद. घाट वाति बोर।।

१.जीव. आद्यास. जख्मन निज़ानन्द बुलगार
सतगो.र यलि दियि अद. बलि बेमार
निर् रोग वनि योग ज़खमन बेहि कोर गछ०

२.मोह. वां'दिवानस काम क्रोध पहर-दार
वेडि खुल. गछन यलि ज्यवि श्याम. सुन्दर
वसुदेव खो.नि ह्यथ जमुनायि तारि अपोर गछ०

३.दुख. सागरस मंज देह ओीयास करनाव
पो.त नम.त. ब्रृंठि नम. संकल्प. विजि वाव
बठि यलि फटि नाव मटि कस छु म्योन बोर गछ०

४.गुरू. वाक्य. किञ गर भक्तियि हंज नाव
सतगौर हा'न्ज ह्यथ सुख. सागरस त्राव
वाव वछुत त्राव नाव वो.टि मंज गछ़ अपोर गछ०

५.मोह राज. रावुण राग. राक्षतन ह्यथ
शान्ती सीताइ रामस चो.ल ह्यथ
लंकायि मंज ब्यूठ दैतन दितुन जोर गछ०

६.राम बन सागरस सोथ दिथ तारुन
रावुन मारिथ सीता तारुन
शत्रु रुस्त राज्य कर पृथ्वियि चलि बोर गछ०

७.सत्गो.र सागरस स'निस त. वोग.निस
व्यापक छु पा.नय ग'निस त. त.निस
सत. कथ भावनय वो.टि तरख अपोर गछ०

८.ज़ानखय सलाह गोडन्न घ'निराव श्रद्धा
गुरू वाक्यस प्यठ टीकित सदा
अनुभव. अनुग्रह. दारि खुल. गछिय तोर गछ०

९.क'दलुक असबाब कर्मुक विस्तार
वैराग गिलकार शम दम छान खार
मुक्तिता ह्यथ बनाव नित्य अनित्य'च सोर गछ०

१०.सथ डेडि सथ ठ'टि तत् पद विशेषण
ठ'टि दिस तमिकिय तिमय तथ शोभन
निर्वैर. भावुक कानुल तरि अपोर गछ०

११.चिल दिस बन्द मुक्ती हुन्द अध्यास
निष्काम. बल छुय श्वास उश्वास
जीव. ब्रह्म एकतायि हुन्द दिज़्यस ज़ोर गछ०

१२.निर्द्वन्द्व निर्वैर. निरअपेक्ष भावुक
दिस फरश काठकर गंडस शुद्ध. भावुक
सतसंग मारजन साफि फिर चो.ववापोर गछ०

१२.निर्द्वन्द्व. निर्वैर. निरअपेक्ष भावुक
दिस फरश काठकर गुडस शुद्ध. भावुक
सतसंग मारजन साफि फिर चो.वापोर गछ०

१३.तत्व ज्ञा.नचि डेडि डीडि वोत्र प्रवुद्ध
वेदान्त सार तस नित्य. निज आनन्द
मज़वूत टीकित यपारि तर अपोर

१४.आद्य अन्त. मध्य. निश. त्रिशून्य नाद बिंद
निमित्त उपादान कारण छ अविन्द
एक. भाव. यपारि अपोर कुन दोर गछ०

१५.हरद्वार श्राण कर सां'पनिय शुद्ध मन
भिन्न भावस स.ति टीकित छु अभिन्न
निर्द्वन्द्व हर. मोल हरमो.ख. द्राव सोर गछ०

❖❖❖

मनि छुम मेल.हा पननिस यारस,
प्रारस अ.शि मुकाम।

१. व'नि म्य दिचाम यथ भव. सररस,
वन.कस वनि नो आम।
क्षण. क्षण. छयन नो तरस.दिन कारण प्रारस०

२. वुलवुल मुश्ताक छुय गुल ज़ारन,
ज़ाह ति नो तमन्ना द्रास।
का लि मा खज़ान लगि इथ वहारस प्रारस०

३. अंदरि व'नि द्यू वो.न्दि मंज़ यारस,
मंदिरस अन्दर चाम।
सौदा भ्यो.न भ्यो.न छू साहूकारस प्रारस०

४. दु:ख छुम पूशुस न लानिनिस कारस,

नत. क्याह लेखन. आम
तो वो वनहस प्ययि ना पायस प्रारस०

५. युन त. गछुन छुय प्रथ ज़ीव. द्वारस,
इन. इन. मुस हो चाम।
सर. कोरथ.य नो इथ संसारस, प्रारस०

६. सुय नाव स.ति छुम मे नाव तारस,
यमि नाव. सांपनुस राम।
'वासुदेव' लयि रोज त.थि दीदारस प्रारस०

❖❖❖

पाद. कमलन तल ब. आसय, करनि चा'ञिय अस्तुती।
मोक्ष दिम बो.ड वर्ग दिम हे भर्ग. शिखा भगवती।।

१. गोम नेत्रन खून जा'री, छुस च्य कुन जारी करान
भास प्रत्यक्ष कास ख्या'री, असि छि पापव व'लिम.ती पादि०

२. चानि आशायि योत व आसै. ना उमेद नेरै न. जांह
या म्य वर दि मोक्ष. दामुक, नत. छुसै प्रारान य'ती पादि

३. लोल. वागरा पोश फो.लि मे, वेरि चाजे चा'र्य चा'र्य
शेरि लागै भाव कोसम, शोल ब.नि कारे प'ती प०

४. क्या वनय अ'सि मंदछेम.ति, चन्द. छ'नि सोदा करान
कर दया वो.ञ वुछ म.तथकुन, शर्मि स.ति अ'सिग'लिमती प०

५. चा'नि गुण विस्तारनुक ताकत, अनि कुस कस वन्यि
छुय च्य जय जय शाम.गों.दरी जाम.शुभान छी छ'ती पादि०

६. ज्ञान. दाता मोक्ष. दाता छख, जगत माता च छख

हे भवानी कर म्य' वा'णी, स्यख्ख मुखस दिम सरस्वती प०

७. पज़ि मन. युस भक्ति चा'ञी, करि निष्कल राथ. दिन.
क्या छु संशय तसंदि वापत, मोक्ष.दाम.कि बर व'थी पादि

८. चा'नि गुण छुस वो विचारान, पन ओम. कि खरान व.छुस
अवसनिक वर., दो.न कुनुय कर, नत. छु आछुर क'ति क'ति प०

९. सर्व. व्यापक छख चो. पा'री, अ'सि छि शा'री क्या वुछव
वन च्य' रुस्त कुस वोजि ज़ारी हाव मो.ख प्यठ पर'वती पादि०

१०. कर्म. हीनन धर्म हीनन, कर्तव्यन सान्यन म. वुछ
डाल स्यो.ध अथ. कर्म. लानिस प्रकमस चा'निस ख'ती पादि०

११. वील.ज़ा'री बोज़ 'विष्णस' रोज सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्य' रौशन छुस व. तोषण, च्य म्य वख्शक थ'जगति प०

❖ ❖ ❖

हे कृष्ण, दया छय ना गछन, भ्रम दिथ मच़न गोख।
भ्रम दिथ मच़न न्यन्दरि हच़न, भ्रम दिथ मच़न गोख।।

१.क्याह रुत समय ओसुय त्यले, यले च. राधा ह्यथ
प्रेम. स.ति रास. मंडलस मंज़ नच़न। भ्रम०

२.अन्तर वहिर रातस दोहस, असि भाग्य. वुठव स.ति
तोलान प्रेयम वोज़ तारच़न। भ्रम०

३.दर्शन दि करुणाकर. भक्त. वत्सल, उदास क'रित गोख
अथ रो.ट कर व्रच. गोपियि क'च़न। भ्रम०

४.गोपियि शुराह मास ह्यथ, शुराह छु खेलान गाम
आशचर-इ कस ओस वो.ज़ मंज़ अच़न। भ्रम०

५.माया मोहन चा'ञ मन मोहन, मोहन भ्यो.न भ्यो.न ओस
मोहन रंग रूप आमुत मुन्यन। भ्रम०

६.अमृत रूपी दर्शन. मो.खय, व्याकजि गा'मच, छय
शुर्य ज़न वो.छे हचन ब्रछन। भ्रम०
७. छ्यन कमि सो.नि साञि ह्युतुय क'रित, कर क'मि भ'रिय सा'नि
मन सोन इनस छुय ना पच़न। भ्रम०
८.अमृत. वपण. नारायणो, शेहलाव मन.य सोन
सन्ताप भव सागर. दज़. मच़न। भ्रम०
९.असि लोल चोनुय ग्न्योमुतुय, कमि सो.नि ह्युतुय च्य डोल
सुय लोल सन्योमुत असि कच़न। भ्रम०
१०.व.रय च्य कर्यथ विश्वरम्भरय, वरय अच़ख ना
छुय ना सोन ज़र. ज़रै गछ़न। भ्रम०
११.त्या'गित लज़ायि क्रा'निस द्राये, सेवायि आये च्यय
पज्या. अनह्यों.त लागुन ह्यच़न। भ्रम०
१२.आदीन अनाथ भक्त आ'र.ती, पालान छि धर्म त.दान
हितकार अपकार करान गछन। भ्रम०
१३.श्रीधर. करुणाकर. श्याम. सों,दर., ज़ानान च्य छि भास्कर
भ्यो.न छुख न सति सति आ'सित ज़च़.न। भ्रम०
१४.प्रेमन तु वीणायि आनन्द स्वरन, भ्रम दित न्यून मन सोन
व्रजवा'सी दा'सियि म'लि ह्यचन। भ्रम०
१५.प्राणो ! यी च्य क'र.थ वा'णी, फीरित व. इमोव. यूर्य
दुवार. मो.ख होवुत न. मोह. हच़न। भ्रम०
१६.केशन त्रा'विथ भूषण पूरित, डेशन छिन. मो.ख चोन
दर्शन करन वाजे मच़न। भ्रम०
१७.ज़ा'ञी न. असि चा'ञ सेवा क'रित, पूज़ा त. तो.ता केंह.
दया कर असि विच़ार रछ़न। भ्रम०
१८.पज़िहे नतय छा धर्म करुन, फीरित न. नज़.र दिञ

त्या'गित मथुरायि गोख अछ़ रछ़न। भ्रम०

१६.चित बुद्ध मन प्राण अर्पण क'रित, ध'रित छु चोनुय व्यान
सुय ध्यान खेलान असि ज्ञान. वच़न। भ्रम०

२०.रछ असि क्षण. क्षण. सारिय निशे सारिय ज़न राज ह्यथ
'केशव' आव आपदायव त्रचन। भ्रम०

❖❖❖

पो.त जूने मो.त सुल. नोवुम, लल. नोवुम नारायण।

१. प्रयि त'मिसं.ज़ि हियि तन ना'व.म, पोश वथरस प्यठ गोशन
गोश. इयि ना होश राव. गेवुम। लल०

२. वाल. पान तस पत. राव. गेवुम, हाल. कमि सुय नाल रटहन
शिव. शम्भो शून्य वोल. नोवुम। लल०

३. काम. देवस नाम. लेख. नोवुम, पाम थविनम कर डेशन
रुम रुमै. राम रम.नोवुम। लल०

४. द्वार प्यठ द्वार. वार. वुछ. नोवुम, जूनि छोंडुम मंज तारकन
मारकन मंज लाल० उलसोवुम। लल०

५. लो.लि मंज़लि लाल.लल. नोवुम, वोल. नोवुम सुवह शापन
च़ीर्य सोवुम सुलि वुजनोवुम। लल०

६. ज़ीर. वम. कुय सीर वु.जनोवुम, फेर. नोवुम तति हेरि वो.न
वेरि तमिसं.ज़ि शेरि वात. नोवुम। लक०

७. ज्यव नार.स.ति वार.छल.ना'व.म, तव, लोलुन नार शोलन
कनव वूज़ुम अ'छिव वुछ. नोवुम। लल०

८. क'द नावद आरद नोवुम, फंद क'रित यूर्य अनतन
अंद लो.वमस न.वों.द फोल.नोवुम। लल०

९. हंस. द्वारय वार. प्रज.नोवुम, प्रारि प्रारोस राम. रादन
ब्रह्म.सर पान सर. कर. नोवुम। लल०

१०.अथवासय रास खेल नोवुम, श्वास उश्वास नो.न छु भासन
सास 'भास्कर' विकास भासनोवुम। लल०

❖❖❖

प्रातः काल आव म्य'ति अनत. गाश मति.
छम चा'ञ आश म्य,ति पूरण कर।
लटि मुख हाव मोह. गटि करत नाश मति,
छम चा'ञ आश मति पूरण कर।

१. जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान.
छुस ह्मलि ह्मा'रन डेंशत कर
जल हाव मुख पनुन छुम न. बरदाश्त म्य'नि छम०

२. भक्ति भाव. स.तिन वति चाञि नेरय,
कति छख आसान पैगाम सोज।
नत. दिम पन.नुय प्रोन यादाश्त म्य'ति छम०

३. मोह. गटि मंज छुस वथ छमन, ईवान,
सत्गुर. ह्मावतम सत.चिय वथ।
वथ ह्माव नो.न त्राव सूर्य प्रकाश म्य'ति छम०

४. हनि हनि फयूरस ह्मथ मनि कामन,
शहरन त. गामन कति आरि यार।
छुख पाताल किन. छुख आकाश मति छम०

५. निर्वासन. वनत. कति चोन आसन,
अन्धकार कास्तम वन्दयो प्राण।

करतम सो.दि वाञिञ हिश बा'श मति छम०

६. कल्पनायि रुसतूय कल हो वन्द.यो,
कलि चा'ञि रा'व.म न्य'न्दर.र त. नेह
वो.ल. वोञ विष्णस' चलि अभिलाप मति छम०

❖ ❖ ❖

हरे राम, टाठि मित्रय म्यानि।
लागय दान. दान. तुलसी।।

१. कौशल्या हृदय. आनन्द घन. पादि कमलन पान वन्दयो
निर्वन्धन. रघु नन्दन. दासस कास भव. वन्धनय
महा प्रभो शुभ. दर्शन दि लागय०

२. हा राम. श्याम. सुन्दर देव. हृदयस वेशि सेवै चा'नि पदम् पाद
शरणे आसतै वासु देव. चावतम चरण. चरण अमृत प्रसाद
परन प्योसस सर्व. ईश्वर चे लागय०

३. ज़गतस उत्पत्त स्थित तय नाश तमि नाश. सांपनुस निरआश
आदि देव. त्वं स्वयं प्रकाश केवल छम चरणाविंद. चिय आश
तन. मन. पान पुशुरमय चे लागय०

४. यस चावि ईश्वर प्रेमय रस तस थाविन. भव. नियम च्यतस
त्रावि राज्यस त. अमृतस प्राव. नाव्यस परम. तत्वस
जीवन-मुक्त सांपनान प्रेमी लागय०

५. स्वर्ग सुख. खो.त. रस रागस रस. रस. व्यस, रावा'नी
ज़गत आकार. वृत्ति वानस चित्त, निश. म'श रावा'नी
राग. रस ज़ानि अख वैरा'गी लागय०

६. मूर्ख ज़ीवन काम. रस चाव जन्म. मृत ज्वरा रोग भागी

ज्ञाता ज़ीवन राम. रस चाव स्वतः सांपनान सर्व. त्यागी
शुक देव सु देव दत्त साक्षी लागय०

७.प्रेम. अगनस तेज़ बलवान भव. नियम. क्राष्ट बीज़ गालान
प्रेमी मनस छु संभालान नियमी ज़ीवन बन्धन गालान
सहज़ प्रेमी सदा नियमी लागय०

८.आश्चर्यवत् छु भगवत ध्यान अति वाहक दृष्टि मो. कलान
चित विकास. हृत्कमल फोलान सां'पान शुद्ध संकल्प वान
वनान निर्विकल्प समाधि लागय०

९.गौंतमनि शाप स.ति अहल्या वनेम.च़ आ'स जड शिला
ज़गत मंगल छि राम. लीला उदयस आयस शुंभ. वेला
पादि स्पर्श स.ति वनेयि देवी लागय०

१०.वलन. आस बुद्धिस्थित चिदाभास चित रंजन वाल. वाश्चे
चित्तधन. राम. साक्षात भास कास अज्ञान कर्म. ज़ाल. पाश्चे
वंद छुस चिदाकाश पक्षी लागय०

११.मोक्ष दायक. मुकुन्द. राम. भाग्यइवान अजोध्या वा'सी
प्राव.ना'विथक विष्ण. स्वधाम. युस यछान योग. अभ्या'सी
भक्त. प्रिय मोक्ष क'रित सा'रिय लागय०

१२.ज़गत गुरु त्वं पुरुषोत्तम सर्वेश्वर. सर्व व्यापक सम
भगवान् सुख. मुख. इतम श्रीमान शुभ. दर्शन दितम
करतम निर्वाण. उयदेशय लागय०

१३.जनार्दन गोपालं गोविंदय नारायण. विष्ण. वासुदेवय
हृषीकेश. माधव मुकुन्दय हरे राम. कृष्ण आद्यदेवय
आशा छम नाम निदान दानचिय लागय०

१४.प्रिय. वोध शुद्ध चित्त क्षेत्रस वीज़वत व'विज़ि भगवत नाम

नावस स्वरूप वनि मित्रस चतुर्भुज श्याम सुन्दर राम
फल. दायक छि प्रेम. खेती लागय०

१५.देव. वुल्द्र देव. दृष्टि छि साधन निष्काम सेवान तिम विष्णु पादन
परम. पावन छि राम. आराधन क्षय सांपनान अपराधन
उपासना विना छय न. गती लागय०

१६.दास छुन. स्वर्ग. सुख. पुछि राम वरतल चानि त्रा'वित लर
कास मनस नरक, दुख भय श्याम. दो. नवय अन्तवन्त अस्थिर
दासय छय' प्रय शुभ. दर्शन चिय लागय०

१७.इछ गत छ्य राम. नाव. प्रेयमस तिछ गत छन. तपस त. व्रतस
प्राणायामस यमस त. नियमस राज्यस स्वर्गस त. अमृतस
राम. महिमा क्या वनि वा'णी लागय०

१८.ज़ीवनमुक्त हनुमान देवन सेवुन राम. नाव जा'नित सार
सीता-पति राम. जीवन कृपा को. रनस सारगी मुक्त.हार
हलमतस छय राम नाम. प्रीती लागय०

१९.च्वान राम. नाम. रस गलि गले राम. सेवक महा निष्क्रम
मुक्त हारस फलि फले वुछनस न. कुनि श्रीराम. नाम
चून करि'त त्रोव हल म'ती लागय०

२०.महा महिमा राम. नावस दैव. विभूत दर्शन नित
भान सांपनान निंष्कामस चिदाकाशस अन्तर्गत
महा पुरुषण छु सुय हर्ष.य लागय०

२१.राम. नाम. रस महा देवस तवै सेवान सर्व लोक तस
गिरिजा राम. नाम भूषणस तोषान तोषान लागान मनस
क्षण. क्षण. नित साधान तो लागय०

२२.युस वो.र भक्ति योग. अभ्यासन सुय फेरान नित पंचन कोशन

राम. नाम. स्मरणा भूषण निवारान रोजतम दोषन
सां'पनान ज्ञान. गण सातकी लागय०

२३.आदन वाजि म्यानि म्योनुय स्नेह क्व. क्रारण. कैंहति छुयन चे
छाल. मार को.त गछ्क लालो वे अकि लटि रटत नाल. पायस पे
म्योन संयोग च्य स.ति वेदान्ती लागय०

२४.नर्क. वा'सी साधु निन्दक दुर्जनन क्रय सो.य निशदिन
स्वग. वा'सी छि सन्त. सेवक सन्तन पालान मधुसूदन
साधु वल्लभी लगय पा'री लागय०

२५.यस अनाथस वरि रघानाथ तस क्या करि अस्तुत त. निद
साध सन्त राम. रूप साक्षात रघुवरि प्रेम पुरुप सदा
राम. नाम. रस च्यथ छिवेम.ती लागय०

२६.चंदन वृक्ष संत दुर्जन मख मख चंदनस दिवास टख
मखस प्रत शायि अग्न दाहक च'दनस वरान हरि मस्तक
ज़ीव कृत कर्म फल भोगी लागय०

२७.प्रेयमस छय सारिचिय सिद्धता महा दुर्लभ वनान सुलभ
यस वरि हरि हर विधाता दास. भाव. किञ सां'पनान प्रूभ
भ्रमर. कीटवत् छय प्रेम. खेती लागय०

२८.यस मनस आसि न. प्रेयमच लेश तस क्या करि गुरू उपदेश
तस कदाचित गलि न. राग द्वेष चलि न. तस माया मोह आवेश
सग. खो.त. संस्कार वली लागय०

२९.यत शायि आसन संस्का'री नागवत् वुज़ान तति प्रेम जल
स्वतः सांपनान अधिका'री प्रेम. जल. छलान चित वृत्ति मल
सुख. सान वनान निवृत्ती लागय०

३०.इथ. पा'टि मेघ वालि वर्षण जल. वेग छुन वुछान दारि त वर
तिथै पा'टि स्वतः सिद्ध पुरुषण प्रवेश करान ब्राह्म अन्तर

सप्त. सिंधि खोत छय प्रेम. नदी लागय०

३१.तीर्थ. ज़ल करसान वाह्य मल अंतःकरण. वृत्त रोज़ान चंचल

राम. राग. यात्रा सफल चित्त. वृत्त वनान शांत शीतल

प्रेमी वो.र राम भगवा'नी राम महिमा क्या वन.वानी ला०

❖❖❖

सखिमय रूठुम हा'य रूठुम हा'य ग'छित ब्यूठुम हा'य गामन.य।
तति विगिञ्य्व डयूठुम हा'य व. चाक दिमना जामन य।।

१. सिंध जल. तन नावसा'य व. सीर पनुनय भावसा'य
क्याज़ि ला'जिथस पाम.नय व. चोक०

२. वाल.प्यठ. नादा लायस व. साज. सेतार वायसा'य
छो.ञ छो.ञ करस रुञ. दामन.य ब. चोक.

३. तारा मंडला द्रामतुय जूनि नादस आमतुय
रो.वहा'य करव. सुबह शामन.य व. चाक०

४. वन ना'गिञि द्रामचा'य डल सा'लस आमचा'य
जूला ज़ालव रंग. नावन.य व. चाक०

५. स'खियव मनवित अ'नितोन आदन बोज म्योन नुंद.वोन
वोञ नय कां'सि वो हावन.य ब. चाक०

❖❖❖

पानै बिहित पननिस वानस आनस आनस वुछहन यार।
तसुँदुय सौदा हर दूकानस आनस आनस वुछहन यार।।

१. मस्त गय मस च्यत वा'ति लामकानस,
अयान सपदुक पननुय पान।

शाबाश ब्र'विनै अथ खुमखानस आनस०
२. कना फिला निश. छुय पानस,
बका बिला तहकीक कर।
ब्रह्मण ला'गित अछ बुत खानस आनस०
३. सा'लिकव मा'लिकी क'र यत जानस,
तिम छिय वा'तिथ पय दर हय।
आशक छु मुश्ताक पननिस पानस आनस०
४. आश्कव पान खोर अ'श्क. पेचानस,
हा'सिल सपदुक वा'सिल कार।
दम दम. ग्युंदहै पननिस जानस आनस०
५. पानै पानस ध्यान करु पानस,
आनस निश. तस लगिय न. छयन।
मीलित सु डयूटुम दानस दानस आनस०
६. दस. स.ति पम्पोश फो.लियो जानस
गमगीन मो गछ रोज़ बेदार।
खय कास दिल किस आ'ईन खानस आनस०
७. हस्ती मो कर पननिस पानस,
मर्स्ती पननिय रावान छय।
'लस शाहो' लय कर प्राणस अपानस आनस०

❖❖❖

सुख शब्द दर्शन. चाने, आनन्द घन टाठि म्याने

१. रात दिन करान छुस चिन्तन
क्षण. क्षण. छुम चंचल मन
ईश्वर. दूर्यर. चाने आनन्द०

२. राग चोन युस छुम मनस.य
सात. सात. रातस दिन.सय
म्योन दुख च्य रुस्त कुस ज़ाने आनन्द०

३. राज़न ह.दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्या ओस लाने आनन्द०

४. यो.दवै च. म्या'ञ कथ बोज़क
दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़क
रोज़ चूरि हत गुह्ययि म्याञे आनन्द०

५. य'च कोल च्य त. म्य दूर्यर
क्यथ जोरुत यूत कोरुत न. पूर्यर
अद. कर यि ज़'ट यलि प्राने आनन्द०

६. ओमुस ज़ल बो.य निर्मल
मोह. कठक'शि कोरनम छल
वचनम कच. शीन. माञे आनन्द०

७. अश. ह'तिस.य मनरु अेशा
अमृत वर्षण बु डेंशा
गलि शीन अकि कटाक्ष. चाने आनन्द०

८. कर्म किनि वेष कम धा'रिन
गर्दभ पृथि बा'र्य सा'रिम
वृषभ. वेष. तल अलवो आनन्द०

९. कमनायि आतुर कोर.नस
अमृत भास्योम वेह. रस
श्री.परोवुम दाजि दाजि आनन्द०

१०. कन थोवुम न. सत्गुरु शब्दन
जर छुनुम खोटि प्रारब्धन
कर्मव को.डुस पयैनि छाने आनन्द०

११. आनन्दस चाव अमृत. रस
संसार. निश. बनि बेहारस
वनि नो.न अनुग्रह चाने आनन्द०

❖ ❖ ❖

श्री शारिका लीला-लहरी
(द्वितीय तरंग)

चराचर छुख परमेश्वरी रछतम पनन्यन पादन तल
१.गज. मुख. बाल. चन्द्र लम्बोदरो विनायको भ'विनय जय
हरमुख. दर्शन दितम ईश्वरो रछतम०
२.निष्कल नाव चोन निरंजनो सो.य कल धा'रित त्रिकारण
स्मरणि चानि स.ति जन्म मृत हरो रछतम०
३.देविय त देवता सारिय स'मित न'मित करान चा'न स्मुरण
स्मुरणि चानि स.ति सा'र्य पाप हरो रछतम०

❖ ❖ ❖

श्री राज-राजेश्वरी आम.ति शरण छिय।
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादल त. हिय।।
गौरी अम्बा अम्बुराक्षीम अहं ईडे

१. ज़गत अम्बा च.य छख मंज़ वदनस असनाव
निष्कुल शुर्यन दयायि हुंद दामान प्रा. नाव
कल्याण. सोरुत थाव स.ति अश. फयरन भरन छिय पू०
२. बाहन सिर्यन ज़चन चान्यन हुन्द प्रकाश
चरण चा'नी करान संकट. गटे छि नाश
निह.न्जे गर.दि स.ति देव मुकट. जरन छिय पू०
३. लोका लोकन ह.न्दि सत.जन कारण देव.गण
सिंहासनस चा'निस दिवान छिय प्रदिक्षण
परम दान.कि पुरुष प्यवान परन छिय पू०

४. षट्चक्र. रूपी चक्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चो.पा'र्य त्रिकोणस फेरन
योगी ज्ञा'नी प्राणी सुय ध्यान धरन छिय पू०
५. बुद्ध छन.. वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च्यय मन. कामनायन मंगन छिय
यछि चानि श्रद्धायि स'स्ति आयि स्तुतायि परन छिय
६. पनन्य भक्तियन दासन हुंदुय प्ययनय पास
तिहन्दे पासै कुकर्मन ह.न्ज गटय म्य कास
ज्योति-स्वरूप हाव छय च्य भूतेश्वर.ञ द्र.य पू०
७. भगवत् मायायि ह.दि रंग चा'नी छि रंगा रंग
चाने स.ती छुय योग छिय भोग छुय संतसंग
तप ज़प समाध क्रिया कर्म करन छिय पू०
८० महा माया च.य छख चट अरि माया जाल
असि वो.लमुत छुय गृहस्थ. कि काल. सर्पन नाल
ल'गिम.ति सा'रिय पनन्यन पनन्यन घरन छिय पू०
६. कम भक्तिमयि किञ भक्तावारन खरन छिय
कथ कामि लगव क्या तगि जिन्दै मरन छिय
च.इ टेठ स'च़ चाञि स.ति अ'सि दिन दिन मरन छिय पू०
१०. प्रसाद कर गाल ज़न्मा जन्मन ह.न्दि अपराध
सव्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश. पाद
इ.. तिम स्वरण यथ भस.सरस तरन छिय पू०
११. चाने सूती सृष्टि गयि न'ञी जय म'विनय
मंज़ शून्य. उत्पत्त स्थित सां'प.नी जय म'विनय
कलर जुक्रगच महाराज. रा'नी शरण छिय पू०

१२. कुनुय यलि ओरस वुछन वोला तरस कुस ओरस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तरस कुस ओरस
चित शक्ती चाने एक अनेक स्वरण छिय पू०
१३. च्यय अज़पा गायत्री पांछ कारण ग्यवन छि गीत
निरित्रगुण छख गुणन चान्यन स.ति परतीत
चाने स.ति कार अन्तःकरण करन छिय पू०
१४. अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेष. नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'नि मह्य पुरुषय वरन छिय पू०
१५. च्यय कीति नाना रंगै भोजन रनन छिय
न्यय निंश सुवर्ण बानन ल'दित अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल मरन छिय पू०
१६. चाने दयायि स.ति क'डि वडयूव बडि ब'डि नाव
निष्वुल्द 'कृष्णरस' निश वा'णी हुंद अमृत द्राव
परण वालयन ज़न्मस ह.न्दि दुख हरण छिय पू०

❖ ❖ ❖

हे दयालु छुस ब. चञ्चल. लोलो।
अनुग्रह. चानि बेमार बल. लोलो।।

१. कर्म.हीन छुस आमुत संसारस
चन्द. छोन छुस लु.गमुत व्यवहारस
अविद्यायि ह'न्ज़ छम गांगल. लोलो अनु०
२. लय विक्षेप भय. स.ति छुम आवरण
मल खो.तमुत छुम अन्तः करणान
विवेक. पात्रि पान वो छल लोलो अनु०

३. जान ज़ा'नो जांह तिनो ज़ोनमख चय
ज़ान दिम तिछ जा'नित तव गलि दुय
दिम निश्चय युथन. ज़ांह डल. लोलो अनु०

४. छुस व. लो.गमुत संसार. सर.सय मंज़
गोवनुत छुस पननिस घर.सय मंज़
ध्यान स.ति ज़ाल ज्ञान. मश.अल. लोलो अनु०

५. प्योमुत छुस गटि मंज अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो.न छुसियि प्रकाश
का'र्फी छम चा'ञ अख वुज़मल. लोलो अनु०

६. वान. हीन वो द्रास खान. गदाये
अंग हीन छुस फेर. कोत जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह. खल. लोलो अनु०

७. यम्बर ज़ल वो.म्वरो छस यो प्रारान
वेरि चाञ पान छस पा'रावान
वन वन. छस ब्र'च़ आरवल. लोलो अनु०

८. लोल. बागस फ'लिमो गुल त. गुलज़ार
पोशनलो अज वलो छावु सब्ज़ार
होश दिम युथ पोश. वा'र फो.ल लोलो अनु०

९. हा 'विष्णो' पननुय पान ज़ानतन
यलि जानक त्यलि वनि सरतलि सो'न
चित आ'नस करत. स-कल लोलो अनु०

❖❖❖

विनत बोज़म च. राधा कृष्ण. लागय लोल. नादा बो।
भरय लोला परय लोला करय हो हो कस्य हो हो।।

१.च. छुक योगुक ज्ञानुक गुल ब. छस ना भाव कुय बुलबुल
च. लोब रोजन ज़रय मा बो करय०
२.च्य छय पंपोश पाद.च द्रूय वरुम छस भक्ति बाग.च हिय
च. नय डेंशत हरय मा बो करय०
३.च. छुखना प्राण बो छस तन सत्ता चा'नी छि दो.न मिलवन
च. नय आसक मरय मा बो करय०
४. ज़लस मंज़ गा'ड ज़न छस ब.य ब. छस च्यय स.ति ज़ल छुख च.य
च्य' रुस्तुय वो.ज दरय मा बो करय०
५. च्य सवेस छस ब. कुम.री ज़न करन छस बूलि म'शित हन हन
नच़य लूकन खरय मा बो करय०
६. च्य सर्वस छस ब. कुम.री ज़न करन छस बूलि म'शित हन हन
छ.नय त्रावि'त घरय मा बो करय०
७. च. छुख चन्द्रं ह्यु ज़ोतन कचुव ज़न छस च्य' कुन बोलन
वुछुत नय अ'छि ज़रय मा बो करय०
८. च्य 'श्रीकृष्णस' ब. छस प्रारान दितम दर्शुन इतम लारन
च्य रुस्तुय वोज वरय बो करय०

❖❖❖

लाल. लगयो बाल. मावस राम. नावस पार्य लगय।

१.टंग ओ.ननस विवहारन रंग. बुलबुल गोम को.ल
गंग. वोज चाव मांज़ यत तावस राम०
२.भक्ति भावय नाद लायय अर्द्ध. रातन सुन्दरी
चानि दर्शन कुय छुम म्य हावस राम०

३.हे मुरारि ! वील. ज़ारी म्या'ञ बोज़ख ना कनव
छुक च़. टोठान भक्ति भावस राम०
४.त्रटि ह.न्दे सायबानो गटि ह.न्दे गाशरो
मोह. अत्रिगटि मंज़ लोगुस दावस राम०
५.गो.ब गोमुत बोर पापुन दोह लो.गमुत छुम दरय
नाव ल'जिम च़ मंज़ व्यथ. वावस राम०
६.हे शेव ! छुक सर्व.व्यापक व्यथि छुक विश्वम्बरय
केशव० तार दिम वर्जनिस बावस राम०
७.क्रूठ प्योमुत छुम म्य पानस ससारुक लंगरय
ख्यम. क्या छुम न. केंह ति छावस राम०
८.बाल. भावय व नि म्य दितिमय वनि नो आहम च. ज़ाह
वनि इतमों ती छुम म्य हावस राम०
६.शयि शये शय च.य छुक शय नो ब्यथि रोज़ि कांह
शयि रूद यलि टोठयोक कावस राम०
१०.'आनन्दो' भक्ती त'मिस.ज ज़ान पननुय मोक्ष उपाय
व्रत त'मिस.ज़ धर पुन्यं त मावस राम०

❖❖❖

चानि बरतल राव्यम रा'च़य आवाज़ वा'च़.य नो

१. चों.ज़ शोभहय बो ख'ज़मा'च.य
ग्रंज़ साहिबो ह्य'च़थस न. ज़ांह
तवय नाव प्योम ललह मा'च.य आवाज़०
२. बालि रनिमय सार्यय न्या.मा'च़.य
ख्यनि साहिबो आहम न. ज़ांह
तवय लल छस छिन्दरे मा'च़.य आवाज़०

३. घरि द्रायस बा जमा'च़.य
वनि साहिबो आहम न. जांह
का'लि मेलव कया मा'च़य आवाज़०
४. खा'सि वो.ज.लि बर.ग छ. च.ई
छस व. स्वग. च य'म्बरज़ल
दादि वों.वर.नि वर. गा'मा'च.य आवाज़०
५. वा'लि बा'ली मो पख यच़य
गा'लि का'त्याह संसारन
का'लि सूरच़न गछ़ान म्य'चय आवाज़०

❖ ❖ ❖

राम. लीला चा'ञिय वनय श्याम. सुन्दर नारायणय
तन. मनय अर्पण बनय श्याम. सुन्दर नारायणय
निर्गुणय निरञ्जनय श्याम. सुन्दर नारायणय
१. चानि लोलुक छुम ह्रोल गोमुत
देह. किस जिजिस.य मंज़ ब. प्योमुत
वन. करस दुख म्य छुम क्षण.क्षणय श्याम०
२. यमि योनिये छम ह'जि का'र.य
गोस. त्राव वो.ञ म्य छम को.सता'र.य
मुख ह्राव दुख क्यान आरस ह्यनय श्याम०
३. नट ब'नि ब'नि नाटक ह्रा'विम
ईश.! कम कम वेष बदला'विम
निन. आरस ग'छि ग'छि इन. इनय श्याम०
४. कृतिस कालस वो.ञ वो प्रारय

बोज़तम आ'र्चर ज़ार. पारय
आर इयिनय नघु न दनय श्याम०

५. यथ वेषय मंज़ मो.कलावुम
योगानन्दस मंज़ म्य सावुम
मोच़. आनन्द निर्बन्धनय श्याम०

६. नाश. स'स्तिरा यथ संसारस
कमि वापत पत्त, पत. लारस
अत. गत पट च़टम पन. पनय श्याम०

७. कालस छन. करान क्षणस
ग्रास करान रातस त. दिनस
चानि दर्शन. अमर बनय श्याम०

८. कालस निश उपदान सांसर.य
का'ली तथ बनान आहार.य
मंग. क्या तग. आस मरण.ज़्यनय श्याम०

९. भोगन मंज़ तृप्ती म्य न आये
युथ मृगिञन मृग तृष्णाये
अमृत चन.कुय छुम म्य विनय श्याम०

१०. श्वान नीरस हडन टकान
ट'कि ट'कि पनञे ज़स्म. ब्रकान
रस रतुक तस हे रस गण्य श्याम०

११. कोमल पादि कमल मलय
हे शरणागत वत्सलय
कोत ब. च़लय च्य निशि रोज़ छ़यनय श्याम०

१२. सुख केवल चा'ञिय स्मुरण
सुख केवल चोनुय दर्शन

हे निर्द्वन्द्व. आनन्द गणय श्याम०
१३. 'ठाकुर' च़.य हृषी केशय
बुद्धि पर युस निश.चल राग. द्वेषय
सर्व आत्मा च.व. सनातनय श्याम०

❖❖❖

कृपा करतम हरि हरै ब. क्या करै ज़ोर।

१. लूसित प्योमुत छुस बुजरै खो.तमुत छम बों.ड बोर
यथ पंचालस कथ. पा'टि तरै ब०
२. आर.ह छुवज़ान वो.गनि द़रै बारह छु करान शोर
छो.प छु करान समन्द़रै ब०
३. व'नि व'नि य'च गोस चूखि अंद़रै नऩन ज़न छुस चोर
छ़ोपि हुंद सुख दिम योगेश्वर ब०
४. पख छम जरिमच़ छुम ज़र-ज़रै बन्यो मुत छुस मोर
हीन छुस खोरन हंदि आ'रचरै ब०
५. सन्मुख रोज़तं श्याम. सोंदरै प्रभात ह्युव चो.पोर
युथ न. पंपोषस दोह लगि दरै ब०
६. आभास. चानि स.ति गा'म ति खरै अन्तःकरन च़ोर
म्य भास प्रकाश रूप ईश्वर ब०
७. त्रिगुण उलंघितछुक शंकरै शक्तियि चानि छुस लोर
ओ.गणिस दो. गणाव कुनिय वरै ब०
८. चो.रों.ग ज़न म. फिरनाव घर. ६ रै यि बा'ज़िगर छा सोर

दूबार. म. डाल प्यठखा'र दरै　　　　　ब०

९. अन्दर चा'नित ज्ञान, घरै　　　　　हावुम चूरिम पोर

तथ मंज रूज़ित आनन्द भरै　　　　　ब०

१०. 'कृष्णस' मुचराव बाव,कि बरै　　　　　कुनिय वरै तौर

युथ लरि ह्यथ च्यय बसि अमरै　　　　　ब०

❖❖❖

वो तन. मनै अर्पण बनै नारायण. श्रीमद् नारायणं।

१. भ्रम. किनि संसार सत्रूप ज़ीनुम
दुखस.य प्यठ सुख मन.न.य मोनुम
भास्तम त. कास्तम मोहुन सनै　　　　　नारायण०

२. च्यय रुस्त नाश. सो.स्त ईश्वर. सोरुय
मृग तृष्णा जल. चिय दोर. दोरय
स्मृत पन.ञ दिम च.इ क्षण क्षणै　　　　　नारायण०

३. यथ प्यठ ईश्वर. स्थित थव. व्यन
सोरुय गछथ पोञ सारुन क्रंजल्यन
आसर. चोन थव. सनातनै　　　　　नारायण०

४. संसार. कुलिस शरीर हर्द पन.य
कामना सहित तथ कुलिस मूल मन.य
काल. छटि स.ति नटि मंज दिन. दिनै　　　　　नारायण०

५. मूल संसारुक मन यलि गले
जाम. बदलावन.चि आपदा चले
मन गाल ज्ञान. खड्गस.ति ज्ञान घनै　　　　　नारायण०

६. देह. अभिमानन हनि हनि ज़ोलनस

दम. दम. क्रम. क्रम. शीन ज़न गोलनस
स्मरणि चानि निश को.रनस छ्यनै नारायण॰

७. थज़.रुक ज़ल युथ कल. छावि पलन.य
ती करनोवनस ममता मलन.य
समतायि हंज़ बुद्ध दितम सत् जनै नारायण॰

८. अच्युत सत्.रूप. निरामये
भव. भय. नाशस गछि. चाञि लये
चाञि प्रयि दय ब.ति च्यय ह्य बनै नारायण॰

९. विस्मृत को.रनस अविद्यायि दोषण
भ्रम. किनि वश् सांपनुस पंच कोषण
पंच कोशातीत. निरञ्जनै नारायण॰

१०. दिनम अपि रजनी सांय प्रातः
शिशिर बसंती पुनरायातः
काल.देव करान ग्रास शनै शनैः नारायण॰

११. मन म्योन मोहित को.र मोह. मस. न.य
बेह्यस कोर.नस तृष्णाइ रस.न.य
मोह मद गाल व.ञ हे मधुसूदनय नारायण॰

१२. काम.देव कान.य स्य'ज़रावानय
तस यस मनस आसि न. चोंन ध्यान.य
सर्व आपदा नाश चानि दर्शनै नारायण॰

१३. ज़ीन छुय जीवन चा'नी स्मरण
देव. भाव देवन करुन चोन कीर्तन
उत्पत्त सारिचिय चानि ईक्षणैं नारायण॰

१४. जीवन हंदि जीवन. देव. देव

आनन्द दायक बांधव त्ममेव
सर्व आत्मा रूप. सुदर्शनै नारायण०
१५.हे निराकारै सर्व आधारै
चानि दर्शन मुक्त बन. नरक. नारै
सुख. रूप. पुख हाव हे चिद् घनै नारायण०
१६.सत् रूप. ज़ान सत छम मलिन प्रकृत
संताप अग्नस ग्यव जन ब. आहुवत
कष्ट गाल संतुष्ट बन ज़नादनै नारायण०
१७.खो गया दिन दिन सो गया लड़कपन
आ गया यौवन पीड़ा उत्पन्न
तेरा अनुग्रह मेरा विनय नारायण०
१८.आसुरी प्रकृत निर्मल करतम
शुद्ध प्रकृ'च किञ गोविंद. वरतम
कर अभेद पानस स.ति पूरणै नारायण०
१९.सारिन.य आत्मा पर प्रेमास्पद
सर्व आत्मा चा'ञ भक्ती स्वतः सिद्ध
मूलस थक छ़.न मूल. कराणै नारायण०
२०. सर्वात्मा चा'ञ एकात्म भक्ती
यस आसी तस भव. बंध. निशि मुक्ती
'ठाकुर' बंद. भाव प्ययि अर्चनै नारायण०

❖❖❖

पूर्ण पुरुषस सुरासुर विन्दनस परमानन्दस परमात्मम।
तस रुस्त क्या छुम दप. पान वन्दस परमानन्दस परमात्मम।।

१. कृष्णस जग यस तुँद ब'लि चंदस
चिनमय मंदिर द्वारिका तस

सुदाम सालिग्राम सुय प्रूजि बों.दस परमानन्दस०

२. द्वार. द्वार पूज़ा मुख अरबिन्दस
सर्ग. अर्घ. स.ति जन अमृत रस
पुष्प. कनि आकाश पृथ्वी गंधस परमानन्दस०

३. ध्यन. व्यन. धा'रित मन निस्पंदस
क्षण. क्षण. पनुन आर्चर बनहस
लगहा न. व्ययि व्ययि अज्ञान द्वंद्वस परमानन्दस०

४. वर. य'मि ज़ि निद्रा दिच़ मुचकदस
कालयवनस सुय काल वननस
पीताम्बर. स.ति ला'गित फंदस परमानन्दस०

५. वन.न.चि म्य यछ एकादशस्कंधस
बोजनस तव.किस परमंअर्थस
मन. राज. निशचल बेह्नि मसनंदस परमानन्दस०

६. ज़िन्दगी छ्यूफ दिथ रूज देह. ज़ंदस
स्पर्श. रो.स्त वोत तस अपरस
वाठ छुय तर्सुदुय प्रथ पैवन्दस परमानन्दस०

७. स्वर यमि द्यतमुत छुम प्रथ बंदस
गुरू प्रणव.य ध्यान करि त्राणतस
ब्रह्मा ऋष त. यस गायत्री छ'दस परमानन्दस०

८. 'परमानन्द' मेली परम. आनन्दस
महिमा मेलनुक बनि मावस
पान. व.नि इथ पा'टि रव छय इंदस परमानन्दस०

❖ ❖ ❖

दितम दर्शन म्य वर्षण तल बेमार बल. ब. बेमार बल.

१. रावुन रोव न. रोवण. तल.
ब. वंदे कल. त. हावतम रोय
गुपित गंगा भरत निर्मल. बेमार०

२. बज़ान शिवहू सु शंख.कि बल.
प्रजान छुम नार शशिकलि रहे
रोटुम छल. अ'श्क. वह्माण्डतल. वेमार०

३. प-रुम ओमकार सोऽहं तल०
क'रम पानस सो.य कल मे
हरन दोप पान ब्रोंठकुन वल. वेमार०

४. अचान ओसुस ब. बीमरस तल०
यछान ओसुस गोछुम ग्री मे
तरुन तार. सो.थि ईश्वर जल० बेमार०

५. गशुन त्रोवम म्य संसार तल.
मशान आम सोर गंजरुम मे
दुशान छ केवल. सुन्द फल० बेमार०

६. वनान 'लरस.शाह' वो.वुम यी फल०
ग्यवुम रातस दोहस यी मे
चो.लुम वसवास म्या आ'ईन तल. वेमार०

❖❖❖

श्याम. सुन्दर जी लाल वना खेली बना राधायि स.ति

१. वेल. इथ कोन. खेल.नि नेरव नन्दलालस मेल.ति नेरव
यि छ केवल प्रयोजना खेली०

२. श्याम. सो.न्दरस तस कामदेवस राम, चन्द्रस श्रीकृष्ण देवस
अ'सि छयु गा'मच तस अर्पणा खेली०

३. आश्चर्य छा मेलुन तसुन्द — जीवन स.ति खेलुन तसुन्द
पान. ब'नित विन्दरावना — खेलि०
४. प्रेम. आनन्द. व णा वायन — तथि मंज नानम्योद २ लायन
गछि सुफल मन. कामना — खेली०
५. द्राव पाल.नि वादन सान्यन — फुर्य दिनि कर्म फलन प्रान्यन
पाल. व.नि क'र सा'ञ पालना — खेली०
६. आयि जमुनायि जल तन ना वित — प्रोन म'शरा' वित नो.व प्रा'वित
शोभव.नि भूषण वर्धना — खेली०
७. अ'सि छय आमच़ असंख्य स्त्रिये — तृप्त आनन्द अमृत गये
त्रय गुण क'र.ख प्रार्थना — खेली०
८. वो.सि इथ कोन. विसव इथि — रास. कोन असव असव
गेलि कुस मेलि नारायण — खेली०
९. ज्ञान गव अथि लगुन न. यमस — गयि प्रावित परम ब्रह्मस
मोक्ष. पद भक्ती कारणा — खेली०
१०.पोष. कुल्यन मंज देव चाये — ला'गित बबूर रूदि छाये
च़रण. कमल वरिना सना — खेली०
११.आ'सि देवता तति दर्शनस — पोश वर्षणस हर्षणस
पोश वर्षण त. अविछिना — खेली०
१२.यूरमुत ओस कुकिलव ओलुय — प'तिमि ज़न्मुक चोलुक होलुय
भोरुक लोलुय खुश गोक मना — खेली०
१३. पननि शब्द.च. छन थाल.ज — ज़न छस भव.सर. वुज रुस्त वज़न
यि छु जडमूढ़ गुह्युल वना — खेलि०
१४.हृदय मंज़ ह्यथ भगवत् च़रण — आ'सि तथ निथ सेवा करन
वह्यस स.ति रूदुक न. भिन्ना — खेली०

१५.सनकादिक नारद मुन्नी व्यास शुकदेव यो करव.नी
राधा कृष्ण.ञ कीर्तना खेलि०

१६.लूक. वन. वु.न क्या करि तिमन आ'सि ब्रह्म.ज्ञान घो.नमुत इमन
कथ्यज़ि करन. च छख कल्पना खेलि०

१७.रास. अमृत रस गछ़ि चो.नुय भक्ति रस यमि न. चव रूद छ्नुय
रूद छोन ज़न्मनि ज़न्मना खेली०

१८.रस उपदन कर संत भक्ती गोपियव भक्तीवत प्रा'व मुक्ती
मुक्ती छन. भक्ती विना खेली०

१९.द्रायि निमल था'वित वों.दस गयि प्रा'वित परमानन्दस
क'रख 'केशिव' आराधना खेली०

❖ ❖ ❖

१. चो'यशित लछ ज़न्म घा'रित चिन्तामन देह अथि आव
देवन किन्नरन गंधरवन दुर्लभ रटुन यहोय देह आव।
अविना'शी पान. शम्भू यमि शाये अथि आव
आगरो चय कव. लो.गखो हा घर.चे छाये।।

२. अश्वत्थ नोव कुल नाश. रुस्त वोन ज़नार्दनि घनुधेर.मय
मूल ह्यो.र कुन लजि बो.नकुन पत्र वेद तथ कुलि.सय
युसुय तत ज़ानि वेद त'मिय ज़ोन पा'र्य जा'ञ तस शिवस.यआ

३. अमृत फल सुय कुल छु दिवान राज़ योगिन ति ह्योत.ये
हठ. योगियन कर्म का'न्डियन दुर्लभ वातुन तो.तये
रेइ पकुन तोत. सं.ज वुफ ख'ज़र कुलिस.य इथ.ये आ०

४. भ्रम काया माया छै पो.ज़ वोज़ टाठि बोज़
भ्रम त्रा'वित रोज़ ब्रह्म.य सर. खर, करत. अ'ज़ि दो
सत्-चित् आनन्द अद्वैत.य रोज़ि रोज़ बोज़ आ०

५. नज़ि रटुन नज़ि त्रावुन   युथुव ओसुक त्युथुय आस
युसुय अन्तर सुय बाहिर   युसुय स्वामी सुय दास
पा'नि पान अरूप दय   साध वन्य. योग अभ्यास आ०
६. आत्म. सा'क्षी टाठि ज़ानतो   शरीर आव क्षण भंग
संसार. किस दुख. रूपस   योग. लयि च.य असग
भूर भुवः स्वः च्यय निश द्राव   छुख च सा'क्षी च्य न रंग आ०
७. ज़ीव यलि गछि ईश्वरस लीन   सुय ज़ीव अद. ईश्वर
विश्व रूपस सुय भर्ता   सुय हर्ता गव हर
अविना'शी तस नाव.य   अद्वय आनन्द सर.कर आ०
८. हर घरि तै ब. कुसू छुस   सुय मरि घर. परि. युस
सुय ब. निर्मल आत्मा ज़ान   मरि मो.र जुव अमर गव
पा'नि पानै तति सुय घरि   वनत. व्याक अद रोज़िं कुस आ०
९. दिव. सरै मंज़ गामि गोम   गुपित बनान रुवये
ब. नमा सु युस ब. बनान   मटन अंदर दिवये
वून भ्वनन चृरिम देवी पं.च़िम   मोच़ पत. शिये आ०
१०. अंत रछित योनियन हव छयप.   छयूपरे गिंद. लो
गुर. श्यर्छी हर घरि वोज़ भूर.   भुवः स्वः छ.ड लो
यमि योनिये वुछतः ऋपो   ज़ुत. लाला गव लों आ०
११. रंग. लरि छुम रंग. रुस्त दय   प्रथ वान. सुय रंगरुय
नाना रंग धारण सुय   ना रंग तस न. गुथर.य
ज़ानी कुस तस निराकास   सारगी यस छि नेत्रय आ०
१२. चेनत. मनै चिन्ताय मन त्राव   चिन्तामन चित रूप प्राव
खस.व.ने वस.व.ने   हंस. द्वारै पूर्य त्राय
ज़ानत. हरमुख. द्रायि गंगा   च़य दिवये तन नाव आ०
१३. शब्द. ब्रह्मस गछ़त लये   सो.य प.य कासि मनि खय
खय त्रावित मन च़ित गव   चनतन प्रथ शायी दय

दय टोठयोम ऋषि पुत्रो तस त. म्य दूय रूज़नै आ०
१४. दय नो.नुय ठोर पननुय मरनुक रस तित्त व्यय
म'रित परम. जान दय छु दिवान मरि मो.र जुव अमर गव
राम लंकायि रूद सन्मुख साक्षात् दर्शुन हव आ०
१५. वेद शास्त्र प'र्य प'र्य छिय प'र्यम.ति ज़र्य गछान
अपरिस निश. नेरान छिय चोर वेद व्ययि पुराण
अज़ानतो शब्द. ब्रह्मय परम. पद दयि वथ मान आ०
१६. सहज विचार सहज. पाठ'यस सुय ज़ानि सहज़ानन्द
भूत. विचार भ्रम जानतो विषय रस मूटानन्द
मूर्ख. भावूय निश्चय कर शुद्ध नेरि सत् चित्त आनन्द आ०
१७. निश्चल नित्त सहजानन्द कुल अकुल गछि नाशस
भाषि रुस्तूय अविनाशी दय निशि जान वछत. गाशस
वोज़ि सुय भाषिराज योगी च़ेन.वन स्व प्रकाशस आ०
१८. काम. क्रोध. लोभ. मोह. स्यन्द.य ग.ति खोत. छुय ग.तलुय
ईर. सा'रिय जीव धा'री अमि ग.ति कुस छुमो कलाय
वस्तु विचार क्षमा सतोष यस छु तस तार सरल य आ०
१९. 'लघु' नोव दय नाना रूप द्राव जगम त. थावर. य
रूप ना तस ना नाव.य परम आत्मा सु अपर. य
तत्त्व प्रकाश साक्षात्कार अंदर. न्य'वरे अछ्यूरय आ०

❖❖❖

हे दयावान. म्य ह्यव चोर च्य कोताह प्रारें।
अस.वनि मुख वस.वुन ओ श छुम म्य धारे धारे।।

१. फाक. दिय दिय गयि वासा यति क्याह हा'सिल आव
चारिरस म्या'निस वो.ञ टोठ मनरस इयि आराम
चित. शांती व्रत धारे नित्त दुर्गत हारे अस०

२. छिन. टीकान प'कि प'कि कुनि अनेकन भवनन
चंचल क'र्यम.ति अ'सि कूति यमि आवागवनन
कर्म.फल स.ति ह्यथ भारे यथ ग्रट. अनवारे असo
३. रंग रंग डलनुक सामान. समय ह्यथ इथ प्यव
च्यय शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव
हे दयावान' दया चा'ञी म्य केंछाह यारे असo
४. कूति बदकार दुराचार परम्पार क'रित
कूनि बदबक्त गुनाहगार ब यकवार द'रित
कम गछिय क्याह च्य' म्य' त्यय चा'ञ दया बो.ठ खारे असo
५. मदछा छय ना को.र वां'सि म्य' चाने चाने
ज़यवि किञ को.र वनुना नत. महिमा कुस जाने
सुय वन नुय भव.सर तारि अद. कस करि तारे असo
६. काल. दिच. डाल. फिरव माल. करव र.ति र.ति कार
सुबह यलि फोल. त. पगाह आलस्यकुय रो.ट दरबार
गयि वांसा गज़रान दिन ओस वारे वारे असo
७. चानि रायि को.र म्य' यि केंछाह ती थव मन्जूर.य
नत. कुस जानि करि.ञ भक्रत किया गछि पूर.य
काम क्रोधस लोभ. मोहस मद स.य कुस मारे असo
८. म्रत. विज़ ध्यान थवक प्राण् सु म्य' संधारे
वार. 'कृष्णस' निर्मल करि भव. सागर तारे
पद्म, पत्र.कि पा'टि सर.मंज ज़ल तस कति लारे असo

❖ ❖ ❖

मो.कलाव मज का'दखानै
हा दया वानै वा.लो।।
हा दयावान, भगवानै हा दया०

१. वूनमुत म्य' छुम ज़ाल मोक.लावि चोन अनुग्रह
छुम ज़ल,र्य ह्युव निशानै हा दया०
२. न्यथ. न'नि सं.दि सायेबानै छुस ब.ताप तचि़ बुडर मंज़
त्राव रूदा आस्मानै हा दया०
३. मंगवन छुस छुमन. बानै बडि दय. करतम दया
बान. लदत मान. सानै हा दया०
४. प्रथ सौदा छु वान. वानै गछि आसुन नोन भाव
अद. मेलि पूरि परमानै हा दया०
५. छुम म्यटाह बो.ड कारखानै अद वाति चानि प्रियम. स.ति
सत्य देव, सत्य नाराणै हा दया०
६. हिय ब. लागै दान. दानै द्रय च्य' छे राधायि हं.ज
यि मंगै तो दिम च़ पानै हा दया०
७. सों.बरित छुम सामानै वति लागुन च्यय तगिय
अद. प्राव. आश्चय थानै हा दया०
८. छुक कुनिय रूप. अगवानै द्वैत.य छम म्य भासान
त्रिभुवन स.ति अज्ञानै हा दया०
९. द्वारिका जन प्रथ मकानै वछ बनोवुथ कृष्ण' च्यय
यि छ चोन सोन छय बहानै हा दया०

❖ ❖ ❖

य'च काल वोतुम शारान प्रारान न्यबर बरस तल।
विनत करान थारान थारान त्वं देव. तीन वत्सल।।
थो कुस ब. जन्म धारान धारान वो.ज मुचरावतं वर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

श्री शारिका लीला–लहरी
(तृतीय तरंग)

बंद कोर.नस बू. बाशे जगत.चि वाल. वाशे।
मो.कलय चाञि आशे शिव नाथ. अविनाशे।।

१. भाव. स.तिन इम'यो हर मुख. व'नि दिमयो
मोह. घटि ह.दि गाशे
शिव०

२. कैलास कोह. छारत धारणायि ध्यान धारत
सत् चित् आकाशे
शिव०

३. जप. शबनम धारे पपि ब्योल तप. वारे
कांह फोल गछि न. हाशे
शिव०

४. शंभु नाथ. साधय आवाहन. नादै
साञि बोज़ शुर्य भाषे
शिव०

५. तार हिम मोह. वावस मायायि द'रियावस
कड दुख. नावि पाशे
शिव०

६. संसार.के सरय बो हर. नाव. स.ति तरै बो
काम संकट विनाशे
शिव०

७. कृष्णस आप चा'ञि बख्शुस पाप प्रा'नी
शापन कर च. नाशे
शिव०

❖ ❖ ❖

होश दिम लगहो पपोश. पादन।
हा साधन हं.दि साधो हो।।

१. योगियन हंदि योग० प्राणियण हंदि प्राण.
ज्ञानियन हदि ज्ञानो

चानि प्रसाद, स'ति सिद्ध छि तप साधन हा०

२. अच्युत. चानि स.ति चित्त.कुय च़ेनुन
नत. गछि मेनुन क्रंजल्यन पोञ
प्रेम जल. छुय वुजान भाव. नाग. रादस हा०

३. ब्रह्मण ज़न्मस इथ छुम न. ब्रह्म स्मृ'च
वुछ म, म्याञि राक्षस प्रकृ'च कुन
चानि सच भक्ती धा'ञ क'र प्रहलादन हा०

४. पूर्ण पुरुष. छम चा'ञी लादन
प्रणव. पान वद.होय चो.न पादन
नाद. बिंद कन थव सान्यन नादन हा०

५. विचार नेत्रय जा'ञ गाश अन छि अ'नि
हर. हरमुख. च्य दिमहोय व'नि
निष्कल. मन निष्काम. राम. रादन हा०

६. अनुग्रह चोन गछि आसनि साधन
क्या छु पापन कमन ज्यादनप्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन हा०

७. 'कृष्णस' चा'ञि कपटञि तल नरिहे
अद. कति पा'रिहे जाम. न'वि न'वि
पुश. कति प्यियिहस होंज़न त. रादन हा०

८. छो.पि मज तस छो.चरा नेहिरे
अद. कति वनिहे जेछर यूत
याद है प्यियिहस वुञि छुस आदन हा०

❖❖❖

पा'छ दोह यावन.नि श्रावण.नि सूरी।
यी भूल त्याग. कस्तूरीये।।

१. मत वुछत. संसार.चि शोभायि कुन
मतत्र वुछत. देह. सो.न. लकायि कुन
व'दि व'दि गयि ल'दि ल'दि लूर्य लूरी यी०
२. संसार वन छु कस लानि क्या यस छु तस
जेटुन छु ब्रेटुन बस कर बस
यति प्यव सारिन.य पुशि पूर्य पूरी यी०
३. व्यवहार, बो.ज स्व'स्त अन. घन. द्यार स्व'स्त
गाट.जार. स्व'स्त ब्रह्म विचार रु'स्त
मूनि हिवि गयि हनि ज़न वूर्थ वूरी यी०
४. ज्ञान. वैरागुक वन. अधिका'री
संकल्प विकल्प सा'रिय त्राव
ममता पत थाव वय युथ न. दूरी यी०
५. मोह. ज़ाल. मंज़ नेरनुक उपाया.
कर. राज. हंसुन साया त्राव
अमर नाथचिय जानवर जूरी यी०
६. क्रियायि खो.त. छुय शुद्ध वासनायि फल
पुज़ायि खोत. प्रेमस त. मायि फल
'कृष्णस' रायि चाञि आयि मन्जूरी यी०

❖ ❖ ❖

कृष्ण. छुक मंज़ हनि लो लो।
वनि इत मनि रुकमणि लो लो।

१. सोज़ै ब्रह्म. ज़न्मुक मंज़िमयोर
वासा प्ययिय इख नत. म्य' जोर
विचार. पुछि च्य' स.ति अन. लो लो वनि०

२. योग. किस बामस प्यठ म्य' खार नाव
दोह तार. मंज़, रूदि, म्य' म. प्रार.नाव
मुख हाव तन लाग तनि लो लो वनि०

३. रा,छि छिम च्य' निशि वातनस क.ति
ज़ोर. निम लंडित, ह्यथ पानस स.ति
च्य रु'स्त नत. क्याह म्य' बनि लो लो वनि०

४. काम. क्रोध लोभ. मोहुन शशपाल
ज़ेनि.नि आव मे कस वन. हाल
ज़ोर निम इम ओर.कनि लो लो वनि०

५. शरणागत वत्सल छुय नाव
धर्मस यथ नावस म. मंद. छाव
वीर. धर्माय चोन ननि लो लो वनि०

६. भक्त. वत्सल छुक वोड. बल वीर
मो.कला'वित निम को.रहम गीर
आ.र्चर म्योन च्य' कुस वनि लो लो वनि०

७. अ'छि लोसं च्य' वुछि वुछि ईम
दर्शन दिम स ति पातस निम
युथ न जांह अथ.वास छयनि लो लो वनि०

८. ध्यान, ज़ापोवन्तस कारस म्ह' हान
वासनायि ज़ामोवन्तियि सान

मनि मन नित. दाज कनि लो लो वनि०

९. म्यानि ससार. यश. कुय मा'जि मोल
तृप्त कर ज़ोवराव मो.क्तुक ब्योल
भक्ति कुलिन.य मो.त्त छनि लो लो वनि०

१०. तन सुख मन सुख भाव प्राव.नाव
सुख, मुख. ,कृष्ण' कृष्ण. मुख हाथ
अख सुखिया अख सु बनि लो लो वनि०

❖ ❖ ❖

हे दय.! बोज़ म्या'नि लोल. नाद कूत गोमुत छुस बदाद।
इथि दुख. मंज़ कर म्य' आज़ाद दयाल. बोज़ फयरयाद।।

१. थि छु संसार भ्रम त. बाज़िगार अत ज़ोनुस न. कांसि अ'कि
ज्यूठ सो.दराह बे शुमार तार जोनुस न का'सि अ'कि
यथ न. अंत आसि तत कति आद दयाल०

२. मोह. आवल नि फाट. नोवनस छट. छट. कर. नोवनस
गोस बांबरि थर थर छम नरि जंघ. वाय. नोवनस
वांति लगनस दिम विवेक. पाद दयाल०

३. देह इंद्रिह त. छि परिणा'मी मन छु इहुदुय स्वामि
अथ मनस पत. पत. दोरुन सो.छय बोज ह.ज खा'मि
संकल्पन ह.ज छस उपाद दयाल०

४. चाञि आशायि च्यय कुन आस छट.छट. सकट म्य कास
छुस चोन दास प्ययिनं पास हृदयस मंज कर म्य' वास
ज्ञान. अग्न जाल म्या'नि अपराध दयाल०

५. संकल्पन त. विकल्पन स.ति गव म्योन वर्तन
विवेक. नो.म शिल वासन चूरि नियहम हन हन
होश डालान छुम म्य' प्रसाद दयाल०

६. गोस. क्याह गो.य क्याज़ि रूठहं छायि छयूप दित ब्यूठहं

दूरि रूजित लावि मूरे नार ललवून थोवथम्
दिम दर्शुन मन गछयं शाद दयाल०

७. यम नित आसि सम. चित मन सुय जन गव सतजन
श्रुतियन मंज ति छि वखनन यी छ वोन्मुत व्यासन
सुय छ तपजप सो.य छ'य समाध दयाल०

८. आसि करवुन अज़पा ज़प धारणायि मज़त्रावि डाफ
अंतः किनि दूर को.रमुत संसारुक संताप
छुस न. शुमार छुस न. तेदाद दयाल०

९. हे दयालो० ! देह त्याग० विजि नेर सन्मुख पानं
वृत्त म्या'ख्य पजि रज़ि स.ति था'विज़्यन समाधानै
दुभर्ल छम पान. युन याद दयाल०

१०. निर्वाण. पद दित. 'विष्णस' चावतन विज्ञान रस
रोज़ि अन्द. कनि शुमारस मन. कामनायि चलनस
हृदयस मंजं रटि चा'नि पाद दयाल०

❖ ❖ ❖

इत. दित. दर्शन भस्माधारै प्रारै कोताह काल।
हे शंभो ! रक्षपाल स्वामी हे शंभो रक्षपाल।।

१. हर. दित दर्शन वर. कास्तम आस्तम ना'ली नाल
लोल.चि बबरे तर छुम द्रामुत गोमुत छुम य'च काल
दयायि जल अथ वजरे सग दित पननुय अथ. च.य डाल हे०

२. मोह. सिंधि उदरस मज़ छुस ईरे य'ति छुम सुम नत. तार
तल. छुम जलकुय नीजर हावान प्यठ कनि छुम गट.कार
नरि छम हजि ता'य जग छम बे सो.र किथ पाठि मारे छल हे०

३. फुच. मचि खो. परे मंज छुस प्योमुत प्यठ. छुम कर्मुक ताव
अ'न्दरी अन्दरी ग्रह छम चाम चं बत. त्यजि हुंद छुय छाव
शेलहन खा'त.र प्यठ कनि छकतम अक अमृत ज़ल चाल हे०

४. ईश्वर ! म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार
चय छक अनिनय अञ.गट कासान च़य छक बखशन हार
य'मि किञि सा'रिय छिय च्य वखनान दीनन हुंद दयाल हे०

❖ ❖ ❖

हे दय. ! बोज़ कनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै।
करयो अर्चनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै।।

१. संसार आवल.नुय यि छ सनि खोत. सो.नुय
अपि मज आस ह्यनै
च्यय०
२. चोवनस मोह मसं रुदुम न दान हयूस
उन्मत गोस तनं च्ययं
च्यय०
३. हरुम म्य कष्ट हन हन हरि हर छक थवुम कन
आ'र्च़र आलवनै
च्यय०
४. सूक्ष्म निर्मल करुत प्रत्यक्ष पाठिन ब् वुछहत
सति ज्ञरन लोच़नं च्यय
५. चि़तस सयकल करुम पूर अज्ञान मल गछयं दूर
हे टाठि तिरज़नै
च्यय०
६. पादन तल. ब. मरै चा'ञ.य स्तुता करै
वार. वार आर अनै
च्यय०
७. वासनायव नाल. रो.टहस संकल्पव ब. चो़टहस
कोडहस पन. पनै
च्यय०
८. दितं सत्संग म्य ह़रदम इयं शांती त. शम दम
ब'नित आज़ाद बनै
च्यय०
९. 'विष्ण' थावतन समाधान च़ल्यस यव. देह. अभिमान
मंगन छुय क्षण... क्षणै
च्यय०

इमय पत. दिमय नांद क्यथो म्य याद प्योहम।

१.च.य छक ज़प यज्ञुख ज़प च़.य छुक तप. वनुक तप
च़.य छुक साधन हुंद साध क्यथो०

२.च़.य छुक योगियन हुंद योग च़य छुक प्राणियन हुंद प्राण
च.य छक सत. कुय संवाद क्यथो०

३.च़.य छुक डयूक. च़.य छुक टिक च़.य छुक दूर च़.य नज़र्द
च़.य छुक र्सायनय हुंद आद क्यथो०

४.च़.य छुक दुख च़.य छक सुख च़.य छक परम. आनन्दम्
च़.य छक कम च़.य ज़्याद क्यथो०

५.च़.य छक साधन हुंद सग चाञे तनि सफेद
पंपोश हिव्य छि चा'नि पाद क्यथो०

६.वेदन मंज़ छक साम वेद देवन मंज. इन्द्राज़ह
दैत्यन मंज़ छुक प्रहूलाद क्यथो०

७.रजो गुण. छक ब्रह्मा सत्व गुण. विष्णु भगवान
तमो गुण. गालान व्याद क्यथो०

८.धर्म.चि लरि कर्म.कि बर. चाने स.ति अच न
च़.य छक क.न त. च़.य बुनियाद क्यथो०

९.य'मि युस ज़ीन सुय त'मि मोन च़.य छक म्योन कर्म
वनै च्यय ब. लानिनि वाद क्यथो०

१०.लोल.नि साज प्रेमकि ब'ग. वायय सोज़ दमा
इतम योर ह्यतम दाद क्यथो०

११.'कृष्ण' धार.नावुन ध्यान सुय ध्यान यत दपन ब्र
ह्यथ शिवराग दित समाध क्यथो०

१२.संकल्प त्रावि रटि मन प्राण वासना गालि दि
चात्रि दयायि प्रावि बिंदु नाद क्यथो०

❖❖❖

अंत कालचि ज़ाल. छम तमि हाल. निश. रछतम दये।
दिम अभय वर छम यम.ञ थर कर दया मृत्युञ्जये।।

१. भव. सागर. दिवयि रंगस आयि क ति का'त्याह गये
पार तारुम वो.ठ म्य' खारुम दुख निवारुम मंज़ भये दिम०
२. आस्तं खो.श कास्त दुख भास्तं सन्मुख दये
मन म्य छुम आईन सूरत साफ कर रटुमुत खये दिम०
३. किथ पा'ठि जिंदै मरव वो.ञ क्या करव वांसा गये
मायि र'टि पनन्यव घरव बस. नाव मंज़ शांति शये दिम०
४. वश्य छि गा'म.ति संसारस यश कडनस खो.श छिये
ओर. योर. नित. ज़ोर. म्योनुय मन. च़. मंज़ निर्णय नये दिम०
५. द्युन शरीरस वा'सि हुंद आराम वुञक्यन क्याह लये
यत दपन भूमा छि तत थानस म्य निम सतुर पये दिम०
६. निच़. म्याञर म्योन लाग.ञ को.स अत लागत छये
पत मो.च़क सोरुय च़ पानै अथि कालस क्या इये दिम०
७. शून्यकिस शून्यस वनै क्या तत सो.रुण कांह वय ह्यये
करत. निर्वासन च़. दासन मोक्ष मस प्रत कांह च्ययये दिम०
८. च़ल. नावक जीवत.कि छट युथ न. द्रछ मूर्च्छा प्ययये
फो.लनावक यस च. चि़त सुय भखचि़ बागस फल ख्ययये दिम०
९. श्वेत द्वीप.कि हिवि मनुष्य कर पालव.नि काल क्षये
मोक्ष अमृत प्याल. चाव अज्ञान रुस्त निरामये दिम०
१०. गछ शरण 'कृष्णस' करिय अन्तःकरण लय मंज़ प्रये
लूढ डेंशन दय सो.रन आलव करण जितेन्द्रिये दिम०

❖ ❖ ❖

हशान ज़ीवो देह दोह छु नशन अमर पान कव. मशन छुय

१. काल.ञि च़ंजे देह यलि प्यवान सु कुससन. युस म'रित गव
वो.थान बेहान मोगान सुय यलि गछान देह अद प्यव
देहस च्य क्या हिशर छुयो जुव ज़ान ईश्वर. अंश दो ह०

२. जुव ज़ानव.नी छिय ज्ञान वान.य नतव इम मूढ मावस गय
नाना योनियन देह आदिकन कुंभीपाक अर्णवन प्यय
पुण्य पाप कर्म, शापन व'लिम.ति जन्म.मरन –रुगन क्षय ह०

३. ईश्वर. अंश अग्न त्यंबर अज्ञान. काठस संद.र्यज़े
काठस ह्यथ सुय अग्न त्यंबर ईश्वर अंश सांप.निज़े
यि दय, धन. तस यस गुरू कृपा भ्रम. य ससार गंज़,र्य जे. ह०

४. गोड. छुक विषय भोग भ्रमन पतव विफल नेरन दुख
काल.ञि सिंघे मिय तरन सिद्ध यस गुरुजरन परम सुख
महा चंचल मन लय करन सु.रान सुदेव अंतर्मख ह०

५. संसार यशस वश गछि भूत.य थ्यकन देह कि डबर दो
छम लरि छुम राज्य छुम नाव गोत्र छिम बंध बांधव मित्र दोस्त
थरि पोश ब.र ज़न गयि काल छटे व'र्य द'यि तिम इम अमर दो ह०

६. सतुक यश सुय इन्द्रिय र'टित सो.रान सु देव आत्म शिव
तुतान नित्य तस देवता सा'रिय पितर स. ऋषि-चंद्रम-रव
अनेक अश्वमेध-नरमेध क'र्य त'मि ध्यन भवनन हुंद स्वामी गव ह०

७. पतव कां'लि देह प्यवन खोचन तिम टाठि र'छम. ति इम
चितायी हुंदुय यत्न करन या'ञ दज़ि मो.र घर. गछन तिम
पतव तस स.ति कुस छुय पकन कस यम किंकर पचंन दो ह०

८. तवय अमृत कथा वनय मरन. ब्रोठुय हा म'यज़े
मरणय मरुण गव दय सो.रुन योग लयि सुय दय सो.र्यज़े
सहज अमृत च्य गलि गले यम भय० भव.सर त'र्यजे ह०

९. युथ नो यि कथ व'नि क'नि प'ति गछिय त. गछक गटे मंज़

युथनो यि वथ पक.ञ मशिय कटकशि लगक छटे मंज़
यि कय यि वध पालन प्रावक दय. घरि मेलिय वो.टे मंज़ ह०
१०. इमय यथ कथि यछ पछ भ'रक सत्संग नावे त'रित गय
यमि भवसरै स्वरूप विमुख तिमै अकाल, म'रित गय
देहि.चि छ़ाये ल'गि मोह. माये पतव पानस फ'रित गय ह०
११. हरन तिमै सो.रुक न. ईश्वर घरुक भ्रम गोम असुरगय
इम गय शरन तिम व'र्य हरन यम. त्रास. कठिने उद्धर गय
घर बार वर्जित अदे रूज़ित काल.ञि सिंधे अमर गय ह०
१२. काल'ञि चज़े गछान खंजे सुन्दर व. गंदर गछ़ान दो
अन्न पान च्य क्यत रोचान छुयो च्य क्यथ मन अद. पच़ान दो
कालस हारि भयस तारि च़. कोन. दयस सो.रान दो ह०
१३. कालुन दुर्भय सु क्युन सना जन्म कष्टय सु क्या गव
ईश्वर अनुग्रह यस भाग्य ज़नस नति छुय पानै उदय शिव
ज़न्म कस सन. सुफल गछे त्युव क'पि सना युथ अमृत चव ह०
१४. इमन भाग्य उदय करान स्वामी सो.रान वों.दे मंज़
आकश. पाताल. तरित गछान क्रीडा करान कंदे मंज़
संगरमालन शीन. इथ. ज़ल द्राव ज़ले बिंदु सिंधे मंज़ ह०
१५. इम ज़नि आसान कुने कुने व्यापक तिम हनि हने मंज़
यस लोल ईश्वर. सुंघ घो.न मने तस कोन. तिम् अद वने छिये
युस यी वने सुय तिय बने इम स'मि नित सनि वो.गने छिये ह०
१६. मधुर वेह छुय मनुक विषय हा मित्र रूपी शत्रु ज़ान
युत नो फसक लसक न. अदह मन लय कर देव सो.रुन ज़ान
वेह गलि दह यलि शत्रु गलन नित योग. अमृत चो.नुय ज़ान ह०
१७. इन्द्रिय अति विषय महा वीर.य मन राज़ महावीरन दो
अक वीर दह सास वीर कड़ि इरै भ्योन भ्यो.न बल छुक त्युथुय दो
अ'किस.य कामे सा'रिय छि लारान क्या तति उपाय ज़ीवन दो ह०

१८. कुस सन. इथ्यन वीरन मारे मन वीर राज़स रटे कंह
मयस कासे भक्ति आसे सु जन यो.दवै टोठे कांह
वुज़मलि सुय रटि आकाश चटे रवस रटे कांह ह०
१९. नाथो ब. नो रानम मंगे म्य रावगुण राज्य करे क्याह
यि केंह देहस प्रारब्ध आसे तत मंज़ हरे त. हुरे क्या
ओपुम दुलम वन्'योप सुलभ स्वराज्य लो भुप बों.दे मज़ ह०

❖ ❖ ❖

श्याम सुन्दर. बेह सुन्दर जाये।
बथरै मन मथुराये लो लो।।

१. प्राण. पवन. स.तिन मुचरन. आये
नव द्वार देह द्वारिकाये लो लो
वृ'च गोपियि च्यय वुछने द्राये वथरै०
२. बाल. रठ नाल.मति स.ति पालनाये
साञि हंज़ि कुब्जाये लो लो
निष्काम. सिद्ध कर. मन. कामनाये वथरै०
३. टोठयोक गज़ेंस कथ विद्याये
अहिरस कथ श्रद्धाये लो लो
कमि श्रोचि खुश सां'पनुक शिवराये वथरै०
४. केवल बख.च हुन्द कर म्य उपये
स.ति पननि प्रेम. त माये लो लो
वासुदेव. वास कर मंज़ वासनाये वथरै०
५. राज. द्वारस चा'निस भिक्षाये

आधीन कर्म हीन आये लो लो
चार. कर म्य आर.कचि़ सुशीलोये वथरै०
६. सुदाम ज़ा'नित कर म्य उपाये
वो.लमुत छुस ज़िष्टाये लो लो
छो.चर.य म्योन पुर स.ति पूर्णाये वथरै०
७. बान. रो स्त द्रांमुत छुस भिक्षाये
वूंचमुत दैव सपताये लो लो
भिक्षुकंस त्राव राज़ हंसुन साये वथरै०
८. फल. दायक. चानि खल. किन आये
अनुग्रह तोत पूरि त्राये लो लो
वो.वमुत केंह ति छुमन. कर्म भूमिकाये वथरै०
९. शो.ज़राव संकट ग्रह दशाये
उल्ट. समयस प्यट ज़ाये लो लो
फिरथुर कर च़ सानी कर्म लेखाये वथरै०
१०. भाव. मुचकन्द म्योन पननि इच्छाये
साव मंज़ मोह. निंद्राये लो लो
वुजनाव मंज़ स्मृच़ गुफाये वथरै०
११. पानस पत. दोरनाव म्याञि राये
सियिं रूप. जन पो.त छाये लो लो
ज़ाल मद. कालयवनस कायाये वथरै०
१२. मारका'ण्डी ज़न चाञि आशाये-
आयास मंगने च्य आये लो लो
कालम ग्रास कर भास जायि जाये वथरै०

१३.आत्मा राम. निवृ'च़ हंज़ि राये
स.ति पक शांत सीताये लो लो
दण्ड कर प्रवृ'च़ शूर्पणखाये . वथरै०
१४.गाल मोह रावणस त. क्रोध. सेनाये
ज़ाल लोभ.चि लंकाये लो लो
विवेक. मन. लक्षमणने भाये वथरै०
१५.सत्गुण प्रकृ'च कौसल्याये
मुख हाव स.ति दयाये लो लो
राज्य कर आनन्द. अजोध्याये वथरै०
१६.ज्ञान. ताज दित ध्यान. धारणाये
स.ति स्वतंत्र ताये लो लो
चित्त तख्तस वेह ह्मथ समताये वथरै०
१७.होशयार रोज़ मंज योग. निंद्राये
ह्मत समदृष्ट एकताये लो लो
तुर्या रूप. मंज़ राज. सभाये वथरै०
१८.अज ताज का'त्याह गयि कति आये
वत.गत यत यात्राये लो लो
एक. कुग्र वोत चाञि अनेकताये वथरै०
१९.वीर.क'र्य ईर. चाञि विष्णु मायाये
वडि दय. बेपरवाये लो लो
इम त'र्य तु. तिम ता'र्य चाञि कृपाये वथरै०
२०.म्य'ति तार भ़व.सर. आवल.नि जाये
स.ति विवेक. उपराये लो लो

युथ देह. डँग. सोऽहं हम. वाये वथरै०

२१. केशिव नाव ज़पनाव भावनाये
अज़पा ज़प मलाये लो लो
मन नाव. आत्म तीर्थ.चि चमुनाये वथरै०

२२. राम.चन्द्र. शिव लगाहोय एकताये
हा'वित चन्द्र कलाये लो लो
मोह.गट. कास म्याञि बोज़ मीनाये वथरै०

२३. सावधान मन कर य'ज़मन-भाये
योस द्रायि मंज़ प्रज़ाये लो लो
वर तस वो.ञ वा'णी कन्याये वथरै०

२४. विश्वरूप व्यूग ल्यूख कमै. लेखाये
स.ति नाना वर्णाये लो लो
शक्तिपात, दष्ट थव प्यठ निष्ठाये वथरै०

२५. कर्णेश्वर्यन हंज़ गूर्य भाये
रास खेल.नि नञि द्राये लो लो
थफ कर कृष्ण.ञि' राग. राधाये वथरै०

'लल' ब चायस स्वमन. बागस वछ्रुम शिवस शक्त मीलित न. वाह तति लय को.रूम अमृत' सरस ज़िंदय मरस त. म्य करि क्याह

\- ललेश्वरी

❖ ❖ ❖

श्री शारिका लीला-लहरी
(चतुर्थ तरंग)

चि़त्त गोम शांत चोन प्रेम. अमृत चोम।
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ओम्।।

१. यमि संसार. मंज़ पत. लार्यम क्या
दय. नाव स्वरण. रुस्त थावुम म. ज़ांह
चानि भक्ति भाव खो.त कांह परम सुख छा
पत. वन. भिक्षुका ह्युव बादशाह
ब्रोंठ.य म्य ह्यस फिर घरि कुय भ्रम गोम ओम०

२. मन. वाजि नारायण नाव खनतम
संकट. गटि मंज़ अनतम गाश
रायि मंज़ घनतम मोक्ष पद वनतम
प्रकट वनतम परम आत्मा
क'त्र ज़हिश बुद्ध छम थ'ञ ज़न करत.मोम ओम०

३. नज़ि ज़ांहज्यवहा नज़ि ज़ांह मर. हा
नारायण नारायण करहा नित
चानि नाव. स.ति भव सागरस तरहा
ध्यान चोन स्वरहा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेश इथ प्योम ओम०

४. हकरे बनि मंज अन. गगुराय चाव
योर. ह्यत क्या चाव ख्यत क्या द्राव

कायायि म्याज्ञि मंज़ छु आश्चर्यवत वाव
रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव
निलेप द्रास पत. क्या ख्योम क्या चोम ओम०

५. योर अथ व'हरित तोर आख व'टिथय
कोलि मंज फ'टिथ.य छुय होख पान
क्या लारि धन'सों बरित पान च'टिथ य
धर्म व्यवहार कर ख'टिथ.य पा'टि
ज़न्मस इथ करनाव धम.च का'म ओम०

६. ब'डि ब'डि कार क'र्य क'र्य क्या प्रोवुम
थ्यक.नोवुम छुम बो.ड खानदान
यश. पुछि मान. पुछि दोह रावरोवुम
लूकन होवुम देह अभिमान
ह्यस फिर म्य मोह मस च्यत पान व्यसरयोम ओम०

७. मृत. विज़ि आज़मल गं'ज़रावतम
म'शरावतम ज़न्म.कि करतूत
यम. किंकर वुथ मत. वछनावतम
नारायण नाव थावतम याद
युत छु त्युथ चत़ 'कृष्ण' प्रेम दो घ ओमज़ोम ओम०

❖ ❖ ❖

करसै सो.न पोशन माल।
अज़ इयि लाल. सोनये।।

१.मय खा.नके हा कल. वाल
गलत. त्याल. माल माल
असि मय ह्योत चो.नुये
अज़०

२.तसुँदुय मय त. तसुँदुय प्याल तसं.दे वान. क.नै आव
खुँब.चि कुँज़' तस हवाल अज०
३.दूर्यर त. लो.ग कोताह च्याल मूरे नार छुम ललवोन
शूरे पान क'हि संभाल अज०
४.य'मि लायि लोल. सोदरस छ़ल त'मि खोर लालि दुरख्शान
सुय रूद आद्य अंत बहाल अज०
५.तेजोमय युस नूरान. विज़े वुज़नावन गोम
करसै शिल दिल हवाल अज०
६.केंह गय रिंद केंह रिंदान. केंचव रिंदव ज़ोलुय पान
केह गय अचित् च्यवान प्याल अज०
७.दाग सुय ह्यत कुनि गुलालि. बाग. चि हिय सु छाव्यम ना
नावस तन ता'य रटनै नाल अज०
८.केंच़व को.ड मुल.क दाल. केंच़न निशि हावान पान
केंह गय बर. ज़न गुलाल अज०
९. व'लि म्य त'मिसं.दि लोल. कि जाम अज़ इयि श्याम सोंदर सोन
सुय इयिं 'वासुदेव.नि' साल अज०

❖ ❖ ❖

कर हयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार।
आद्य शक्तितिय शिव जियस नमस्कार।।

१. ओमय आद्य ओमूस अन्दर पञ्चाकार
ओमूय ज़गत धारित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि भ्योन-२ छुस विस्तार
ओमूस पा'र्य ओमूस हर मुख. नमस्कार आद्य०

२. ओमय छु सार. ओम.चि स्मुरण मनस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
भक्ति देव. प्रमाण थावक. बनि उद्धार
भक्ति स.तिय लय कर भक्तयो लमक तार आद्य०

३. मोह.चि़ न्य'न्दरि अन्दर म. गछ गिरपतार
बोघायि अन्दर न्य'न्दरि गछतो खबरदार
स्यो.धवो.थ न्यन्द.रि इन्द्रिय क्रीडस निश रोज़ खबरदार
दिल थव डंजे लंज़ि छुय बिहित जानावार
बोलानावुन लोल. पनने सुय सू.य ओमकार आद्य०

४. आनन्दमय बनक प्याल चावनय म लापाल
भावनय सोंरुय स्वमनि सोऽहं सहाकार
त्रिगुण उल्लंघित निर्गण छु पानय निराकार
अनतन लये मनस स.तिन पनुन यार आद्य०

५. पान पनुन य'मि कोर. सहो. व संसार
वही त'मिसज़ सही सां'प.ञ ब. सरकार
'वासुदेव.' मेलव देवाद्यदेवस ब. विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादि प्रणाम नाद बिन्दस छु बारंबार आद्य०

❖ ❖ ❖

फुलय ल'जिम सहज़ाकिस संज़ीवनस
समय वा'तिथ कुनि भुवान मनुष्य ज़नस
सहज़ पूज़ा करि कूँछाह नारायण
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैंगुणय

गव कल्य ाण स्वधर्म. मरुण पर धर्म ज़य ज़ान भये।

१. पर गव यि शरीर बोज़ देवन ति छुय नश.वुनुय
यि करि शरीर रंब.वुन वो.द ता'य पश्यवुनुय
आत्म. धर्मी दुख ना हरि तोष.वुनुह श्रेयान०

२. स्वधर्मी युस पा'नि पानै पानस अर्चान
अनेक रूपस भेद ना तस केवल यु मो.चान
स्वधर्म. विधा तस बिना कां'सि न. व्यचान श्रेयान०

३. घंटायि शब्द टिञ्जि रुस्तुय छय वज़वुनुय
सदा शिवस निश. नेरान सुय बोज़वुनुय
वो तन मोरय ओर. योरै सुय रोज़वुनुय श्रेयान०

४. मधुर मस.य ब्रह्म. योगुक च्य गलि गले
दीर्घ. रोग.य सतारुक तवय बले
ननिय सु ईश्वर निश पानस सदेह चले श्रेयान०

५. सुत.य सुत.य देह. देशस अमर छु त.य
सु जुव म्योनुन युस केवल ब्रह्म छु त.य
वाक् ईश्वरीय रूप नाव तसुद सु पर छु त.य श्रेयान०

६. व्य'चस न. कुने यी ब. आ'स.स तिय दो मो.चस
प्रज़ायि आंगन बाल. पानय रुमा न'चस
युथय ख'चस त्र्यन पोरन त्युथुय व'छस श्रेयान०

७. सु मा डयूठवन नाव गोत्र वर्ण. रुस्तुय
युस दजि नता'य हो खि नता'य छयनन. रुस्तुय
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज़न द्राव लोसन. रुस्तुय श्रेयान०

८. सर्वारंभ.य त्रा'वित युस दयस रटे
तस दय दर्शन सिर्यि ज़न दियि मोह ग्रि गटे
दय ललि टोठयोस सा'यस.य मज़ तस केंह न मटे श्रेयान०

९. सु देवदत्तस पोश लागस नित्य नाश. र'सितिय
अकाल. पोशन छक उत्पत्त आकाश. ख'सिथ.य
ज़ानान तिम ज़'नि सुकृति ज़नाइम गांश स'सितिय श्रेयान०

१०. स्वछन्द नाय.य ओस पानै सु बा'लिये
युस कदि ओसुम छायि रुज़ित केंह का'लिये
युधिष्टियर जन चक्रवत द्राय सु का'लिये श्रेयान०

११. स्वरूप.य ज़ोन भगवान संतव राज़ ऋषव
अनेक. रूपी रूप तस द्रायि अरूप सु गव
सु शांत प्रकाश सुलभातित सलुभ ल यव श्रेयान०

१२. ब्रह्माण्डस द'यि व'नि म्य दिच़ाम आगुर कते
सहस्र. दलय. फोलित आव सयोग. वते
सदर्शनस केंह न. विना लभुम न तते श्रेयान०

१३. स्वतः प्रकाश जानव. नि द'य स्वतः सिद्ध.य
स्वराज्य करान स्वदेशस सु शुद्ध बुद्धय
सधीर रोजू बोजु बोजु सु धर्म विघ.य श्रेयान०

१४. स्वमाला छम स्व मने नित्य जपव.ग्रिय
सपद सुवाक सरस्वती छय वन.व.ग्रिय
ननिय स्वज़ात शुद्ध स्फाटिक शांत शोल.व.ग्रिय श्रेयान०

१५. सुज़न आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्र.य
स बोध मये बोज़वनुय छु स्व मन्त्र.य
सु भुक्ति विना भू क्रिया छय न सु तन्त्रय श्रेयान०
१६. सुवा'दी कम केंह न मन्त्र कुस बनान
सु आनन्द. गण न'दियव इति अमृत फिरान
सु भाग तिमन च्यन इमय अद. न. मरान श्रेयान०
१७. सु भाष. करान नाश. रुस्तुय छुम सुय जुवुय
जुवुय शिव.य जुव ब्रह्मा विष्णु जुवुय
स्वतः च़ेतन युस प्रजायि कुनुय जुवुय श्रेयान०
१८. गुपित कर्म नित्य करान सु कर्म. वान.य
परामर्श छुक स्वभाव छिय घैर. वान.य
सो.गत सो.वथ भाग्य हीनन ना ईवान.य श्रेयान०
१९. सो.जा'ञ किञिय नित्य सो.गत दिवान दये
दुर्भिक्ष न. कुने तति सुभिक्ष सु समये
सुघैर सुसग आद्य अन्त यथ न. समये श्रेयान०
२०. अव्यक्त मूर्ती दृष्टमान आव सु च़ैनन.य
परम विधान सु स्मृत छम सुधर्मवान.य
सु वा'नो हव केवल आन्नद स्वरूप निर्णय श्रेयान०
२१. सु दृढ़ करान बहु ज़न्मान्तरन.य सुकर्म
ज़गत मिथ्थ्या ब्रह्म सत्य सिद्ध गव धर्म
सुधर्म फल द्राव 'सर्व खलु इदं ब्रह्म' श्रेयान०
२२. ब. तस निशे सु म्य निशे दूर्यर. न. क्षण
दूय हव ग'जिम कस वनय लक्षण.य
सो योग. कला सु पूज़ा प्रदक्षण.य श्रेयान०

२३.सु शिव वने कस इये सु तेज. मये
सु वासना यस साधकस नित्य सु बोध मये
सु तेज गाशस अविना'छी वुछ हृदये श्रेयान०
२४.सु बूलि करान सुत. ब्रार्यन सु बोध. ब्रोरुय
चि़न्तामन देह पारिजातक कुल देव. दरा.य
यि कें़ह मंगान सिद्ध गछान तत कें़ह न. ता'र.य श्रेयान०
२५.छय 'लछ' संख्या नाव तस.दि अलक्ष्य सु दव
सु भक्तिमये स्थूल सूक्ष्म ह्यिूय सु दये
तस केह़ न अ'न्दी ज़ान त. संदेह दपान तस दय श्रेयान०

❖ ❖ ❖

उत्तम भाव सहज यज्ञस ब्राह्मण नित्य हुमनस छिय।
देह अभिमान आहूती तिमय परम. हंस.य छिय।।

तति तोर सा'रिय आरम्भ दोपन. वा'र. व'लिम'ति छिय
सहजय ज़ान सहज़य मान सहज़ चे़न सहज़. पान
सहज़ क्रय दोष यो.दवै मो त्राव प्राव सहज. ध्यान
सहज़ छुय सहज़ रस चि़त्त सहज रस छुय म्य कारण.य
सहज़ पान नित्य प्रज़लान दूरी ना नेरि प्रावनुय
सहज़ क्रय शम्भोहस प्रयि सुय ध्यान पजि धरनुय सहज़ ज़ान०
सहज़ लयि च़लि मनि खय निशि बनि दय सहजध्यानन्द
सहज़ भाव. दीप प्रज़ल्यव गट. चलि मेलि परमानन्द
सहज वारि सहज़ पोश फोलि. फल द्राव सहज़ानन्द
सहज बीज़ आत्म तेज़ चिन्मय अविना'शी छुय सहज़ ज़ान०
अंजिगटि कति सहज.दृष्टि सोर.य प्रकाश.य छुय

सहज़य शम सहज़य सम सहज़य   परम गाश.य छुय सहज़ ज़ान०
सहज़ वति रावुन कति   रोवमुत अथि इवा'नी
सहज़ कथ छय अमृत   ज़न्म मृत सोर छिवा'नी
सहज़ थान योगेश्वर नित्य   समाध दिवा'नी सहज़ जान०
सहज़ नित्य आत्म तत्त्व   सहज़य ऊर्ध्वगति ज़ान
स्हजय नाद सहज़य बिन्द   सहज़य अव्यक्त.य ज़ान
सहज़य शिव सहज़.य शक्त   सहज़.य परम गति ज.ान सहज. ज.ान०
सहज शब्द ब्रह्य.य गव   सहज़य ज़ान 'अ' शब्दय
सहज़य सत्य विच़ारय   सहज़य पर. प्रसाद.य
सहज़य थान अमृत छय सहज   भक्ती छय अलबदय सहज़ जान०
सहज़ वाद गव संवाद   सहज़ भाष्य गव संतसंग
सहज़ बोलि कूंछाह तोलि   कूंछाह जानी सहज बंग
सहज़य सार्यकुय मूल.य सहज़य   सारि निशि असग सहज जान०
सहज़ ब्रोंठ सहज़य पुत.   सहज. य यत समयस छुय
सहजव स्वयं नाथय छुय सहज़.य   स्वरूप अरूप युस सहज जांन०
सहजत्रः तारक मंत्रय सहजय   संत मार्ग.य छुय
सहजय गव वेदांत.य   सहज़य वेद अपार.य
सहजय तत्त्व बोधानन्द सहज़य   ज़ानतो भर्ग.य सहज ज़ान०
सहज़य वाति न. लभुना   वा'तित हनि हनि छुय
सहज़ यस नित्य अमृत दय.   सहजय मंज़ मनि छुय
दयस गारि सहजचार नित्य   नाराण वने छुय सहज जान०
सहजय सिर्यि खो.त.   छुय नो.न त्युथ छु गंभीर.य
गंभीर सान सहजुक भाव निथ   सुर.वुन छुय वीर.य
वीर ना ईर. प्रल्यन छीय तुत   मान कुस करि वीर्य
सहज़चि तारचि तूलित तस त.म्य   भेद रचि़नव केंह सहज ज़ान०

या सुय योताबू य ना क्येंह नत. बू.य योत सुय न.व क्येंह
सहज़ बाग अनन्त नाग ह्यिय तति ज़ाग सहजद्यानन्द' सहज ज़ान०
सहज़ वारि सहज़ पोश फो.लि फल.द्राव सहज़ानन्द सहज़ ज.ान

१. स.कलि निष्कल द्रायि सो कले।
वोथ मन. ! हा कले शब्द ज़प ओं।।

२. होश थव वासनायि द्यान रोज़ि सम
मन प्राण सत्य भासि सर. फो.लि पम
मान रट पानस विघ्न हान च़ले वो.थ०
३. कस चावि लोलकिस प्यालय मस
सुय करि तय ओर चावन यूरस
लोल.कि द'रियाव० गो.ड पान छले वो.थ०
४. मन बुद्ध सू.ति छुय खूर ता'य हम
सोऽहं रज़ि सूति प.वन नावि लम
अहं त्रा'वित सोऽहं फो.ले वो.थ०
५. प्राणचे त्रकरे शब्द पर.मान
सार रठ बो.ज़ सू.ति पूर तोलान
सत चिय साक्षी लेख. अमले वो.थ०
६. सोऽहं हायकि सू.ति परमानस
यति तति प्यतरुन छुय पानस
होश थव वासनायि युथ न माल गले वो.थ०

७. शब्द बूल कुकिले गोविंद गो
पीशनूल छिय जपान कृष्ण गोपो
श्रावुन सूरित कस्तूत कले वो.थ०
८. सो.न खसि कहवचि तार.चि़ तोल
तोलि सुय रचि़ रचि़ य'मि अहं गोल
भ्यो न भयो.न मो ल छुय सो.नस सरतले वो.थ०
९. यावन बागस फुलया छम
नाद खस साधान तेज बिंदम्
सत्य लोक समाधि सहज़ प्रज़ले वो.थ०
१०. ही फो.जि जारन आरन श्रारवल
मस्वल गुलाब ब्ययि यंब.र्ज़ल
बंबूर छारान छुय यंब.र्ज़ले वो.थ०
११. मनकिस ध्यानस सोऽहं खानस
संहज़ संदानस सो.रनुय ह्युव
दम ह्यू सम रोज़ अद. पम फो.ले वो.थ०
१२. कन थव क्या वज़ान टल्द ज़ीर बम
चे़नतो आ'कलो दर नफिस दम
कलि-२ कल घनेयम वुज़ म्य शशीकले वो.थ०
१३. 'परमानन्द.' त्राव फिकिर. त. गम
चिंतामन रत्न सत्य ज़पुन ओम्
बू.य बृ.य त्रां'वित दू.य मनि गले वो.थ०

१४.ईय ओस रोव.मुत तीय पनने गरे
गोरन दुपनम अतिथय प्रार
ओरुत प्रारान ओश कर मेइयेले वो.थ०

१. निरला वासं. दय वरत त्रिकाल.
कर्ता मर्ता वाल. ब्रह्मचारो।
भक्ति भाव. कोसम पोषने करै माल.
बाल. गोपाल. नन्द लालो हो।।

२. प्रथ भूमिकायि मंज़ शून्य वलये
अ'ति ध्यत करत. चित्त भगवानो
बुद्धि संयोग. साक्षात्कार भास्तम बाल०

३. विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान.
विश्व रूप. किनि छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दितं दीन दयाल बाल०

४. शुद्ध प्रज्ञायि हंदि सत् संयोग. मान.
मध्य मायि मध्य भूत प्रज़लानो
तेज़स्व वालार्क तेज़ दीप्ति विशाल. बाल०

५. बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान.
चि़त्त गण. द्योतव.नि चित्त मानो
चि़त्त शक्त्यानन्द. भोगी प्राज्ञ.काल. बाल०
पश्यन्ते यत्-वत् चे़य योगेश्वर.
तत् वत् वुछित चि़त्त स्वप्रकाशो
बाह्यन्तर तेज़ निर्भर त्रिकाल. बाल०

७. द्वादशांत. वास. वासी चेतन मान.
स्व सुखस्थान. सुख भोगानी
स्व परानन्द. आनन्दय सर्वकाल. बाल०

८. सहस्र. दल. प्यठ. स्वस्ति ज्योतिष्मान
अंड. पिंड. अखंड. दीप्ति मानो
अप्रमेय. अविच्छिन्न. दिन. दिक्काल. बाल०

९. परात्पर गाशरं हंदि गाशर.
सवेक्षेश्वर. बोध मानो
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्रज्ञ क्षेत्र पाल. बाल०

१०. सत् सत्व तत् तत्व अच्युत. ब्रह्म तत्व
नित्योदित चित्त विवस्वानो
ओंकार. रूप. परिपूर्ण. निर्देश. काल बाल०

११. साराति सार. सर्व आत्म सर्व आधार.
देवादि देव. गो धाम. नाथो
हे दात शक्तिपात. करतं उपराल. बाल०

१२. सुज्ञान. सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षण. क्षण. भासतम साक्षात्कार
कृपा करतं भगवान कृपाल. बाल०

१३. पादार्विन्द. अमृत तप्तावतम
प्रावनावतं परम. आनन्द थान.
पाद. कमलन वंदै नेत्रन हं.दि लाल. बाल०

१४. दासन क्युत ह्यो.त छुक बडि स्वभाव.

शुभ. दर्शन. वर दिवानो
विदुरस हाक. म्य प्यठ आमुत ताल. बाल०

१५.प्रारान प्रारान वोतुम यूत काल.
अनुकूल भगवान. दयालो
ब्रह्मर्पण बोज़तम प्रातः काल० बाल०

१६.श्रीधर. सुर. गुरू. बाल. दोमोदर.
श्री कृष्ण. वासुदेव. श्री रामो
सुख. मुख सन्मुख आस्त अन्तकाल. बाल०

१७.निरला चानि संयोग. प्राव. यव.ना
सुज्ञान. विज्ञान. अति वृद्धा
दय. गोविंद. दास.य बन. त्रिक. काल. बाल०

❖ ❖ ❖

१. चेतन स्वप्रकाश सर्व आत्म ज्ञानी
सत् चित् आनन्द गण परमाशक्त।
नित्य सार संवित ज्योति द्योत वानी
कृपा कर मा'जि भवा'नी।।

२. नित्योदित चित्त रव च.भासा'नी
विश्व आत्मा चोन ज्योति स्फार
सर्वान्तर्यामि भाव आस. वा'नी कृपा०

३. या द्वादश अर्क. तेज़मान दीपिका
स्वप्रकाश गण सा चि.त्त प्रतिभा
सर्व तेज़ोमय श्री महारज्ञी कृपा०

४. दुर्गा अव्यय कर्ता अक्रिय
विश्वोत्तीर्णा विश्वरूप विश्वमय
स्वयंभो सर्वतः ज़य वा.णी कृपा०

५. परा पश्यन्ती वैखरी मध्यमा
च़ोरि पाद. एकांग शुद्ध विधा
अनुभव. मात्रा शिव मशिनी कृपा०

६. सम शुद्ध च़तन निस्त्रैगुणी
सुर. गुरू देव. देव चिन्मयी
क्या कर. निष्बुद्ध अस्तुत व. चा'नि कृपा०

७. शुद्ध बोध थवतम विध सुज्ञान.य
सोऽहं शब्दार्थ विज्ञान.य
पूर्णाहंता स्वरूप आसवा'नी कृपा०

८. ब्रह्मर्षण एकांत ध्यत थावतं
अनुसंदावतं सत् चि़त्त ज्योत
सुज्ञान. विज्ञान. सिद्ध पर रा'नी कृपा०

९. अनुग्रह चोन वनि यस भाग्यवानस
सुय गछि सन्मुख चि़त्त मानस
गलि अद. अज्ञान मोह मद मान.य कृपा०

१०. अनुग्रह. किञ अरि अंधकार कासक
याञ ताञ भासक सर्वतोमुख
सर्व आत्मा पर ज्योति द्योन वा'नी कृपा०

११. अदान. म'जिमय पर नाद. साधन
अन्य नादान हुंद छुम न. अभिलाश
वर चानि तर. कर. पर भक्ति चा'नी कृपा०

१२. भिक्षुक द्वार चोन चा़व भिक्षाये
शिव निर्वाण.कि अभिप्राये
दित.दान व'ड दात. छक आसवा'नी कृपा०
१३. चानि शक्तिपात. वात. ब्रह्म. निर्वासन
परम-स्थानस कर. निवास
भक्तयून छय मुक्तिदा दय। चा'नि कृपा०
१४. क्षण. क्षण. च़रणामृत चोन चम हा
शम.हा चान्यन पादन तल
शाप पाप शोक संताप कास बा'नी कृपा०
१५. सन्मुख सुज्ञान. अनुीाव थावतं
हावतं सुविचार. भवसर. तार
प्रारण आश्रित आशि छुस चा'नी कृपा०
१६. सूतक मृतक भय निवारतम
भव. सागर. मंज़. बो.ट म्य खारतम
आ॔त्यन आर्च़र छक कासवा'नी कृपा०
१७. आनन्द मूर्ति अमृतेश्वरी
अमरावती सरस्वती
द्वंद्व. दोष कास्तं विंद्य वासिनी कृपा०
१८. हिंगुला ज्वाला मंगला काली
पिंगला त्रिपुरी ह्रीं कारी
राज राज़ेश्वरी परं राज रा'नी कृपा०
१९. कठिने भव.सर. मत. मंद-छावतं
प्रावनावतं परम. आनन्द. थान
कृपा कटाक्ष. तार दिववा'नी कृपा०

श्री राज्ञी स्तोत्रम्

१. स्मृतैर्वान्तर्गतं पुंसां हरन्तीं सकलं मलम्।
जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां काम दायिनी।।
२. त्रिजगन्मोहिनी ईडये मिहिरी भूत सदगुणे।
नमोऽस्तुते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम्।।
३. शेषाशष मुखागण्य गुणे गुण गण प्रिये नमो०
४. सुरासुर नर सिद्ध बन्दनीय पदाम्बुजे नमो०
५. चराचर जगत्सृष्टि स्थिति संहार कारिणी नमो०
६. भक्त कल्पतेऽनल्प वाङ्माधुर्यं जितामृते नमो०
७. ब्रह्म विष्णु महेशन वन्दिते गिरिनन्दिनि नमो०
८. भक्तानां भीम संसार पारावार प्रतारिणि नमो०
९. निर्गणे निष्क्रये नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणि नमो०
१०. राक्षीस्तोत्रमिदं पु यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत्।
असंशयमशेपेण वशयेदखिलं जगत्।।

❖❖❖

म्य संतन हिश न. छय शांती न शम दम।
च. छुक पाने ब. कुस छुस कास्तम भ्रम।।

१. दया सागर वनन छिय लूक सा'री
दयाये हुंदि समन्दर छिय च्य जा'री
दया हय म्य करक अथ क्या गछिय कम च०
२. म्य ज़न्मन हंदि महा अपराध हरतम
दया करतम ग्य मूर्खस लोल भरतम

प्रियम दिम पूर त्युथ दूर ह्ययि यम चo
३. फस्योमुत छुस ब मंज़ संसार. ज़ालस
फक्त छम चा'ञ आशा अन्त कालस
क'डित निम ज़ाल. मंज़ बख्शुम परम शम चo
४. व. कोताह रोज़ यति आ'ख.र मरुण छुम
कठिन संसारकिस सो दरस तरुण छुम
नितम मंज़ नावि प्रियमचि स्योद रटित नम चo
५. उपाया कर म्य युथ मन रोज़ि निश्चल
मलिन बुद्ध छम गनेम.च़ बनि निर्मल
करुम अंतः करण शुद्ध प्राव. उपरम चo
६. ब. छुस अंदर न्यबर छ्योट खोट क्रिया छम
फकत बोठ खार. वञे चा'निय दया छम
गंगा जल ह्युव बनावुम श्रूच उत्तम चo
७. शरीर प्यठ नज़र छम छुस ब. अनज़ान
यछ़न छुस मान मा'नित मांसुक पान
ज्ञानुक सिर्यि मंज मोह रा'च़ बनतम चo
८. यशस ह्यथ छम विषय भोगन हंज़.य प्रय
दया करतम दया करतम चo छुक दय
पखांडस काम. क्रोधस नाश करतम चo
९. शर.चि शोरह बने छम पाप प्य'च सू.ति
कोहा हिश वडि छि खोचान अथ वुछित कू.ति
च. हावुस ज्योति रूप अथ वो.थि जम जम चo
१०. च्य छय द्र.य पननि कुञर.चि म्य द्वयि कास
च्य छय द्र.य पननि बजर. चि ज.म. जाँह भास
चित्तस घनतम त. ज़न्मस जांह म. अनतम चo

११. कुनुय आ'सित च. नाना रूप. किञ द्राक
च्य ह्युव गुणवान निस्त्रैगुण छु कुस व्याप
कुनिय तत् पद. सू.ति शो.ज़रावतम ओंतम च०
१२. प'तिमि समये यमस निशि मोकलावतम
च़ पानस ह्यव बनावुम मोक्ष दावुम
असा'व.नि मुख. फो.लनावुम म्य कोसम च०
१३. छु सागर चानि कुञरुक सो.न स्यठा ज्यूठ
अ'नित दिम मो.खत नत. खारुन गछयं कूठ
ब.कथ सू.ति लाग हम किथ पा'ठि दिम दम च०
१४. हवा ज़न वन बसंतुक अन च़. म्य बोश
फो.लन बुद्धि योग. बागस होश. किय पोश
तिमन पोशन प्यठ़य छुक शांत शबनम च०
१५. ब.ब.य करनुक म. थावुम कांह ख्याला
न भाष्य देह देह.चि चाला त. डाला
गल्यम आवागवन रोज़्यम न. कांह गम च०
१६. ज़गत किथ दरिहे कुस कार करिहे
समय आधीन कुस ज़्यविहे त. महिरे
छु टहरा'वित अ'मिस चाने सतुक थम च०
१७. अगम अपार छुक रिर्गुण निराकार
म्य कें छा यार कर भव.सागरस पार
क'रित सोरुय म्य थाव लोब निरालंभ च०
१८. अविद्या कास्तम नित्त भास्तम सत
ज्ञान.च स्थित दितम सो.य छम परम. गत
अचि़त था'वित म्य पत मो.च़रावतं ओम् च०
१९. च. सन्मुख रोज़तं अद. च़ाल सुख दुख

खस्य बो.ठ मो.क्त सत् सागर दियम ग्रख
र'ठित निक होश देह. मंज़ चेनि क्या चम चo
२०.स्वतन्त्र थाव म्य चेनुन शेलि ह्युव शम
स्वरूपस तेल.व.निस नशि.. छा कम
प्रियम मस मेली यस कस गेलि आलम चo
२१.पन.नि करतूत वुछि वुछि छुस ब. आधीन
'कृष्ण' पननिस स्वरूपस मंज़ करुन लीन
करुस मन लय त. अद. नो.न नेरि सोऽहम् चo

❖❖❖

१.कलजुग नहीं करजुग है यह यहां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।
२.दुनिय अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले।
३.मेवा खिलाओ मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफत ले।
४.कांटा किसी के मत लगा गो मिसलि गुल फूला है तू,
वह तेरे हक में तीर है किस बात पर पूला है तू।
५.मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुक्ता बेखबर किस बात पर भूल है तू।

❖❖❖

बिल्व पूजा कर निष्कल

कल. माला धर.स.य हर. कल. माला धर.स य
क्षय करि सान्यन पापन नाश करि सान्यन शापन
जय गंगा धर.स.य हर.स.य शंकरस.य

ओम् शिव. शिव. शिव. शंमो।
ओम् हर. हर हर. महादेव।।

१. सुय छु अज़र सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर
तस छि ज़ानन योगेश्वर आश्चर्यक आश्चर
ज्ञान गाश अनि योग. नेत्रन वुछनावि आश्चरस.य क्षय०

२. तयाग. वैराग. चित. सोस्त थावि करनावि ब्रह्म. विचार
सतचे वति पक ना'वित ज़ाननावि ब्रह्म.य सार
आत्मा. बोधुक ज़ल वुज़नावि ब्रह्म भावकिस सरस.य क्षय०

३. ह्यथ गछ़ि देह. अभिमानस अज्ञानस गंडि लार
अच्युतचे स्थिरतायि सू.ति वत थावि ब्रह्म. आकार
तमि गुण ब्रह्मवित् साधन पादन अ'छि जरस.य क्षय०

४. संसार यश भ्रम मा'नित मन किनि थावि उदास
योग. ज्ञान ध्यान. सो.स्त थावि वस्तियि मंज़ वनवास
चिन्मात्र ओत मु'चरावि मंज़ क्षण. मात्र.स य क्षय०

५. अंत काल चि ज़ाल का'सित चित्त थाव.नावि निष्कल
चढ़ुन चंद्रम काफूर ह्यव मो ख सुय हावि शीतल
सानि पालन. चि आज्ञा दियि अभयस त वर.स य क्षय०

६. धर्म. ज़ोर दियि तोर मुचरावनावि श्रद्धायि वर.स.य
ह्योर खारि चूरिमिस पोरस बसनावि शांति घर.स.य
कर्म. फलकुय बोर लों.चरावि देह भ्रम किस खर.स.य क्षय०

७. सिर्यि ह्युव प्रत्यक्ष भासित नित्य सन्मुख आ'सित
सतचे वति पकना'वित अज्ञान. गट. का'सित
आत्म. बोधुक दीप ज़'लि थाव. नावि मंज़ मररस.य क्षय०
८. बन. का'ंचाह छ्य स्त्रियि पुत्र प्रिय अथ दपान माया ज़ाल
इथि ज़ाल. मंज़ डाल. दित कडि चट नावि मोह. जंजाल
अतलास वलनावि सन्यास.वच् थावनावि मंज़ धर.स.य
९. कर्म हीनस दुर्गत हरि द्रार्यद्रस करि नाश
पालना सा'ञ.य छस मटि गटि मंज़य अनि गाश
आर इयनस तारि "कृष्ण" यथ भव. सागरस. व क्षय०

❖ ❖ ❖

वाक्य

1. वैकुण्ठ वासी श्री टिक काकजी
क्या सन गोम तत संवित् सुखस
वो वनै यो. दवै पो.ज़ वन.खय
भ्र'म रोबुक अ'मि रतन त. याज़न
अमि रत.चि त. माज़चि मो भर प्रय
2. भोग. बो.छरन छल छांगरि कोर.नक
लांग.र्य लोगुत आसित् राज़य।
प्रकाशमान पान पान. निश ख'टरोवुत
पान प.ाट.नोवुत रत. त. माज़य
3. आयस कदर नव ज़ोनुत दानय
शीन. माञि ज़न मान.व्य' गलित गव।
वाज़ वान. वनत. यो.द बद्ध क्या चाञि
. ज़ोनुथ नाव व्युत्थानय भैरव

4. देह छुय आयुकिस आ'मिस पनस
अलोंद, करान छुक शुर्य माषे
यि कोरुम त. यि ़कर. मरिके म्यान्यर.
कव. लो.गुख वासनायि ज़ाल. बाल वाशे।

5. घर. घर करान हर. हर मोटुयो
मर. मर को.रुथ अमर पानय।
आस्थिर विषय वासना व्रत द्या'र.थ
मूढ. कोन. रूज़य स्मरण दानय

6. पं'ज़ कल त्रा'वित पर कल प्रा'व.त
अ'छि गाश रा'वित सपनुक अन्ध।
विद्या सा'वित मोह वुज़ना'वित
दढ. संकल्पन क रथ वन्य सम्ध

7. मूढव बूज़य सतचि पथा
पामरव ग्यवन चि कथा ज़न।
रात दोह रावरोवुय तिमव वृथा
शों.गि. शों.गि बीठि म्य'चि दया ज़न।

स्यदखे स्यदिय सोरुय पानै
अथि इयि यि केंह छुक छांडान।
रावनै रावरुत गाह ज़न मानै
ज्ञान. उलसावतो यि अज्ञान।
ज़ोर कव. बन्योक बोज़न.कि भ्रमय
ज़ानन.कि भ्रम. कव. रावरथ ज़ान।

❖❖❖

उों नमस्त्रिपुर सुन्दय।।
श्री शारिका लीला-लहरी
(पंचम-तरंग)

प्रये चाञे दयो नेरय।
व. फेरय दरद. नयि हू हू।।

१.ह्यतन सू.तिन पनुन रहबर गछक को.त रट च़ पननुय बर
न्यबर मो नेर च़ अछ़ अंदर दिलुक दिलबर छु सोऽहं सो प्रये०

२.च. अछ. अन्दर पनुन वुछ ओल च़ पानै छुक घरुक घर वोल
ग्रटै फेरान महीन नेरान ब ज़ोर आब सोऽहंसो प्रये०

३.छय गफलत गट गाशस टो.र तमिय गाशे घ'रित छुय मो.र
शबस खसान दोहस वसान शब.य सेज़ान छु सोऽहंसो प्रये०

४.छुखै रिंदान. कतरस प्यठ छु कतरै कुलि द'रियाव च्यथ
छ द'रियाव. दुर्रि अरफानै गुहान पानै छु सोऽहं स प्रये०

५.रब.य छुय सब सब.य छुय रुब सपन रिंदान. बाज़ानै
छुहा'सिल बा सफा वा'सिल छु हांसिल आशकै हो हो प्रये०

६.हुवल अवल हुवल आखिर हुवल ज़ाहिर हुवल बातिन
हुवेदा शाहि शाहानै वज़ान पानै छु सोऽहं सो प्रये०

७.अथव पनन्यव ल्यूखुम नामे "मकुंद रामै" पनुन अवहाल
यि केंह वव्याम. ती ज़ामै म्य अरामै छु सोऽहंसो प्रये०

❖ ❖ ❖

रामन सिद्ध क'र म्या'ञ मन. कामन
दामन रटस नित प्रभातन त. शामन।

१. महागणेशन ऋषि सिद्धि नाथन
नादन म्यान्यन यलि थोवुम कन
प्रज़ल्योम त्यलि गटि मंज़ सिर्यि हि.यू शुद्ध मन दामन०

२. लूक. सरयि मज़ सरि गरदान ओसुस
वृ'च लूकन निश हर्षिदेव गोमुत
ओसुख भक्त मो कुल लो. गमुत वो.लामन दामन०

३. शिव शक्ति पोश फो.लि जीवन मुक्ती
फल. द्रास अभिन्न अर्थ रस नाश. रुस्तुय
केवल हृदयस निष्कल जामन दामन०

४. भक्ति भूमिकायि गुरू युक्ति बीज वो.वुम
वेद. थलि मंज़ सांख्य. सग स'गरोवम
सिद्धांत. सोंतन त्य'लि क'डिस बामन दामन०

५. शांती सीतायि मल गो.ल भूमिकायि
हसो सोऽहं चरणन च़र्यायि
नित लो.गमुत अमित ठीकित लक्ष्मन दामन०

६. द्रोपदी का'ली पाप जाय खा'ली
करम.चि कुरुक्षेत्र शुद्ध य'च काली
कृष्ण.ञ बहाली य'छ बलरामन दामन०

७. अर्ज़नस सुदर्शन. मुक्ती सां'पुञ
गोतायि नित्त गावान गीत कृष्ण.नि
सो.य कल य'छ़म.च निष्कल सुदामन दामन०

८. राज़. हंस सुंद साय प्यव मन. मथुरायि

वासुदेवन त. यो.छ देवकी मातायि
सो.य जाय मन्जूर क'र आरामन दामन.
९. व्यासन वास को.र शुक. संदि भागे
भागवत् ग्यो.व त'मि श्रीकृष्ण. रागै
ज़ागि कोन्न. जिज्ञास पय पैगामन दामन०
१०. नारदन नारायणस यी ओरस मों.गमुत
साम वेद कृष्णुन रा.स मंज़ बूज़मुत
प्रय म'रनस अक्रिय 'हलधर रामन' दामन०

❖❖❖

लयि दारि त्रो.परित सपद मावरयो।
हर. ज़ीव. पर.यो सोऽहंसो।।

१. मन सर. तन नाव. यछ पज़ भरयो
प्राण चूर हाविय गटि मंज़ गाश
इन्द्रिय शो.मरित आनन्द भरयो हर०
२. गारस अ'चि़थ.य वनवास मरयो
अथि च्यय इययो सोऽहं सो
सासा म'लित हय हंसो परयो हर०
३. गोकुल ग'छ़ि हय तवकल करयो
अथि च्यय इययो गाशो हो
शम सो वा'तित हम सो परयो हर०
४. ओम्के रस. सू ति दिन त. रात भरयो
च.य गोस ब.य तय ब.य गोस च.य
वर्षण. तमिके दर्शन ब. करयो हर०

५. झूट. संसारस दोह तार भरयो
ताशोक छुम म्य चोन माशोको
आशक ला'गित च्यय पत. मरयो हर०
६. हेंनस क्याह ताञ हा ब. क्या करयो
रा'वित अथि इख 'लस.शाहो'
हर गुण बूज़ित सत नाव सो.रयो हर०

❖❖❖

अर्पा'य यर्पा'य चो.र्पा'य पानस।
ब. पा'र्य लागस नाये लो लो।।

१. शाह फेरि पानै शाह नत. क'मि खा'र्य
ब्याज़ चि गयस त्राये लो लो ब०
ज़ीनित छु बापा'र्य हा'रित गव ज़ा'र्य
२. सुलभ तिमन.य इमव. तिम गा'यै
नत. छा अंदन न्याये लो लो ब०
दयि ला'नि व'ञम.च. न.ज़ि मंज़िमि या'र्य
३. सु दपि पानै मा खसनप्र बा'र्य
ब. दप. गयि लायि लाये लो लो ब०
रूद क्या मूद क्या नुकसान क'मि चा़र्य
४. क्रालन ज़िथुर्य भा' ग'र्यम.ति मा खा'र्य
इम ख्य'लि कत्यू द्राये लो लो ब०
पुज्य मा र'छि चौपा'नि या ता'य चमा'र्य
५. वाति मा दादस सु सा'द मका'र्य
दायि अकि च़लिहम वाये लो ल

दो.पनम च़. बलक चालखय वेमा'र्य ब०

६. मरिन. कूंछा बलन इम सा'र्य
मो थाव वों.दस ग्राये लो ल
'परमानन्द' ह्यथ छु सा'र.य तया'र्य ब०

❖❖❖

भेद. दष्टि सा'ञ हार पननि कुञर.चि द्र.य च्य छै।

१. सत मुख. अवतार धार मो.ह भ्रमुक दैत्य मार
भव.सागरस कर म्य पार पननी०

२. चारिरस मंज़ पांच दोह इन.त.'गछनं दित म्य छ़ोह
युथ न. अस्थिर जान सार पननी०

३. नश.स.य मंज़ बुद्ध न'शित युन गछुन गछयं म.शित
कर नावुम सत् विचार पननी०

४. ध्यान शम् दम् धर्म दान तप ज़प ह्यथ योग ज्ञान
कर दया केंछा म्य यार पननी०

५. मूर्ख. बोज सू.ति रात दोह छिम समेम.ति पाप.कोह
शोरस.य ज़न गंडत. नार पननी०

६. इयतनै वो.ञ म्योन आर वुछत. म्योनुय ठग. कार
अनुग्रहकिय लदत. द्यार पननी०

७. आसि यो.दवै गाट. खार क.नोन इयस न. हार
दिम ज्ञानुक गाट.जार पननी०

८. छुस ब. मदुक खान.दार सा'र्य छिम गज़कि म्य यार
कर.नाव निष्काम. कार पननी०

९. छुस ऋणन हुंद कर्ज़दार मत. थावतं पत. लार

लो.चरावतं कर्म भार पननी०

१०. नाव छुय संसार. सार भव.सरस दिम म्य तार
पत. नितम शोभिदार पननी०

११. त्रा'वित गोम लो.कचार यावन ओस अंधकार
रछ बुडिस छुस नाबकार पननी०

१२. प्यव म्य कर्मुक कुल छ'नित चोल म्य चित्त बुलबुल वुछित
हाव नो.न योगुक बहार पननी०

१३. खो.ट छु म्योनुय व्यवहार त्रावनस अत छुम न. वार
थव म्य निर्मल निर्विकार पननी०

१४. 'कृष्ण' करनाव सत विचार थो.द छु चोनुय मोक्ष द्वार
ज़न नभस कुन रेह म्य खार पननी०

❖❖❖

संकट कट अथ रठ दयालै
चट सोन माया जाल।।

१. वो.लमुत छुम अमर अकालै भ्रम. काल. सर्पन नाल
मो.कलाव चलनं काल.जि ज़ालै चट०

२. ताप रुस्त तर. फो.जि संगरमालै खसनस छुम बो.ड बाल
निष्बुद्ध वृद्ध छुस दिम कल छलै चट०

३. शक्ति पात सू.तिभिक्षुकस कृपाले दात. बन. छुस कंगाल
ज़ीटिस मज़िलस वात कमि हालै चट०

४. अख अ'छि नाठा करत श्याम लालै अशि सू.ति भ.रिथय छि लाल
ना'लि छुनहोह भक्ति भाव मु.क्त मालै चट०

गहस्त गठि मंज़ नो.न हाव गाश
अमृत चाव प्रेम. शब्द. अहूलादे कुनिय०

९. म्याञि भक्ति भावनायि हुंदि प्रहूलादे
सर्व आत्मा भाव सम दष्ट प्राव
सुख दुख सम ज़ान मंज़ कम ज्यादे कुनिय०

१०. बुद्धि योग. होश. गछि. जीव. भाव मशनुय
वशनुय अद. चलि दो न आलमन
इथि मशन.कि नत. याद.कि यादे कुनिय०

११. अनुग्रह. चानि सू.ति भोग ब्रोंठ. इयतन
'कृष्णरस' प्ययतन भोग.नि तिम
एक. रस. ह्यस दिस ताल किरवादे कुनिय०

❖ ❖ ❖

छुक मोक्ष दाता पान. च.य केवल सतक विचार दिम।
यी गछि आसुन ती म्य दिम योगुक ज्ञानुक सार दिम।।

१. सन्मुख इतं सोरुय नितम ह्युतमुत यि छुय फीरित ह्यतम
भत्ती दितम भक्ती दितम भक्ती हुंदुय दरबार दिम०

२. मस्ती होशस ह्यत मंगय मत. नचनावतं दित बंगय
भक्ती कोंगय जामय रंगय सुय रंग.नुक विस्तार दिम०

३. मोह किस ज़िनिस दजुन स्वभाव च य ज्ञान. रूपी अग्न हाव
भक्ती हंज़य रेह प्रज़लाव अज्ञान. शोरस नार दिम०

४. ममतायि लंका ज़ालतम भावुक विभीषण पालतं
श्रीराम. मोह मद गालतं यथ भवसरस तार दिम०

५. भक्ती त. मुक्ती शं मि च्यय मन क्याज़ि तत प्यठ लोभिम्य
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती ग्य बारम्बार दिम०

६. छुक भेद रुस्त शिव कृष्ण राम आसन क'रित प्यठ परम् दाम
प्रारान छुसै च्यय निश इनस जल्द य बो.ञ ओंकार दिम०
७. मिथ्या पदार्थ क्या मंगय़ तिम भोगि वो.ञ आसै टंगय़
शांत गछ़ अद सू.ति सत् संगय इछ़ि मख्यि़ हुंद आचार दिम०
८. वा'सा गयम मिथ्या वनन क्रय करन. रुस्त छा कें़ह बनन
छुस लोभ. फल फेकनस अनन बो.ञ गट.चिय अनवार दिम०
६. करुणावतारस च्यय सो.रित तारुम म्य तारस धप क'रित
पारस बनावुम श'स्त.रस नारस क'रित गुलज़ार दिम०
१०. छुय क्या म्य चा़रुन छो.त कृहुन छुम मज़ प्रत भोगस च हुन
छुम अररसव रुस्तुय बिहुन शुमरित म्य इन्द्रिय द्वार दिम०
११. काया छय म्या'ञि द्वारिका च.य छुक 'कृष्ण' परमात्मा
मंगन सुदामा छुस भिक्षा सर्व ऐश्वरी यकबार दिम०

❖ ❖ ❖

राधे श्याम हरि कृष्ण अरे प्रभु गोपाल।
गोपीनाथ मक्खन चोर मदन मोहन लाल।।

१.मेरा मन है जमुना जी वृत्तियां गोप ग्वाल
वह है प्रेम अमृत रूपी जल से माला माल
उसमें नहाओ खेल बयाओ बालकपन की चाल गोपी०
२.देह भ्रमरूपी शेर को है मद से आंखें लाल
उसको पकड़ो खेंचो बांधो मारो उतारो खाल
इस सिंह आसन के ऊपर अपना आसन डाल गोपी०
३.हम तुम पर अर्पन करते हैं तन मन अन्न धन माल
सब प्राणों से तुम प्यारा हो न्यारा हो अकाल
हम को मोह से मद भ्रम से दुख से गम से टाल गोपी०

४.क्या करें हम को मथुरा काशी गोकुल ब्रज नैपाल
साड़ी चित्त नगरी में बसिया तुम हो दीन दयाल
भगतों का तुम पालन वाला तीनों जगत का पाल गोपी०
५.हम गृहस्थ में फँस गये हैं काटो माया जाल
फकत तुम्हारा आसरा है देख हमारा हाल
कृष्ण' को शुभ दर्शन देवो लेवो अपने नाल गोपी०

❖❖❖

वाक्य

प्राण. स्मरणीय स्व० श्री टिककाक जी।।

(१)

इन्द्रिय द्वार ज़ानुन ज़ा'नित सुझान
विज्ञान मोनुत प्रकृत लय।
ज़ा'नी ज़ान परज़ान परमात्म.य
तव. ज़ानन सपनक देव तन्मय।।

(२)

वनखय केंह वन छो.पि हुंदि मुखय
वोज़खय केंह, पोज़ त्रोवरित कन
इच्छखय पूर्ण हृदय सुखय
कर्म कर केंह व'नित निश्चल मन।।

(३)

केंच़व वो.नुय वुछुन केंछ़ाह
वुछव.न्यव केंच़व केंछ़ाह न.।
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस

कारण कुनि केंह रेंछाह न।।

(४)

केंच़व मोनुय केंह क्या वुछ़नुय
वुछव न्यव वुछुन केंचव मोन।
केंह केंह केंच़व अनुसंधोनुध
केंच़व बाह्य ज़ा'ञ ज़ा'ञ प्ररज़ोन।।

(५)

युसुय बाह्य स्फारस प्रावे
अन्तर्मुख सुय उलसावे।
सन्मुख भावै सुय शिव.मुख ह्रावे
एकाकी शक्त दो'यि मुख. छय।।

(६)

पोज़ प'ज़राव पज़ि पो. ज़निश. अनुभाव
प'ज़ि ज़्यायव पज्युक रुछ भाव।
पचनूय पालुन अपुज़ गालुन
अपुज़ भ्रम. पोज़ ब्रह्म. स्वभाव

(७)

पज्चव कनव इमव वूज़ुव पो.ज़
पज़रुक निर्नय पोज़ तत्क्षन।
क्षण क्षण सत अमि किञ नित्य स्य'ज़रुक
रज़नी दिने शो.मरित मन

(८)

प'ज़िस प्यठ यस यछ'पछ. आसिय
पज़ि पुछि. राव.रि न्य'न्दर त. नेह।
पो ज़ बोज़न रस. मस च्ययि खा'सिय

पज़ि विना मास्य. न. तस कुनि कें़ह।।

(६)

भय. निशि रछि रव जन गाह छटे
छटे मज़य क्येठे गाश।
भैरव भक्तयन रछि मंज़ त्रटे
छटि गटि प्रकटावि स्वप्रकाश।।

❖ ❖ ❖

ज़ाक नन्द. गोरिनि अक. नन्दनै।
आक ज़गि कास.नि मोह. अँधकार।।

१. यादव कुलके कुल दीप-कै
लोल. चानी शोल वन. आव संसार
व.ल. सोन अज छै पोश. पूज्ये आक०

२. लो.लकि मंज़ले लो.लि लो.लि करहै
मो.लि ह्यमहत छिम न. मुखत त. खार
मुक्त गछ़हा चानि शुभ. दर्शनै आक०

३. ज़्यो.न चोन ज़गि मंज़ सिर्यि उदये
नरस. ज़न ज़गि मंज़ प्राण आधार
लगहाय नावस रघु नन्दनै आक०

४. साक्षात्कार चोनुय अवतार.य
चार. म्योन भव.सर. लगिहं तार
'परमानन्दने' कृष्ण. गन्धरै आक०

❖ ❖ ❖

कस क्या छ ज़ेनुन यमि ससा'री।
सा'रिय गयि हा'र्य हा'रिये।।

१. को.त गयि बब त' मा'जिं भा'य बंध त. या'री
अक अ'किस तिमन. कांसि कांसि प्रारिये
ता'र ल'जिन. तस यस यलि वा'च़ वा'री सा'रिय०

२. यमि देह. पुछि क'र म्य जान निसा'री
वायिन प्यट खा'र्य बा'रिये
कुनि विज़ि दज़ि पत. चित्तायि ना'री सा'रिय०

३. केंचन गुर्य 'रित्त रथ सवा'री
केंह न्यथ.ननि त. नन वा'रिये
वुछि वुछि बुछि इम काल. शहमा'री सा'रिय०

४. नाम. रूप. ज़ंगलस कर्म. कुलि बा'रा
विगि विगि गयि उजा'रिये
उत्पन्न भ्यो.न म्यो.न उत्पात सा'री सा'रिय०

५. वासनायि ब्योल ब्ययि न'वि नोव खारी
भो.वि भो.वि बारंबा'रिये
व'वि व'वि लोनुन हरद. त. हा'री सा'रिय०

६. जगत अरहटस देह तोल. वा'री
कर्म. रजन.य चा'र्य चा'रिये
छरि लट. लट छक पोज़ सा'यो सा'री सा'रिय०

७. मनुष्य मोर प्रा'वित देव हितका.री

यथ मंज़ सर्व आधि का'रिये
गछ़ि न रावरुन छु दुर्लभ त. दुश्वा'री सा'रिय०

८. छयन. गोमुत पान परम. सुख. धा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख मा'रिये
मोह. भ्रम. राज़. आ'सित बेचा'री सा'रिय०

९. व्यियि कोच़ मो.कलन य'मि अँधका'री
सत् सिर्यिकि चमका'रिये
चलनस न्याय बलनस बेमा'री सा'रिय०

१०. योद कां'सि मुच़रन बरञन ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
च़ारनस त. खारनस लगि विच़ा'री सा'रिय०

११. भक्ति श्रवणन बोजि कन धाय' धा'री
प्रेम नेत्रव अ.ष तार्य ता'रिये
साधन गुरुन लग्य पादन पा'री सा'रिय०

१२. वणस तत्व उपदेश उपका'री
करनस पारं पा'रिये
वे इख्तियार द बनि बा ख्तया'री सा'रिय०

१३. "लक्ष्मण" परम आनन्द च़ोपा'री
साक्षी छु साक्षात् का'रिये
प़ानै पानस करि उद्धा'री सा'रिय०

❖ ❖ ❖

कामि यम. भय चोंन प्रेयम त. लो लो।
ज्यो. न मरुन त. युन गछुन छु भ्रम त. लो लो।

१. नित्य नियम. युस जि करनस लगि भक्ति चा'ञ
मन तुरगस. ह्ययकि र'टित वगि भक्ति चा'ञ
पय सहजुक दियि रगि रगि भक्ति चा'ञ
अनुभव भी.वि अनुग्रह अगम त. लो लो ज्यो न०

२. पत. लारनस अष्ट. स्यज स्यो.ध वुछ्यूक न. जांह
असि सार्यन. य सु गोमुत प्रो.द वुछ्यूक न. ज़ांह
तस विन युस छु सा़्यन.य थो.द वछथूक न. ज़ांह
शांत एकांत प्रावि शम दम त. लो लो ज्यो न०

३. केंह ति रोजिन. ज़ानुन न अज़ानुन तस
स्वाद. अस्वाद. निशि केंछ़ाह स्यो.न न. नुन तस
केंह खटनस लायक त. नो.न वनुन तस
सुख दुख क्या अ'धि दी.पुक सम त. लो लो ज्यो न०

४. दिज़ि देहस नज़ि पज़ि अमृत फल
दिस प्रथक तै प्रथम.य दपुस मृत फल
कान नेरि क्या निर्णय कानय फल
मो.क्त. पलज़्या ता'र्यज़्यस न त्रम त. लो लो ज्यो न०

५. गाल हन हन कालुन त्रास म'शराव
ज़ाल मर. मर. सोर वस्वास म'शराव
वर्ण. आश्रम कृत त. सन्यास म'शराव
बोध पनुनय छु सूद सोऽहं त. लो लो ज्यो न०

६. वेद पुराण शास्त्र च'च प'र्य प'र्य
कर्म क'र्यज़्यन. अभिमान. स'च क'र्य क'र्य

मश.न युस बुज़ बूज़ि बूज़ि य'य खोर्य सोर्य
ता'र छुन. तस तार. तारि ओम् त. लो लो ज्यो न०

७. य'लि तेलिय अं'दरिमि लोलुक स्नेह
त्यलि मेलिय पानस ह्युव लूक. स्नेह
खेलि अन्तर् बहिर बुक. बुक स्नेह
छुन. परवाय गेलि आलम त. लो लो ज्यो न०

८. कथ. करनस त. मरणस छुन. हिशर
मानि बोज़नस म परनस छ़न हिशर
ध्यान सो.रनस त. शरणस छन. हिशर
च़मि तस युस बनि छयय. चमि त. लो लो ज्यो न०

९. 'परमानन्द' परम. आनन्द प्रा'वित
प्रा'वि नो.व नो.व सांग नोव जंद. प्रा'वित
नावि तरि अथ. छोम्ररुक चन्द. प्रा'वित
रुज़िज़्यन. कुनि नजि दिजि तम त. लो लो ज्यो न०

❖❖❖

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल।
ज्ञान कुय लाग अ'छि म्य अंजन अज्ञान कुय पोह म्य गाल।।

१. भवसरै फो.टमुतुय छुस मोह मायायि बो.ल म्य नाल
छुस न. ज़ानान बोट ख'सित वोम्र अथ. रोट करतम दयाल०

२. सत् असत् विच़ार छुम न काम. य'न्दिलि छिम पतै
असत. चि हां' कल म्य चटतम हावतं सतचिय वथ.य०

३. काम क्रोधन लोभ मोहन छुस ब. को.रमुत ज़ेरबार
भवसागर दुख घर, मंज़ अथ. रो.ट करतम दयाल०

४. दीन वत्सल रछ पद्यन तल आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव. किञ शांती म्य वनिहे वैर. भावस गछि अभाव

❖ ❖ ❖

ज़न्मस इथ यति केंह छुन'. लारुन।
धारणायि धारुन गोविंद गो।।

१. अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन
नित्य नियम. स्मरणि वायुन ह्यू धारणायि०
धैर्य.चि़ यट.फोरि दत. फुटरावुन

२. युस करि स्वमन. दारुन त. प्रारुन
ती छुस लारुन संसारस धारणायि०
तव. खो.त. रुत छुय परउपकारुन

३. धन. द्यार अथे इथ म'शरावुन
कर्म.चि वति प्यट धर्मस ह्यू धारणायि०
य'ति नो प्रोनुय फो.त छुय लारुन

४. दांद-हूर न्य'न्दरे सुलि वुज़नावुन
कल करनावुन सोऽहं सो धारणायि०
"लल द्यद" गुरू ह्यत स्वरूप वुछनावुन

❖ ❖ ❖

ओं

श्री शरिका लीला-लहरी
(षष्ट तरंग)

ललवान सिरि हक ज़ेरि ज़ेरि ह्यरि बो.न
छम वज़ान ज़ीर बम तार
ह्यसक्य मयखान. मस य'लि व. चोवनस
भोवनम सिरि असरार
आलव तोरै गोक द'रियाव दाम. चोक
शौकन को.रुक मिलचार
सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय टान
गाह गट. गाश गाह प्रकाश नूरान
यक्सान सोरि समान
रंग. रंग. बेरंग सूरत सो. मूरत
न'ञ द्रायि दर बाज़ार
गगनयि पवनयि नागनयि भागनयि
सत नयि ब्ययि नवद्वार
सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि
मो.लवान ह्यथ खरीदार
पननुय ह्यो.न ह्यय पननुव बाज़ार
पानै ग्राक त. सौदागर
हरद. सोंत. कुञरस वोंत कुनि लो.भमस न.
दरद. नयि फयूर शेहजार

सत परद. चटिय.य हूर द्रायि वनवान
पोशन क'रिक तूमार
ग्रक ल'जि सो.दरस दरवाज खुल. गयि
अनुग्रह द्युतुक अंबार
कंद पुरी जृन. डवि शश त. रव सा'विथ
ना'वित अंदरिमि तों दर प्राण
गटि मंज़ "भास्कर" सास मासना'वित
सुय प्रावि शांत आकार

❖❖❖

सुन्दरो सो.न. संदल गरय. हो हो करै श्याम. सुन्दरै।

१. गोपिय प्रारान गोकुलै वेरि चाञि फेरान निर्मलै
खेलव त. मेलव अमरै हो०

२. जसोधा वुछतोन भाग्यवान टोठेय यस इम ज़ संतान
बलभद्र ब. ब्ययि कृष्ण. गंदरै हो०

३. अ'तरे पलंग पा'रवयो पा'टिय कर छ बथ.रावयो
अंज़.लि दर्शन मोक्त. हो जरै हो०

४. गलि गलि दो.ध बो चावथो फलि फलि नाबंद ख्यावथ
बादाम कंद चंद हो भरै हो

५. आसान छुक कैलास कोह भासान छुक यति रात त. दोह
हरमुख. क्यव गंगा धरै हो०

६. ना'लि माल. खा'लि कनवा'ली रंग.रंग. जाम ज़रका'री
शीतल स्वभाव पीतांबरै हो०

करुम म्य हे प्रभो ! मंगल वरुम चऱणार्बिन्दन तल।।

१. शरण आसै ब. दयि नावस चऱ. टोठ्योक शरणय भावस
गंडित छुस भक्ती हुंद अंज़ल वरुम०

२. वुज़ान छुम चानि प्रेमुक स्नेह करुम अनुभव म्य नो.न अनुग्रह
गछ़्यं युथ वासना निर्मल वरुम०

३. दिम्य शक्ति पातकुय प्रसाद वुछन छुस कोन. चानिय पाद
तवै छुम चित्त गोमुत चंचल वरुम०

४. छु चोनुय आसनुय सन्मुख छ.यनन दुख प्राव निर्भय सुख
म्य सो.य भक्ती गयम सुफल वरुम०

५. छो.चऱ छुम ओसमुत कर्मुक यि बाह्मण ज़न्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अनज़ल वरुम०

६. वुछस पुनर आवती कालन फसोवमुत वासना ज़ालन
म्य कास अविद्यायि हंज़ गांगल वरुम०

७. गछयं सःज्ञान त्युथ उपदुन इयम युथ दष्टि मंज़ दो.न कुन
छ सोऽहं नाव युथ केवल वरुम०

८. म्य रोजुन ग'छि न रज तय तम बनुन तत् सत् गो.छस उत्तम
छसै स्वभाव. किनि शीतल वरुम०

९. दया हंज़ दृष्टि कुन केवल करुम अतर बहिर् निर्मल
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल वरुम०

१०. दितम विकार. अग्नुक बल दजन कामादिक,कि जंगल
वुछन स्वप्रकाशचिय वुज़मल वरुम०

११. हे केशव. ! केशव अर्पणै सदा निर्मल सुदर्शनै
म्य फो.लनाव द्वादशांत मंडल वरुम०

❖ ❖ ❖

भगवान. तमि काल. कर म्य अनुग्रह
य'मि काल. प्राणांत आसि म्य।
चानि अनुग्रह रुस्त ईश्वर कर्म न्याय कुस कासि म्य।

१. सा.र्य त्रा'वित रो.ट म्य दामन चोन. कामन सिद्ध म्य कर
भा'य बंध संतान नारी इम छि अस्थिर छख च. स्थिर
नाव चोन लयि लछ करोर.य दिम पनुन. भक्ति भाव म्य०

२. बाल. भाव. किञ ग्युंद म्य हारण ग्राव. वोञ वो. कस करै
वक्ति सखती छुम्मन. कहि. छुस तारि गोमुत शशदरै
छुम म्य तकसीर पानस.य चा'ञ नाम. स्मरण क'र न.म्य

३. कर्म फल किञ लोक.चारस रंग. रंग भूगिम विषाद
यावनस मुतवाल. सांपनुस काल. भय. रुदुम न. याद
बुज़रस मंज अंत कालुक छुम स्यठाह वसवास म्य०

४. राज़ होंज़ाह ज़ाल. लोगनस कठिनिय कर्मय फलन
ज़ांह क'रम न. राम स्मरण, साधु सेवन हरि भजन
लाभ अथि इथ रावरोवुम सुय खो.तुम अपराध म्य०

५. अंतः करणन ज़न्म. ज़न्मन हुंद म्य सार्योमुत छु मल
आदि दैवक भौतिकि आद्यात्मिक कर्म. फल
कर दया पनञिय प्रभो ! विचार. मन शुज़रावत. म्य०

६. ईर. गोस भव सागरस मंज़ धेर. भाव रूदुम न. कैंह
गोपाल चा'ञिय छम म्य आशा पान म्योन मटि छुय हा च्य
म्योन रुत क्रुत छुय च्य रैशन थफ क'रित बो ट खार म्य०

७. अंत समयस टा'टि छि खोचान अक अ'किस पत कुन चलान पान.वा'ञ अक अ'किस वनान वुछ्त वुनि छुस शाह खसान वुछ्त. भ्रम बा'ज़िगार यि संसार ख्रेह तिमन रोज़ान न. केंह०

८. हे प्रभो ! बोज़त म्य ज़ारी सर्व ख्वा'री कारतम
वक्ति पोरी दस्त गीरी कर प्रभो ! चा'ञ आश छम
छस पथर प्योमुत म्य थर. छम करत. गम. मंज़ शाद म्य०

९. निर् अर्थ आत्मा को.रुम हाय वो.ञ कोताह छुस पशन पत. नार छुम. ब्रोठ छंव आमुत त. चामुत छुस गशन कर दया पननिय प्रभो ! छम चा'ञ वाराह आश म्य०

१०. छुख क्य दया सागर करतम शरण वो आरस च्यय विष्णार्पण करत. म्यान्यन सा.र्यनय पापन चं. क्षय अत कालस हाव म्य दर्शन सर्व संकट कारस म्य०

❖❖❖

१. भक्त वत्सल. मोनुक म्यानि मन.न.य।
शक्ति नाथ. गडयो मन.नय माल।।

२. बूज़ि बूज़ि श्रवणय त. क'र्य क'र्य मनन.य
निधि ध्यासन ज्ञान. दीप प्रज़लाव
साक्षात्कार छुक शिव. रूप ननन.य शक्ति०

३. अधिकार द्युतमुत छुय सत जनन.य
मंज छिय अंद ह्यत माया ज़ाल
निर्गुण. लगयो इथिन.य गुणन.य शक्ति०

४. भीषण, इम मुख च्यय कुन अन.न.य
तिमन.य आय मंगि काल य'चकाल
तिहं.ज़ि अ'छि नाटि मंज़ कल्पांत बननय शक्ति०

५. चित्त आकाश, हाव निथ मुख पननुय
छ़ारनस लो.गमुत छुस ब. पाताल
ओन छुस खो.नवट. खोड छुम खनन.य शक्ति०

६. युथ छुक त. त्यथ छुक क्युथ छुक ननन.य
सुय ज़ानि यस बनि युथ ह्यव हाल
वोन दित छु नोन वुछि वुछि ओन बनन.य शक्ति०

७. देह अभिमानुक कुल ह्ययि छन.नुय
तीव्र वैरागुक सूराह वाल शक्ति०
शिव. रूप. ती बनि ई प'हि पनन.य

८. लोल. आलव अ'श फयोर भा'न्स कनन.य
चान्यन गछि ना, तर छिम लाल
सुय मुखत बनिहस यत छि मूखत वन.नय शक्ति०

९. पज़ि भाव. पान प्रमाण नाव पननुय
शाह पूर वर्ताव अथि ह्यत माल शक्ति०
मज़ बाज़रस वान लो.द निर्धनन.य

१०. ह्यलि ह्यलि लावि लावि मावि भावि गो.निन.य
कुञ र.कि खल. फल. व'छ मुखत. हाल
गाटस गाट. प्यव ह.रिरस छु छो.नन.य शक्ति०

११. नियम.च्यन ना'र्यज़्यन यम.कयन यन.न.य
समदृष्ट. जल फयुर माला माल
निष्काम. कर्म. भमि कल्पवृक्ष वनन.य शक्ति०

१२. योग. अग्न. विन छुस ज्ञान. अन्न रन नय
योगेश्वर. छुय मूर्ख. मुँद साल
अन इच्छा करतम अनुग्रह पन.नुय शक्ति०

१३. दय. धन. प्राप्त प्रत कां'सि वन.न.य
बान. रोस्त कर्म हीन छस कंगाल
वडि भगवान. लदतं वान. पन.नु.य शक्ति०

१४. गंड. गंड वुनि छम आम्यन पन.न.य
वर दिम इन्द्र. चन्द्र. छक दयाल
दो.गनाव उल्लंघित छक त्र्यन गुण.न.य शक्ति०

१५. साध. छम इच्छा कुमा'री नन.न.य
स्य'ज़ साज़ ग'र सूज़ित संभाल
को.रणस सं'जिवरिकिय वर्तन.न.य शक्ति०

१६. शक्तिपात सू.ति भक्ति भाव. न्यथ ननिनय
भक्त कर मीना वाम हिमाल
ताह खोल वर दिन.क्यन वर्दन.न.य शक्ति०

१७. थप क'र मनस चित्त आनन्द. घनन.य
तप गव सिद्ध अथि म'ठ जप माल
मस्त को.रनस इथिय प्रेम मस च्यन.न.य शक्ति०

१८. मीनायि हीमाल पर्वत बन.न.य
चक्रेश्वर छय त्रि ज़गत पाल
सा'र्य देव चक्रस फीर्य प्रदक्षणन.य   शक्ति०

१६. 'कृष्णस' हरमुख. मुख हाव पननुय
थपि खारतन प्यट सोऽहं बाल
फीरि फीरि नीरि नीरि र्निणायि नयिन.य

❖❖❖

१. गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान।
चित्त विमर्श. दीप्तिमान. भगवानो।।

२. वृ'च म्याञि गोपियि च्यय पत. लारान.
बन्सरी नाद. वाद. मतानो
न'शरित ह्यस त.होश म'शरित परत. पान   चित्त०

३. अथ.वास च्यय सू.ति रास आस. खेलान
व्यास नारद ति तति आसानो
दास. भाव. राधा कृष्ण. कृष्ण. ज़पान   चित्त०

४. देवियि त. देवता सेव च्यय करान.
भवसर. तव. तार लभानो   चित्त०
ग्यवान रिवान ज़्यव छखन लोसान

५. अस.व.नि कोसम मुख. चानि फो.लान
कुसतव नज़ि आसि शेहलानो
कौस्तुव त्र'टि त.माल. आसहोय पा'रान   चित्त०

६. मायायि सू.तिन च. शायि आसान.
कायायि मज़ भिन्न न. रोज़ानो
सिर्यिकि आसन. छाया छय भासान. चित्त०

७. आकाश. मुख छुक आकाश भासान.
तत् सत् प्रकाश आसानो
देवन हंदि देव. प्रा'णियन हंदि प्राण चित्त०

८. युस् युथ सो.रिय तस त्युथ छुक हावान.
मुख हाव म्य'ति श्री नाराणो
प्रारन.चि फुरसत छमन.रुज़म.च़ दान. चित्त०

९. यस ई इच्छि. ता'य तिच्छ. छुय प्रावन.
कर्म. फल दात. च्यय वखनानो
ह्यो.न द्युन पननुय लक लकन बहान. चित्त०

१०. क्षमा मूर्खस गाट.लि छि करान.
गाट. छ क न. तमि सू.ति प्यवानो
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस ई जान. चित्त०

११. तगिहं त. ज़गि मंज़ आसहा ध्याकान.
वन कस कां.सि छुन. व्य'पानो
कुञर.चि कथ छय सञरस श्रपाण चित्त०

१२. सिर्यि चंद्रम. रोस्त. ज़ग छा प्रज़लान.
भगवान. रुस्त प्राण अप्रमाणो
लगहास नित्य नियम. रोजिहं सन्निधान. चित्त०

१३. दास छिय अ'सि चा'नि कोन छुक मानान.
लागिज़िन. पनन्यन बेगानो
शर.म छय ना छिय शरण ईवान. चित्त०

१४. वनन.चि जाय छमन. वनुन कव ज़ान
सनन. चियि कथ छय व्याक आसानो
बनि यस ई पानस सु व'नित न. ज़ालान. चित्त०

१५. बाकि बाकि वदनस ति वाक्य छिन फोरान.
साक्ष छुन अन हित आसानो
चाक गा'म जिगरस आक छिम न'बलान. चित्त०

१६. छसन. डेंशान बो देश' देश. छारान
प्रारान छससु छुम न ईवानो
प'दि लूसिम.ति व'दि व'दि चड़ि भरान. चित्त०

१७. अत छुन. भगवत मायायि लासान.
आयायि तति कति छारानो
छारित त. गा'रित ल'भित त. रावान. चित्त०

१८. गिंदनस रंग. रंग. टंग. छन. ईवान
मग. हाय ब.ति श्री नाराणो
हंग. ता'य मंग रोज़तम संतुष्टान. चित्त०

१९. हे कृष्ण ! पाप सा'नि चय छक डेंशान
शाप कास असि - अ'सि छि नादानो
क्षमा कर यव. पायस छि प्यवान. चित्त०

२०. भगवन मायायि कांह छ़न. ज़ानान.

तस त्युथ छ युस युथ छु मानानो
मान. अवमान रुस्त चू.ति मान ब.ति मान. चित्त०

२१. युस न. जाव कांसि ता'य कांह छुसन ज़्यवान.
ज़ीव आन मा.नि यस छि जपानो
ज़ानि सु सोरुय न. ज़ानि तस कांछा न. चित्त०

२२. ब्रह्मा ति छुन च़ोर वेद ह्यत पोशान.
तुतनस यूत तस पजाना
शेष नाग सारि ज़्यवि सू.ति को.ल गछान. चित्त०

२३. युस ज़ि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावान.
दय नज़ि मनि कुनि आसानो
बु.य च्यय अर्प त. च़.य म्योन आसान. चित्त०

२४. घन. ध्यार पत.व त्राविथ गछान.
भाग्यवान तिम इमन न आसानो
सन्तोष वृत्त दिम छिम तिम नव निधान चित्त०

२५. सन्तोष. वृत्त दिम छिम नव निधान
तृप्त कर म्य सत् स्वरूप ज्ञानो
यथावत् युथ ब. आसहथ वुछान. चित्त०

२६. 'परमानन्द' परम. आनन्द प्रावान.
सूरमुत हनि हनि अरमानो
राधा माता त. बब कृष्ण भगवान चित्त०

शुभ मुख हाव म्यति अमृत चावतं।
सत्गुरू हावतं गटि मंज़ गाश।।

१. गो.ड सत्गुरू सुंद ध्यान सो.रनावतं
दम. दम. वद. च्यय कुन नम.हा
रात दिन अक क्षण छयन मत थावतं सत्गुरू०

२. जन्मस इथ कर्म खुर संभालतं
मत. दिपिरावतं साधन मंज़
मन चे कलि इन्द्रिय चूर पावतं सत्गुरू०

३. दह शो.मरा'वित मद हो.स्त पावतं
काहन हावतं कुनिय वथ
सोऽहं शब्द. निशि भ्योन मत थावतं सत्गुरू०

४. शिशरम नाग. सर. तन नावनावतं
मत. वुछत म्यानिस कुकर्मस कुन
मोहञे सिंधि म्य'ति अपोर तारतं सत्गुरू०

५. क्षण. क्षण पननुय ध्यान धारनावतं
सोर. नावतं ती यी पज़िहे
कामदेव. श्याम सुन्दर. लट. मत. दावतं सत्गुरू०

६. विश्वंभर. पननुय शुभ मुख हावतं
रोज़त तं. भावहा'य पननुय हाल
म'शरोवमुत नाव चित्तस पावतं सत्गुरू०

७. वनमाल धा'रित दर्शन हावतं
हावतं पननुय प्रकाश रूप
दोह गोम लूसित मत. प्रारनावतं सत्गुरू०

१. शिव नाथय प्यठ सपज़क स'तिये।
श्री पारव. तिये भ'विनै जय।।

२. पूजायि पोश लागय लव. ह'तिये
अ'किन गामि आसव.ञ छक शिवा
रक्त बीज़ मा'रित छक पान. त'तिये श्री०

३. पोश सोंबरा'विम वो.ज़लि नीलि छ'तिये
पूज़ा करहय इष्ट देवीये
ज़ार. पार. वार बोज छिय आर.क'तिये श्री०

४. अमर नाथ कैलासकस सूर. मंतिये
व'रनक त. क'रनक अर्ध शरीर
नित्य छक आसव.ञ तस सू.ति सतिये श्री०

५. अष्ट. स्यज सू.ति छय ब्रूंठि ता'य प'तिये
शिव शक्ति रूप. छक सर्व व्यापक
'कृष्णस' टोठ छक वोज़ान यंतिये श्री०

❖ ❖ ❖

.प्रेम. पोश लाग शेरि तसं.जि वेरि करवा'य रो.वये।
१. होश बुल बुल प्राण पोशनूल ध्यान.कुल चाव फो.लनम
प्रारवुन रोज़ खबरि तस.ज़े वेरि०
२. भाव बंवूर द्राव गोशस पोश. वागस चाव मंज़
करनि गूँ गूँ असजि वेरि०

३. स'मिवि स'खियव अस्त. आस्तै तमनि लागव भाव. पोश
यस नन्द लाल नाव प्यवये वेरि०
४. शशकिल प्रावक अद. चाव ज़ाव अमृत द्राव नो.न
श्याम. सुन्दरन दाम. च्यवये वेरि०
५. आव सोंत ता'य छाव अछि पोश चाव बुलबुल बागन.य
त्राव मोह. जंद वंद. कुवये वेरि०
६. नो.न सु वुछत. जानावारय मो.क्त. हार.य आव ह्यत
ज़ीव. डल. दित द्राव व'रिये वेरि०
७. ह्यछत. वार. करत. चार. पननुय ध्यान धारणायि धार ध्यान
ज़ान प्राण मा छु मूर्ख. प्रवये वेरि०

(७४)

पाद. कमलन तल मा'जि म्य'ति वरतम्।
अनुग्रह करतम मा'जि अनुग्रह करतम्।।

१. कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोजतम्
बालकस नाल ता'य फ'रियाद बोज़तम्
पाप शाप कास्तम संताप हरतम्- अनु०
२. म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
बे होशस म्य'ति अनतम होशन
तोषतं त. मनि मंज़ लोल. रस भरतम् अनु०
३. कन थव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सार छक च.य मा'ज़ि धारणायि धरतम् अनु०
४. भय दूर करतं य'मि संसारुक

मटि बोर वालतं खो.टि व्यवहारुक
तंग आस य'मि निशि वासना फिरतम्   अनु०

५. चो.दहान भवनन माता च़.य छक
दाता च़.य छख त्राता च़.य छक
रोग. ता'य शोक' निशि जल च़.य म्य कडतम् अनु०

६. वदवुन बालुक मा'जि छुल प्रारान
थो.द तुलतं दत. लारान लारान
दिलास. दित म्य ओश वुथरावतं   अनु०

७. दीनस त. क्षीणस सत छम चा'ञिय
भारस्तं हृदयस मंज़ हे भवानी !
दासस त्रास ता'य वसवास हरतम्   अनु०

८. संसार. द्वैतन ब.य रोटमुत छुस
दुख सागरस मंज़ बय फो.टमु छुस
खारतं आवलन. मत. म'शरावतम्   अनु०

९. पाय म्योन च्यय रुस्त कांह करिन. माता
उपाय र'स्त्यन चय छक त्राता
कास्त अंधकार दास गंज़रावतम्   अनु०

१०. वील.जार मा'जि वोज़ चय नील कंठस
शील हर चं.य छक आशा जा'ञ छस
भक्ति भाव पननुय म्य'ति पुशरावतम्   अनु०

❖❖❖

गन्योमुत छुम मनस चोन भाव ज़गत् माता म्य दर्शन हाव।
म्य आमुत लोल. बानन छाव ज़गत् माता म्य दर्शन हाव।

१.ज़गत माता च. टोठान छक   भगत सन्तानन.य बेशक
ह्यवान युस लोल सू.ति चोन नाव   ज़गत०

२.म्य वोल शानव प्यठे वोर.य   म्य पुशरोव पान च्यय सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिक. चाव   ज़गत०

३.ब. छस प'ज़ि किनि स्यठा नादान   करान छस पाप छस अनजान
करुम माफ छय च्य माता नाव   ज़गत०

४.प्रियम नगरस अंदर चामुत   ब. चाञे डेडि तस आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो.ध चाव   जगत०

५.त'मिस क्या गम य'मिस यावर   च. आसक ताज दित वर सर
शत्रु सुदं पोरि कति तस दाव   ज़गत०

६.वदान छुस चा'ञ घनेयम कल   द'लिस तल मा'जि ह्यतं जल-२
म्य सतचे प्रेम. न्यंदरे साव   ज़गत०

७.वनान छुस वील. ता'य ज़ा'री   थो.कुस यूत काल प्रारि प्रा'रि०
म्य लोक.चार गव बुजर वो.ञ आव   ज़गत०

८.ज़गत माता म्य संतुष्ट रोज़   वनान ज़ा'री छुसै च.य बोज़
पन.ञ दयगत दयालु हाव   ज़गत०

९.ब. छुस हिंयि गों.दि च्य किति सारान   प्रेयम सान डेंडि तल प्रारान
च. प्रेम कि भाव. हिंयि गों.दि छाव   ज़गत०

१०.छु 'बागवान' च्यय परन प्योमुत   गडित गुलि च्यय शरण गोमुत
छु स्मराण चोन हर दम नाव   ज़गत०

द्रौपदी विलाप।। जय राधा कृष्ण।।

श्लोक :–हा कृष्ण मनसि वासिन् क्वासि यादन नन्दन
इमां अवस्थां संप्राप्तां अनाथां किं न रक्षसि।।
वलो श्याम. लालो ब. कोताह इ चालै
सभाये अंदर छिम कडान जाम. नाल।

१.ल'जिस वो.परन मंज़ व'जिस क'मि ब. शापन
ग'जिस शर्मि दावै ल'जिस गिरस ब. ज़ालै०
२.म्य वुजक्यन करान छुमन. कांछ़ा हिमायत
यि क्या ओस दयन लयूखमुत म्य कपालै०
३.च्य रुस्तुय रछयं कुस अवल छस ब. ना'री
च़. रछतं त. वछतं छसै कमि हालै०
४.प्य'यिय मा न्यंदर च्वय सदा छुक न. बोज़ान
ग'यि को.त दया वजक्यनस हे दयालै०
५.च. छुक दीन बन्यधु म' म'शराव दीनस
हृषीकेश. अशजे हरान छसया चालै०
६.म्य वोज रूजमच छम न. कांसि ह.ज आशा
तमन्ना म्य टाठि छमत. रट.हत ब. नाल०
७.सभासत बनेम.ति छि मोनिक चित्र जन
दया छकन. वजक्यन इवान हे दयालै०
८.दया सागरो कर दया "नील-कंटस"
च. दिस पान. दर्शन यिस अन. कालै०

जय जगदम्बे ।।

ओरुत प्रारान छुक बर तलै बलै दर्शन. सू.ति।
घनेम. च़ मा'जि छम चा'ञ कलै बलै दर्शन. सू.ति।।

१.संसारण म्य ग्यँदनम छलै मिलनोवनस म्य'च़ि सू.ति
अज्ञानन बो को.रनस नलै बलै०
२.मायायि कोरनं मन चं.चलै मस्त गोस लोभस सू.ति
मोहन आवरुस रोटनस तलै बलै०
३.पापन हं.दि बारि छु अल.अलै चा'रिथ छुम रज़े सू.ति
मंज़िलस किथ वात छुस निर्वलै बलै०
४.सोरुम न नाव चोन छुम मलै छ्यो.नुस ब.इत ग'छ सूति
आवागमन च कास गांगलै बलै०
५.मन दर्पण म्य कर निर्मलै मल्युन छु गरदे सू.ति
दयायि हंज करतस सैकले बलै०
६.व्या'पित सोरुय छक जल स्थलै भ्रम छुम अज्ञान. सू.ति
दुइ कास युथ भासि कुन केवलैं बलै०
७.ज़जरयोमुत छ़स बो बवलै फोंल चानि अनुग्रह सू.ति
सरताज बो बन. दयायि ज़लै बलै०
८.मा'ज्य रटतं दामनस तलै खोच़ान छुस भयय सू.ति
प्रेमच न्यद.र म्य पांव जल ज़लै बलै०
९.भक्ती दिम तिछ युथ नय डलै बनि चानि कृपायि सू.ति
अद म्य ज़न्म गछि सफलैं बलै०
१०.अशि ज़ल. गो ड दित पाद बो छलै तिम रट. ह्रुदयस सू.ति
लोल.सान करक बो मोर छलै बलै०
११.हंसा' आमुत छय बर तलै मगान आ'र्चर सू.ति
मो.कलावतन य'मि मायायि छ़लै बलै०

ओस कस रूज़ित अदरी बेर   कं'मि निय. प्राटित म्या'ञ पर. पद्म'र
मुरलीधर सुंद छुमा यी खैर   कं'मि निय. प्राटित म्या'ञ पन.पद्म'र

१. थो.कमुत सुदामा घर. यलि आ'व   नेत्रव त्रोवुन अ'शि द'रियाव
यति कुस राजा रोज़ान गैर   कमि०

२. कति छुम घर. वार यो.तको.त आस   फाकै वां'लिंजि गोम तलवास
गाम.च़ कोत म्या'ञ तुलसी वार   कमि०

३. कति गयि पा'द. इम गुल त. गुलज़ार
आंय कति योतनस मोक्त. फँवार
रंग मंदोर्यन ल'ज़ ना ता'र   कमि०

४. आय कर यो.त इस दास दा'सी   शुय म्या'नि गय मा.वन वा'सी
मायि ह़ च़ भार्या द्रायि ना सा'र   कमि०

५. को.त गयि मा'सूम सुन्दर पोश   लोल आम वुछहक रोवुस होश
मूरान गुलि ओस प्राटान दा'र   कमि०

६. ओरुत सुदामा गव परेशान   व्य'ग्वच़य माया ओरस डेशान
द्रायस सुशीला वुथि वन हा'र   कमि०

❖ ❖ ❖

मेव. कनि मो.क्त. वो.थ च दन बागस
नागस प्यठ लो.ग हंस. दरबार।
ज़ल. कनि अमृत नो.न द्राव नागस
बागस मंज़ चाव संत. अट.हार।।
(हंस. दरबार परम. हंस. दरबार)

१. बुद्ध क्या वाति अथ रागस त.त्यागस
वरणि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रुस्त क्या छु ती भु पूज़ि लागस नागस०
२. त्युथ दशहार कर तिथस.य प्रयागस
यथ दह इम्द्रिय छि दह अवतार
का'हिम द्वादशांतस पूज़ि लागस नागस०
३. नाम. रूप कल्पित ज़ोन ह्यथ रागस
अस्ति भाती प्रिये रूप पत. द्राव सार
शर्मन्गी च़'जि मंद. वैरागस नागस०
४. प्रियम. कर्म. फलन.य यम. नियम द्रागस
प्राव.नावि अनुग्रह किय अंबार
तृप्तियि पंपोश फो.लि लल. त्रागस नागस०
५. होश. पोश फो.लि उद्योग. पोश. बागस
दास. भाव किञ आस ख'दमतगांर
'कृष्ण' सेवा कर आत्म. रूप. आगस नागस०

❖❖❖

प्राव केवल्य हा केवलो योग चाने बनि आज़ा'दो।
भोग. सुखा हा निष्कलो य'लि चलन पाप.नि ला'दी।।
१. चोन दूर्यर ह्यक क्व ज़'रित कमि बलै ह्यक. व्यय निशि इथ योग०
छ्यमन. करार गम चानि गली
२. गर्भ. नयन मंज़ फीरि फीरि वुछ म्य लो.कचार यौवन त.पीरि योग०
बांड ब'नि ब'नि कम जाम वलो
३. पय अज़ताम लोभुम न. चोनुय धर्म हीनस म्य ओस कर्म लोनुय

नठ छम वति निशि मा डलो योग०
४. मन दर्पण छुम मा'ल. गोमुत मोहकुय मदिरा छम म्य चोमुत
ज्ञान. गंग ज़ल मल कल. छ्लो योग०
५. नारायण कस गछ़ शरण छोटन किथ. पा'ठि ज़न्म मरण
हे शरणागत वत्सलो ! योग०
६. य'च़ कोल चानि वते द्रासै बुजरुकुय प्य'यनै पासै
बजुरस त्रा'वित वो.ञ म. चलो योग०
७. मन काफूर अन. चानि वेरे रत्न ज्योति फिरवै शेरे
गाल मल 'ठाकुरस' निर्मलो योग०

❖ ❖ ❖

(ग़ज़ल) श्रीमती आरञ माल

१. दौरि दुनिया सोरि आख.र यार छांडुन पननुय
आव डर जा ज़ेरि ज़पीन नेरि तस नो.य य'मि खो.नुय

२. नूर डेंशुन छु न. आसान सूर मलुन ह्युव पानस य।
रहबरस कुन पान गालुन वथ सु हाविय तस कुनुय।।

❖ ❖ ❖

(ग़ज़ल)

ज़ानखै कर जान फिदा'ई यौर वफा'ई केंह छयनो।।
१. अच़ अन्दर लोल. भगस लाग आशक बुलवुलो
तति गढनै खलूति शांही योर०
२. यो दवै करक बादशा'ही तस ज़मीनरस जाय छयो
तो.त छु वातुन तनहा'ई योर०

३. पाक तार.चि यलि तोलनं पाक छु पानै क्या ह.लुय
नरि ज़ंग अ'छि दिन गवा'ही योर०
४. नमरूदन दम दिचा'ई कान त'मि लोय आस्मान
खून तोर. प्यव बर हवाई योर०
५. करि बद छय रोय सिया'ही बार गो.ब छुय कोत तुलक
वुछत. तह.जय बारगा'ही योर०
६. 'उस्मानो' मंग पना'ही तति न बियन ज़लज़लो
तति अरशस थर. चा'ई योर०

❖ ❖ ❖

वुछित गत चा'ञ दैवागत च्य विन दयि नो सोरै लो जो।
म्य अन्दर कर पनुन मन्दिर ब. व्यय पूजा करै लो लो।।

१. ब. चाञे वेरि सों.बरावय अ'छिस किञ रंग. रूपुक रस
कनव किञ शब्द. साजुक मम अ'नित खस्यन भरै लो लो०
२. म्य वुछि वुछि असान छुक दूरि रुज़ित आस्मानन मज़
गुपित छुक दास्तानन मज़ ब. दूर्यर नो ज़रै लो लो०
३. फिज़ा त्रा'वित म्य खनिमति ज़िसि ज़मीनस तल त. पूर.णि छिम
स्यठा देवार लूर.नि छिम च्य रुस्तुय क्या करै लो लो०
४. ब. छुस पोंपूर च्य दीपस पत चटित इम जाम करहै गत
दिहनै जाम. चटनचि वृत्त क्यो.मा ह्युव मा मरै लो लो०
५. म्य निम पंपोश. पादन तल तिमन हुंद बोंबरा सूज़ित
कंडयून प्यठ छुस मरे रुज़ित ब. चाने आसरै लो लो०
६. ज़मीनस जन्मकिस व विम.ति अशिकि दुर्दान. केंह भ'विम.ति
अ'छिन मज छिं र'छित थ'विम. ति तिमै ख्रावे जरै लो लो०

७. इमन जोयन अन्दर यो.दवय छ चाने सहज धर्मुक जल
बठ्यन हुंद छक सम्योमुत मल म्य चावुम आगरै लो लो०
८. पनुन म्य तेज.कुय आगुर इमन ज़चन अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित दु ई कासुम गटे हंदि गाशरै लो लो०

❖ ❖ ❖

अज़ वाति बूज़ुम मोल म्योन कोसम वतन वथरावासा'य।।

१. लछ ज़न डवित संताप ताप अतः करण घर. नावसय
ठाकुर कुटिस मज़ रंग. रुत प्रग आदरुक पा'रावसय०

२. सों.वरित र'सिलि र.ति कर्म. फल मरस खा'सि भ'र्य थावसय
अशि गंग वाञे खोर छ्लस रुमालि गुम. वुथरावसय०

३. तिम पाद हृदयस प्यठ रटित दुख दा'दि ज़न्म.कि भावसय
कोछि क्यत रछुन लोक.चारकुय स्मृत चित्तस अद पावसय०

४. भावुक घन्यर लोलुक सन्यर
नो.व नागरादस सूं तिज़न वा'लिज़ मुचरित हावसय
स्नेह मायि हुद वूजनावसय०

५. गुरू भावनाये सू.ति शे.र नो.मारित खो.रन तल त्रावसय०
घर.बार 'य आसुन वसुन सोरुय पनुन पुशरावसय०

६. गट. प'छि चन्द्र जन नाम. रूप अख अख कला व्य'गलावसै
सिर्यस अन्दर लय प्रावि जून सार्यय बनन त्यछ मावसय०

❖ ❖ ❖

स्मरण पन.ञ दिचा'यनम प्रेमुक निशान. व्य'सिये।
र'छरुन तो.गुम न. रीवुम ओसुम न. बान. व्य'सिये।।

१. पस कालि छुम न द्युतमुत सोन मोखत दान व्य'सिये
अ'नि सारि क्या लभक वोञ तिम मोखत दान व्य'सिये०

२. वां'लिंजि मंज़ थवुन गोछ हावुन थोवुम अथस प्यठ
राह कस छु कोर म्य पानस नुकसान पान. व्य'सिये०

३. हावुन छ राव रावुन चावुक समर छ. ख्रा'मी
गािवान ज़ि छाव. बापत बानन छि टान व्य'सिये०

४. यन सुय निशान रोवुम तन म'च गयस ब. फलवाल
न्युन ह्योन न कैंह ति फेरान छस वान. वान. व्य'सिये०

उत्तर

५. व्यसरुन पनुन वनस क्या वननस ति वार मा छम
वुथ मा सम्यस दोहस थिव्थ गछ कोत शबान व्य'सिये०

६. यछ पछ म.हार व्याखा ह्यत यूर्य वाति कांछ़ाह
तस छा क'मी निशानन भ'र्य भर्य खज़ान. व्य'सिये०

७. डोलान कोहन वनन मंज़ शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़ क'त्याह निशान. व्य'सिये०

८. व्य'सरित ड'लित पथर प्यथ बुध क्या दिमव त'मिस निशि
पुत फेरनुक पकान छा युव ह्युव बहान. व्य'सिये०

९. मानव ज़ि अ'सि ह्यमव पोत छोर्या तर्सुंद मुहब्बत
पैबंद यि आदनुक छा शुर्य कारखान व्य'सिये०

१०. दिल फुटिम.त्यन छु तोषन य'च़ गरि'मत्यन छु.रोशन
गछ़ व'र्यमत्यन सुदामन- प्रिछ गा'यबान व्य'सिये०

११. अंदि प'खि तति छु आसान बोद. ब्रोर सूर दासुन
बोज़ान छु माय ला'गित लोलकि तरान. व्य'सिये०

❖ ❖ ❖

तरवुन छु करनोव हक दित वनन
कांह मा. स. त'रिव अपोर।
पत. तार बन्यव न. आलुस म. क'रिव
उद्यम. त'रिव अपोर।।

१. करनावि तार छुन. घरि घरि बनन
वुज़क्यन छय बेला जान
निश्तुर त. यि सात म. राव.र.विव
वज़िव त. त. त'रिव अपोर पत०
२. घरवेट सोंबरान छिव मार. गा'मति
छ़'यनित थ'कित पेमति
घर. रोज़ि य'तिय कथ क्युत भ'रिव
छ'रिय त'रिव अपोर पत०
३. अन अन वननस कन मो था'विव

गो.बराविव क्याज़ि पान
गो.ब बोर ह्यत वति प्यठ क्या क'रिव
लो.तिय त'रिव अपोर पत०

४. चूर युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मुक छु अटल नियम
सो.न रुफ छा'रित गोड. क'र्य म.ग'रिव
संतोष त'रिव अपोर पत०

५. प्रछ. गा'र य'लि लगि बर दित ख्यनस
इसबात सु.य गयि चूर
थरि थरि मा हरद. थ.र ज़न ह'रिव
औधार्य त'रिव अपोर पत०

६. प'ज़ि पान होव ऱ्षि रस्त्यन ऋषण
पशन ति भ'रक प्रय
अथ ऋषि धर्मस प्यठ तोहि ति ध'रिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर पत०

७. ऱ्ति भाव था'विव ऱ्तिय ब'निव
ऱ्तिय क'रिव कार
यी य'ति क'रिव तिय तति सो.रिव
सत्कर्म. त'रिव अपोर पत०

८. अपारि बदलै विद्या छय पर.ज
योग.च छय तत बोल चाल
प'रिवै य'ति श्री गीता प'रिव
योगै त'रिव अपोर पत०

६. अपारि ब्रह्मय छु छ़ारान त. गारान

य'च छुस ज़ि तुहुंद लोल
य'ति क्या छु प्रावन ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेम त'रिव अपोर पत०

१०. वाव तस क्या करि तारक मन्त्र
यस आसि दय. सुँद नाव
पानै छु करना'वि चिन्ता म. भ'रिव
ड'रिथ म. त'रिव अपोर पत०

❖❖❖

गज़ल

यार. संदे दांदि दोदमुन दिल बहारस क्या करे।
वाव योदवै सोंत कालुक आसि नारस क्या करै।।

१. कांसि प्रारान दारि प्यठ युस वांसि हारे धारि ओंश
आवशारुक तस हवस क्या? शालमारस क्या करे

२. कां'सि पलजुन कांसि हुंद ज़ेवर बनुन यस योंछ न. ला'नि
सो.न बना;तिवन संगि पारस तस विचारस क्या करे०

३. होश ड'जमच़ जोश व'खमच़ पोश. गहनस तोषि क्या
रोश यस चोल ओश त्रा'वित गोश्वारस क्या करे०

४. कालिदासस तालि क'ञ पत कलि वोनमुत गाटल्यव
तालि यन युस लोग ज़ालस गाटजारस क्या करे०

५. लोल मस ज़ाल्यै त. गाल्यम यस बुडित मा'लुम गव

भीम नशके त्रविहे मस चोन | खुमारस क्या करे०
+
६. रंग हा'वित भ्रम दिवान ओस | कहवचन खोट म्योन सो'न
अ'मि कोडुस अदर्युम खोचर नोन | लोल नारस क्या करे०

७. ड;लि निम. क्या बाल यासरस | ओर त. शुद्ध पाथ्य न. दिल
छ्यनि मतिस यत दागदारस | नाबकारस क्या करे०

८. ब्रोठ छुय चो.र क्रूठ मंज़िल | गा'फिलो बस कर म. चेर
यस म'तिस माघस जिगर | शेहल्यव न. हारस क्या करे०

❖❖❖

कोरनम यी टाठि त. क्याह वनस।
थोवनम न. बाकय केहति मारनस।।
सोय रुम छम मनकिस आईनस।
यि कोर न. कां'सि ति दुशमनस।।
सो.रुम सु लाल. रुख मनस।
जलाव लो.ग कजलि वनस।।
फोरुम सु नार खरमनस।
लो.गुस न. केहति ज्येठनस।।
दिलस ह्यो.तुन त. जिगर तत्यव।
शोऱ गव जि नार हा।।

मा० ज़िंदा कौल

उों नमो भवान्यै।।

श्री शारिका लीला लहरी

(सप्तम-तरंग)

धर्मुक धैर कोर खति हा'रवनस.य
रंग.रंग. पोशन क'र्य अंबार।
मादलि तुलसियि आरवलि व्यनसय।।
नारायणस.य छु जय जय कार।।

१. घरि द्राय भावनायि सू.ति दर्शनस.य
चाय पर्वत राजनुय दरबार-
आय चक्रेश्वरस.य प्रदक्षणस.य नारा०
२. समेरू पर्वत. कोह ख'ति सो नस.य
सिद्ध पीठ सार्यव.य प्रोव अधिकार
नाश गव दारिद्रस अ'किस क्षणस.य नारा०
३. जय जय छु गोकुलस त. बिंद्राबनस.य
जय जय छु नोन द्राव कृष्ण अवतार
जय जय छु गोपियन त. गोवर्धनस.य नारा०
४. जय जय छु वसुदेवनिस च्य'ड ह्यनस.य
जय जय छु देवकियि यमि चोल बार
जय जय छु दुख. अंद बंद रोज़नस.य नारा०
५. जय जय छु भलभद्रस त. अर्ज़नस.य
भक्ति मंज़ इम द्राय सरदार
जय जय छु तत विश्वरूप दर्शनस.य नारा०
६. जय जय छु दशरथ राज़निस गुणस.य

माजि कौशल्यायि बार बार
जय जय छु अजोद्यायि रामजुव ज्यनस.य नारा०
७. जय जय छु राम चन्द्रसत. लक्ष्मणस.य
सीता मातायि जय जय कार
जय जय छु भरतस त. शत्रुघ्नस य नारा०
८. जय जय छु वाव. लोकपाल नन्दनस.य
य'मि गोंड लचि सू.ति लंकायि नार
जय जय छु सुग्रीवस विभीषणस.य नारा०
९. मन म्योन पत. लारि मधुसूदनस.य
काम. क्रोध कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह. रावणस.य नारा०
१०. कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनस.य
तार दियि करि पचालस पार
सतचिय स्थित थावि शुद्ध चित्त मनस.य नारा०
११. वन.वुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनस.य
थवनुय तस प्यठ ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स त. निर्धनस.य नारा०
१२. हीत. अकि मायातीत निगुर्णस.य
महामायायि सू.ति विवाकार
श्वेत पीत वर्ण सोर.न टोठ रातस दिनस.य नारा०
१३. वनवुन यि केंछ़ाह ओस प्रत वनस.य
ती वातानोव गोपियव गुपकार
वार. आव शंकराचार उलसनस.य नारा०
१४. अनुग्रह चोन मंज़ अन्नस.य धनसय
वांसि ताञ पोशनाव होश व्यवहार
कृष्णस' तोषि मज पोश वर्षणस.य नारा०

❖ ❖ ❖

१. कमल चरण रटोय शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय
स्तुता परन परन शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

२. चय छुक भक्तन वरण शरण च्य आये
चय छुक दुखन हरण शरण च्य आये
च्यय मोक्ष दातस मोक्षय मंगव करव०

३. बडयूव योगव सू.ति सत् संगव करव०
उत्तम पदव त. सुन्दर भंगव करव०
अधर्मियन स.तिय जंगव करव०
संसार. समन्दरस तरव करव०
अज़ ताम तिय वोन महा जनव करव०
तम्युक निर्णय अ'सि क्या वनव करव०
'कृष्णन' सत सोर त. सत बोज़ कनव करव०
मोकलाव रटि मायि पनन्यव घरव करव०

❖❖❖

संन्यास बे परवाय मस्तानै, पा'थै हो लगै म्यानि जानानै
१. क्रवन अथि ढम श्यछि सोज़नै पोज़ बोज़ डंजि छमन रोज़न दिल रोज़खै त. बोज़क्क लोल अफसानै ज्यूठ नो वनै म्यानि जानानै०

२. लूख क्याज़ि कन तलके दुदीनै ओरुक योर म्योन वननै हाल व्याक मा छ व्य'य सुंद दोद ज़नानै पान. हो वनै म्यानि जाननै०

३. मेहन च्यति छिया मन मेंहनै चान्ि खेत. सुंदरातिं उपद्यव कहृ
च्यति छूयना सु वील. ज़र बोज़नै आर इयतौ म्यानि जानानै०

४. अंदरिमि राग अग्न धूज्र प्रज़लानै लोक त्याग छ्य न्यबर मोलमुतसूर
ओवर तल यि कुम्मल छ्य क्रेठ ईवानै सूर गोसाञि म्यानि जानानै०

५. यंबरज़ल चश्मन रूद अरमानै शबनम् रेस्त कुनि वुछहोक ज़ंह
सोंबलस कस छि तिम पाद पूज़नै पूज़ हो करे म्यानि जानानै०

६. घरि घरि सोंरहक देव सुंद्र द्यानै क्याजि रटहक गोफ त. बाल
मन म्योन कर्यज़िहे खल्वत खान चूरि हो थवत म्यानि जानानै०

७. दूरि रूज़ित दोल लोयथ कनै छिह लगित ब्ययि ब्यूठ ज़ख्मन क्रेर
यति योर स्योद कर तीरि मिजगानै सीन. धरयो म्यानि जानानै०

८. रग रूप प्रतअंग छुक खेवानै देवता स्वभावस वातिहिय न. कहृ
हग मंग नय आसहक रेशानै आशु तोष हा म्यानि जानानै०

९. मन क्याज़ि योर कुन छुय न.नरमानै कोमल तनि चाञि पश्मोन पोट
फर्यशर मोख छिन नख.ठहरानै नाज़ुक बदन म्यानि जानान०

१०. यूत नय च आसहक शेर नोमरानै कद चोन ओस खास स्वर्गच थ'र
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानै अभिमान रस्ति म्यानि जानानै०

११. शानन प्यठ केश छुय पैरेशानै तालि प्यठ जट. सर्पाकार
कल बंबूर गण ज़न छ नांपानै अबर मोय म्यानि जानानै०

१२. कॅंग तेहजव छु बोड प्रेवमुत शानै कार्तिक मास पूर्ण चन्द्रस मज़ निथ कुछ्वनि सु खाल कॅंह भाग्यवानै पूर्ण चन्द्रम म्यानि जानानैo

१३. ज़विलि वोज़लि कुठ कुनि २ आनै असननचि त्रायियलि कुमलानछिय दा'न पोश बर्गन छि मंद छवानै कुठ कुमलाव म्यानि जानानैo

१४. मा'सूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानै परम राग रंग कति प्रज़लान छिय नम चा'नि छा अक़ीक़ किन मिरजानै आदनय सुँदर म्यानि जानानैo

१५. यथ हुस्नस न. ज़ेपरुक एहसान खा'लिस सोनस मूल मायि त क्या युथ रूप छा भूषणस ओरुज़मानै साद शाहज़ाद म्यानि जानानैo

१६. इम चानि खतुखाल याद पावानें दूरिरुक दोद ताम म'शरान छुस दोद बलि यलि कैथ आसि वातानै दा'दिस वात म्यानि जानानैo

"स्वo मास्टर ज़िंदा कौल"

❖ ❖ ❖

१. दान मनसा'वित अथ धारनोवथस
अथ पत नित म'चरोवथस
य'च कोर.थम अवमान मदनो। ईछा स जान

२. रस रस कमि ताम वति पकनोवथस
कुन ज़ोन वति प्यठ त्रोवथस
अनजान-सरिगरदान मार.मति। ईछा स जान

३. मन वारि म्याञि आश पोश रुवनावित
संग दित बार. फोलनावित
पानै कोरथस फान मस्ताना। ईछा स जान

दिल फोलि दर्शन चाने   सूरमति सर्फ गोसाञे
दिमयो गोड अशि वाञे   सूरमति सफे गोसाञे

१.शिव छुक कैलास वा'सी   शक्ती छय चा'ञ दां'सी
ततिं छय वज़ान शीन शाञे   सुर०

२.जटि छुय च.'द्रम. लोमान   हटि छुय वासुक शोमान
गौरी शंकर. साने सूर०

३.मृग. शाला छुक व लिथ.य   पानस भस्मा म.लिथ.य
खुर कास असि डयक.लाने   सूर०

४.जटि छुक गंगा त्रावान   पापव निश. मोकलावान
यमराज़ भय चोन माने   सूर०

५.छुय त्रिशूल काल. संहा'री   पान. छुक कल्याण का'री
चानि क्रोध ज़ग मा फाने   सूर०

६.नन्केश्वर चोन वाहन   पूर्ण कर मन. कामन
कुस न चोन महिमा ज़ाने   सूर०

७.रुद्र गण छिय चा'नि संगी   सा'रिय चरसी बंगी
कामदेव दो.द च़खि चाञे   सूर०

८.आ'रित छिय आशि छारान   कोन.छुक भवसर तारान
प्रारान तन मा प्राने   सूर०

९.भोलानाथ. सोन संकट   आवागमनुक च़य च़ठ
इत गछ़. रोज़ि बे माने   सूर०

– श्री प्रेमनाथ जी साबनू 'प्रेमी'

ओम् पर.वुन हंस ताजदार, कमि वन.कुय जानावार।

१.ज़ाल. लगिना सुय अनका माल. गंडहस छुम तमन्ना
नाल. रटहन सुय बाल यार कमि०

२.कोछ़ ब. दिमयो हा कावो गछत वनतम दियि दर्शन
वछि वां लिंजि भावस असरार कमि०

३.पोशनूलव पोर यि हंसो कुकिल बोलान गोविंद.गो
हर मुख.छा किन.हरिद्वार कमि०

४.प्यठ गोशन र'टनम जाय का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वोंद हंदर्यस त. रोश च़लियार कमि०

५.खत ब. लेखस हटिकै रत. ज़ा'विलि खत सू.ति शोभिदार
इयि नत. छुस ब. दा'वादार कमि०

६.बव'लि अनतने दूरि मा का'लि का'लि जिगरस गा'म परगा'लि
ना'लि जामे तस छि जरकार कमि०

७.हंस पख.वय पत. लारोस प्रारि प्रारोस डंडक वन
दोह दरि लगि सोरि लोकचार कमि०

८.दरद. सोज़क संतूर साज़ सासि परद. ग्यवि कस्तूर राग
व.ति तिय तिय वनान कोल.तार कमि०

९.'भास्कर' चेन त सासन मंज़ रुम रुम खास छु भासा'नी
ललवुन छुम सु सिरि असरार कमि०

ब्यल ता'य मादल व्यन. गुलाब पंपोश. दस्ता'य।
पूज़ायि लागस परम. शिवस त. शिवनाथस्ता'य।।

१. जटा मुकटा. प्यठ गंगा वसान छस ता'य
देवियि त. देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्ता'य
भक्ति भावुक जय जयकार आ'सिन तस ना'य पू०

२. दया सागर. लोल विज़यायि कोरनस मस्ता'य
ह्रा पोंश मते ह्रोश ड'लिम.ति थव ध्यान ह्यस ता'य
असार संसार छ'लरावान सोर रोज़ि कस ता'य पू०

३. पंपोश पादव सूति इतम अस्ता'य अस्ता'य
चरणन व वंदे जूव जान ह्यथ वांलिंज वस ता'य
राग चानि सू.तिन पोञ वुज़्यम नाग.रादस ता.य पू०

४. पा'र्य पा'र्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस ता'य
दर्शन चान्युक छुम य'च लोल सू.ति हावस ता'य
टोठतम सदाशिव ज़गत ईश्वर छुस बेकस ता'य पू०

५. अमर नाथस नीलकंठस कल. वंदस ता'य
विचा़र सू तिन "कृष्णस" प्यठ आर इयिनस ता'य
यछि पछि सू तिन गछि अर्पण शिव भावस ता'य पू०

कीर्तन : जयति शिवा शिव जय जय जानकी राम।
जय जय लक्ष्मीनारायण जय जय राधे श्याम।।

(ग़ज़ल)

शरीर ज़ोलन अ'मि मदनवारन. बे आरस आर नो छुये।।

१. प्राण ज़ोलन पवन.कि नारन शशि कलि हुंद म्य नार छुये
समाज कोरन म्य ओंकारन बे०

२. ल.यि लोसं म्य तोस चा़रन रुम चा़'र्यमस म्य मोयि मोये
दम.किय पन ज़न छस खारन बे०

३. बडि मनसर.यार छस ब.गारन माह ईश्वर अथ मज़ छुये
काम क्रोध लोभ मोह छस ब. थारन बे०

४. वुछ्त मार कू ति क'र्य अहंकारन नार गोंडनक हा मोयि मोये
फान कोरनस अनफासकि नारन बे०

५. बदन ज़ोलनं अ'मि मदन वारन हये व्य'सि यार इयम नाये
विचा़र मनसर. गारहोन विचा़रन बे०

६. शास्त्र बल छस्या गारन ना'लि 'रा'हिमस' शास्त्र छये
ताज बरसर शास्त्र दीन दारन बे०

❖ ❖ ❖

सतज़न वन मन कर कैलास.य बस्तियि मंज़ वनवास.य रोज़।।

१. चि़त्त किञ भस्म मल वल अतलास.य
साधु प्रकृच सन्यास.य रोज़
ओं. शिव शंभू कर अभ्यास य बस्तियि०

२. विषय त्यागुक धर माघ मास.य
सत्संगकुय उपवास.य कर
आत्म तीर्थ मन नाव मोह.मस कास.य बस्तियि०

३. पान प्रज़ना'वित पानय म. आस.य
सर्व संकल्पन ग्रास.य कर
तल. प्यंट. त्रा'वित त्राव तलवास.य बस्तियि०

४. महामाया ह्यत रछवुन दास.य
शिवनाथ हृदयावास.य छुय
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यास.य बस्तियि०

५. श्री कृष्ण महाराजन रूयूल रास.य
गोपियि शुराह सास.य ह्यथ
बाल. ब्रह्मचा'री तोति नाव द्रास.य बस्तियि०

६. 'कृष्ण' अ'दरिमि त्याग. मल सूर सास,य
न्य'बरिमि राग. उल्लास.य कर
शुकदेवस गव यी व'नित व्यास.य बस्तियि०

❖ ❖ ❖

कर सन. कुनुय बनि सू.ति तस जानानस.य जानानस.य।
तन लोल. नारन ज़ा'जनम अनज़ानस.य अनज़ानस.य।

१. मयकिस दूकानस व'थि छि बर पैमान भ'र्य भ'र्य क्या ज़बर
चन रुस्त ब. छुस आ'सित अंदर खुमखानस.य खुमखानस य०

२. निश आ'सिथ.य दूर्यर म्य प्योम रुसिस न. पय नाफुक नन्योग
छांडान सुगंध दिल तारि गोम नादानस.य नादानस.य०

३. गोस नज़ि पयस मो.कंजारकिस कोचस ब. गोस व्यवहारकिस
सों.बरनि लो.गुस संसारकिस समानस.य समानस.य०

४. देव आ'सिथय ज़ीव नाव प्योम सो.न आ'सिथय म्याज़ि त्राम गोम
मो.क्तस म्य फोतय खाम गोम दुरदानस.य दुरदानस.य०

५.अक्रेत अमृत कुय सु मस चन. सू.ति ब. बनहा एक रस
दु.य रोजिहे कति म्य त. तस कुनि आनस.य कुनि आनस.य०

६.य'च़ काल कुय तस निश जुदा गोमुत ब. छुस मेलि ना सना
तस रुस्त म्य आराम ज़रा कर देवानस.य देवानस.य०

७. यत दा'दिस.य गछि वैख वनुन तस बावहा बो सिर पनुन
नत. राज़ि दिल क्या छुम वनुन बेगानस.य बेगानस.य०

८. 'नीलकंठ' प्रेम.चि वति च़.नेर वातक मुकामस पुत मत्र फेर
प्रावक च़. अद. केंह लगिन चे़र निर्वाणस.य निर्वाणस.य०

❖ ❖ ❖

भ्रम छु संसार शम त. जीवो दम म. कर कांह खा'लिये।
करत. शम दम सो.रत सोऽहं आसि गछ़नुय का'लिये।।

१.इछ़ छ्य शोभान ओवरस य मज़ वुज़मला हाय त्युथ छु आय
आयि गयि कू.ति काल हारन शीन ज़न तिम ग.लिये०

२.बाज़िगर सं.ज़य यि बा'ज़्याह सोर सखार ज़ानतन
मय च्य चोमुत मोहकुय छुय छय च्य कमिचिय चा'लिये०

३.रूदि ना य'ति राज़ ता'य रक रूदि ना य'ति शूरवीर
अथ मूरान ख्यत त. अफसोस कु.त गयि धन. वालिये०

४.'नीलकंठो' बन शरण सतूगुरू चरणन मन. किञ
युन त. गछनुय तस छु माया दाम यस गव ना'लिये०

❖❖❖

इतना तो कर ले स्वामी जब प्राण तन से निकलें।
गोविंद नाम लेकर फिर प्राण तन से निकलें।।

१.श्री गंगा जी का तट हो या जमुना जी का बट हो
और सांवरा निकट हो मेरे०

२.श्री बिंदरावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसी दल हो
विष्णु चरण का जल हो मेरे०

३.सांवरा सन्मुख खड़ा हो बंसी का स्वर भरा हो
तिरछा चरण धरा हो मेरे०

४.सिर सोहना मुकट हो मुखड़े पै काली लट हो
यह ही ध्यान मेरे घट हो मेरे०

५.मुझ 'दास' की इस अरज़ी- को मानना न फरज़ी
आगे है तेरी मरजी मेरे०

ध्यान का वैदा करके सजन तूने
ध्यान लगाना छोड़ दिया।

१. सीस तले पग ऊपर थे
जब माल के पेट में लेट रहा
तब ईश्वर से इकरार किया
तूने भूल के वह सब तोड़ दिया ध्यान०

२. देख लुभाय गया जग की
रचना सब सुन्दर साज बनी
उस सरजनहार की सार नहीं
तूने भोगन में मन जोड़ दिया ध्यान०

३. घर काजन बींच फसाय रहा
दिन रात न मौत की याद रही
उमरा सब बीतत जाय चली
तूने क्यों प्रभु से मुख मोड़ दिया ध्यान०

४. बार ही बार फिरा जग भीतर
जीवन की सब जूनन में
'ब्रह्मानन्द' भजा भगवंत नहीं
भव सागर में सिर बोड दिया ध्यान०

❖❖❖

कीर्तन- देवी चरण चा'निय भक्त सो.रन छिय।
इमोय शरण करोय नमो नमस्ते।।

१. संकट हरण कवच चा'निय परन छिय
कमल चरण चा'निय भक्त.नि वरन छिय
प्रेयम मरन यत भव सरस तरन छिय इमोय०

२. यति पूर्य त्रावक तत जायि नेत्र जरन छिय
मंगल रूपी ध्यानस चा'निस सो.रन छिय
'कृष्णस' सु.ति ह्यत स्तुता चा'ञय परन छिय इमोय०

❖ ❖ ❖

त्रिज़गत नाथ. परम. आनन्दै सत्चित् रूप. च्यय पान वंदै।

१. कुस व'नित ह्यकि महिमां चोनुय क'मि चोनुय प्रभाव ज़ोनुय
हे निरञ्जन. हे निद्वन्दै सत्०

२. चानि आसर. हरि हरै हे सत्य रूप. च्यय पत ब. मरै
छुस ब. लज्जित स्यठा शरमंदै सत्०

३. कुस च्य'य ह्युव बनि परम. मित्र बंध बांधव सा'रिय छि शत्रुय
निर्मल. निष्फल. गोविंदै सत्०

४. भव.सरस लो.भुम न. तार.य गोलुम च्यय पत लो.कचार.य
मोक्लावतम मोह.नि फेंदै सत्०

५. ऋषि बालुक छुस छमन. चाहत मनस.य म्य ग'छम धन संपत
छम म्य चाह जानन.च ज्ञान. इंदै सत्०

६. संपदा आपदा ज्ञान. र'स्तिस आपदा संपदा ज्ञान. स'स्तिस
ज्ञान. हीलस बखना'न अंधै सत्०

७. रचना ज़गत.च स्वप्न माया सत बननिय पनञी छय छ़ाया
ज्ञान निश मत थवतं म्य अंदै सत्०

८. 'ठाकुरम' चा'ञ अभेद भक्ती यलि बन्यस सो.य गयि मुक्ती
नत. क्या करि ख'ली चंदै सत०

गा'फ़िल म. बन पायस प्यतो. तस जानि जानस बो.न दितो।

१. दो.र च्यय पनुन मो.र ज़ोनथुय रज़ि गो.य सरुफ पोज़ मोनथुय
सत्संग गंगि अमृत च्यतो तस०

२. दिल साफ थवतो आईने मल गालतस तुलतस च़. खय
छोटि पा'ठिय कथ मटि च़य ह्यतो तस०

३. दिलन.य सहल कोर मुश्किलय ब्रेठयोक त. ज़ेठयोय मंज़िलय
स्यज़ि वति पकनस प्यठ इतो तस०

४. यलि च़्यय दिलसय संकल्प करक चलनय च्य शक त्रावक च फ़क्र
शुद्ध सात्वकी भोजन ख्यतो तस०

५. ज़ान जानि जान छुय पान पनुन छुयनो च्य केंह छांडित अनुन
सत्संग द्वार वार. पय ह्यतो तस०

६. वननुय छु केंह बननुय छु केंह 'टाकुर' पान पननुय छे केंह
गुरू मुख सर कर वर दितो तस०

❖❖❖

१. हे प्रभु ! अज्ञान का'सित योग दिम विज्ञान दिम।
अंग हीनस दिम म्य काया मुर्द जिस्मस जान दिम।।

२. शक्ति र'स्तिस दिम म्य शक्ती भक्ति र'स्तिस दिम म्य भक्ती
एक भक्तिस दो.शर्व दिम ई म्य धर्मस दान दिम०

३. पकनस क्युत ओन त. रोन छुस भक्ति क्युत छुस न्यथ नोन
ज्ञान वाल्यन योगियन क्युत गिंदनुक सामान दिम० हे०

४. हीन छुस विद्यायि अंदर दीन छुस श्रद्धायि मंज़
हान छम प्रत कुनि कर्म.चि सत् ज़नन मज़ मान दिम हे०

५. ब्रोंठ कुन पानस अ'नित श्रवण करुम व्याख्यान दिम
लूक युथ मोहित गछन त्युथ मुखस निर्वाण दिम हे०

६. क्रम गछ़न अद ईर. खस हिवि होशकुय तूफान दिम
गोफ शाल खोचन म्य पान सहुसुंद ह्युव त्राण दिम हे०

७ जय जय श्री रामच.'न्द्रस त'मि सुंदुय बर दान दिम
क्षय गछ्यूम इन्द्रिय शुत्रन वीर धर्मुक कान दिम हे०

८. यसि युक्तियि बनि मुक्ती तमिकुय विज्ञान दिम
दित मनोज़य वासना क्षय सत स्वरूपचि ज़ान दिम हे०

९. सर्व मंगल परम सुख दिम हर्ष दिम कल्यान दिम
अंत कालस मज़ ख्यालस सत् स्वरूपुक ध्यान दिम हे०

१०.बाग दिम बंगाल दिम हमाम दिम डालान दिम
रायि रोस्तुय इम बनन तिम ज़ायि आलीशान दिम हे०

११.जी.तुक भ्रम चलन बापत पानसय ह्यूव पान दिम
ध्यान 'कृष्णस योग ह्यत दिम भोग अमि यमि सान दिम हे०

१. बनुन आज़ाद ज़ि यक निर्णय
करुन गछि पा'नि पानस जय।
क'रित भक्ती च्य मुक्ती छय
करुन गछि पा'नि पानस जय।।

२. ब हर सो वुछ तसुन्दुय रूप
विवेक.य नोम प्रज़लाव धूप
त'मिस रुस्त वुछ छय मा कांह शय करुन०

३. चित्त.य नोम शीश युस छुय चोन
विद्वानव ज्ञान वानव ज़ोन
करुन निर्मल त. कासुस खय करुन०

४. चित्तम गुर वार पकनावुन
द'छिनि खोव.र्य म. वुछिनावुन
विचार.कि कोच त्रावुस हय करुन०

५. सिलाह सामान युद्ध वेष गंड
दिवान गछ सर्व विषयन दंड
सो गयि निष्काम कर्म.चि क्रय करुन०

६. प्रमाद आलस्य पथर त्रा'वित
उद्योग कि जाम. पा'रा'वित
च़ कर संकल्प चूरस क्षय करुन०

७. रटुन मोह. राज दिस गर्दन
छु दुर्योधन च़. वन अर्ज़न

ननक बहादुर बनक निर्भय करुन०

८. श'त्रु गालित च़ मित्रन मंज़
क'रि संयोग. हर्षुक संज़
लभक विश्राम स्यद्ध गव तय करुन०

९. छु वथरित फश त हर्षुक प्रंय
ख'सित संयोग न्य'न्दरे शोंग
भ'रित खास्यन छु आनन्द मय करुन०

१०. यि जानुन छुय स्यठाह मुश्किल
यि गव संयोगकुय मंज़िल
वि गव निर्वाण थानुक पय करुन०

११. रू़टुन मन बुद्ध चित्तस कुन गछ
बत्र सोऽहं सो अंदर कुन अछ
अचे़तस सू.ति सुचत करन करुन०

१२. सो.रुन सत् चित्त आनन्दय
लभक त्यलि परम. अरनन्दय
स्व आनन्द तत अंदर गछि लय करुन०

१३. अगर ज़ानक च़. पननुय पान
करुस अर्पण च़. मन बुद्ध प्राण
पन.ञ मर पा'नि पानस प्रय करुन०

१४. हतो 'विष्णो' म. गछ दिलगीर
पूर्व कर्मुक यि छुय तासीर
पनञ कर बुद्ध टोठिय दय करुन०

१. देहकिस द्वारस ल.यि त्रो पराव.ञि
मोह. निशि चि़त्त छुय प्रावुन हौ
बावस मंज़बाग चोंग संदारुन
सत् विचा़रुन सोऽहं सो।। सत्०

२. मनचे पथ्वियि गाश ह्यत. सारुन
शशिकलि प्रभात फो.लवुन ह्युव
द्वादशांत मंज़ चि़त्त सिर्यि गछ़ि खारुन सत्०

३. गुरू शब्द निरोध किञ. हां'गिञि हारुन
यछि वोंद पांछ़ि सिंधि साबुन ह्युव
पुक्तकार मोक्त समंदर गछि खारन सत्०

४. प्राणस त. पवनस मन मिलनावुन
ध्यान धारणायि किञ धारुन ह्यव
तिम योग ज्योति रूप ब्रह्म विस्तारुन सत्०

५. ज़ाग्रत त्रा'वित स्वप्न प्रकटावुन
सुषुप्ति मंज़ सुख' प्रावुन ह्यव
तुर्यायि सू.ति चि़त्त लयि संदारुन सत्०

६. पद्यव रुस्न मद होस्त विस्तार तारुन
शमशेरि धारि प'यठ लारुन ह्युव
पख उपज़ावित वुफि गछि तारुन सत्०

७. दम ह्यथ दमनस मन. सो.नुर गारुन

देह मायायि त्राम कारुन ह्युव
ज्ञान सोन. चित्त कहवचि गछ़ि खारुन सत्०

८. 'चन्द्रो' अन्दरी वाव ह्यत तारुन
ओवर तल सिर्यि प्रकटावुन ह्यव
अंधकार च़'लित गटि गाश ह्यक सारुन सत्०

❖ ❖ ❖

१. जाफ.र्ग पोशस छु लक्ष्मी अंग ता'य।
सो.न सुन्द रंग ता'य पूज़ायि लाग।।

२. सात्य देव लक्ष्मी नारायण ता'य
सर्व देव. ह्यथ कासिय दुर्गत
पोश पूज कर तस अन्न धन मंग ता'य सोन०

३. मादलि हियि पंपोशन ढेर कर
तुलसी छावि छा'वि शेरतस पान
सुन्दर ड्यूकसय ट्योक लाग कोंग ता'य सोन०

४. सुय दियि मोक्ष आय अन्न धन द्वार
धारणा द्यान ज्ञान योग विचार
वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग ता'य सोन०

५. सत्पुरुषन निश ह्यछ करुन भक्ति भाव
तिहद्यन पादन तल पान त्राव
पान थव दास भाव तिम बरहंग ता'य सोन०

६. साध छुय पूज़नीय तसुन्दुय मन छु सेर
मुश्का ह्यत चरण कमलन नेर
आ'ल मान राधा कृष्ण जान रोंग ता'य सोन०

७. यूत ज़ानत त्यूत पूज़ि मंज़ लीन बन
भक्ति भावस मंज़ आधीन बन
सुय छुय रुत सात सो.य रच़ ज़ंग ता'य सोन०

८. सोय दया मंगतस भक्ति भवस सान
योस कासिय रोग देह अभिमान
व्यवहारन छुक ओनमुत टंग ता'य सोन०

९. ज्ञान कुलिसय छिय शम दम लग ता'य
शान्ती मूल मोक्ष त्युहरुय छुस
ख्यत भक्ति भाव रस भ'र्यथय टंग ता'य सोन०

१०. ब्रह्मांड पान ज़ान वार. सैरस नेर
मार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर
ज़ोर. मुचराव चित्त तोरगस ढंग ता'व सोन०

११. अज्ञान. गटि मंज़ प्रजलाव दीपय
शंकर 'कृष्णस' एक रूपय छुय
यी वनान साध संत क'रित सत्संग ता'य सोन०

❖❖❖

श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न' मंज़ केंह श्लोक।।

१. रस पूर्ण परम सदा शिवह। सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

२. दीन चा'नी नव निध अष्ट सिद्धह जीवन हंदि करुणा निधह
गलि गलि अमृत इमव च्यवह सत्०

३. कुंभज भजना चा'ञ करह गागरि मंज़ इतम सागरह
ज़्यव दिम तिछ़ युथ चानि गीत ग्यवह सत्०

४. छ्यूञमच़ सो आशव पाशव सान आशो मटि छुय पान दपान
हे शिव ! थ'वमै म्य आशवै सत्०

५. पानस पानै छु मेलनुय गिंदुना छ गिंदुन त. गेलनुय
सोन नेरि नार मंज गलि जुवह सत्०

६. देह दृष्ट गलि च़लि अभिमान अद बनि सत् स्वरूप ज्ञान
कृष्णस युथ ज़ि मेलि उद्धवह सत्०

७. युस इछ़ि सुय सुय तस इछ़े गछ़ि यस सुय सुय तस गछ़
इछ़ि पछ़ि त'मिसय प्रारवह सत्०

८. लोलय छु ओर योर मुलवनुय लोलय छु ओर योर ललवुनय
लोल सू.ति सुय लोल ललवह सत्०

९. केंह छुन. लोल रुस्त आसवुन खोलय छु सार व्याध कासवुन
लोलके गाश गट कासवह सत्०

१०. लोल बोज़ बोल वोञ बोवनै लोलय छ च़ोदाह भवनय
शोलवुन छ लोरुय लोलवह सत्०

११. लोल सू.ति उलसन आयि ज़ग लोल सू.ति छ्म भ'रित पय ता'य रग
लोल परमानन्द प्राववह सत्०

१२. 'परमानन्द' बोज़ दय गत वो.थ त्राव सा'र्य मत मो च़मत
कथ बोज़ नत. क्या यि क्रव क्रवह सत्०

१. यस छ हटि वासुक तस छ जटि पोञ
गो. सोञ हा'य गो.सोञ हा'य गो सोञ हा य गो. सोञ।।
२. युस देव सर्व देवन हुंद छु आद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद
यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हर मुख बर तल लायोस नाद
पादव त'लि छुस पकान सिंघ वोञ नोसोञ०
३. युस थ्यकनुय छु देवियन त. देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसवुन छु मंज़ जीवन
प्राण धा'रियन क्युत छु संजीवन
सुय नंग नोन च्योन दियि गंग वोञ नोसोञ०
४. पूर्णायि सोस्ता छु नूर भ'रिथय
ब्रह्मांडन पालना करिथय
सुख मुख सू.ति छुय दुख ह'रिथय
वर-अभ्य सू.तिन छुय व'रिथय
य'मि सू.ति पानस न्युव सो.दि वोञ नोसोञ०
५. जन्मन हंज़ व्या'ध ज़ालवुन छुय
ज़्यन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि संदि खोत पालवुन छुय
साञि कर्म भूतरा'च वालवुन छुय
आत्म बोधुक रूद शांतियि शोञ नोसोञ०
६. प्रेम मस चावि म'शिरावि हन हन
सत भावि नित था'वि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ हावि जोतन तन
'कृष्णस' प्यठ त्रावि शांतियि शोञ नोसोञ०

१.श्री निराकारै त्रिभुवन सारै प्रारै पनने यारै बल।
भस्मा धारै छम चा'ञ लादन साधन प्यमयो पादन तल।

२.लमथो जामन रटयो दामन शिवनाथ छम चा'ञ मन कामन
त्रिज़गत्पालै इत सानि सालै चावतं प्यालै अमृत ज़ल०

३.त्रिभुवन सारो हनि हनि मंज़ छुक मायायि सू.ति छुंकन इवान द्रेंठ
सत्चित्त आनन्द गोविद केवल जाय चा'ञ हृदयुक पंपोश डल०

४.मनकिस बागस फुलया द्राये रछ्व.नि लछ.नावि अछ्पोश छाव
शोक चानि प्रेमुक बुलबुल छु नालान बोलान लोल.नै दिदरित. जल०

५.हे 'कृष्ण' ! वासना शुद्ध थव स्योध थव बुद्ध थव सतसय कुन सन्निधान
सतस.य कन थव सतस.य मन थव सतकिस कुलिस वसि आनन्द फल०

❖ ❖ ❖

पर त. पान य'मि समुए मोनुय य'मि हिवुय मोनुय दिन क्यो रात
य'मिस अद्वय मन सां'पुन त'मिय डयूठुय सुर गुरू नाथ

– ललेश्वरी

❖ ❖ ❖

– स्व० मास्टर ज़िंदा कौल

१. कर सना ह्ययि ज़न्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव।
कर सना इयि माति असि पोज रुत सुन्दर श्री कृष्ण देव।।

२. कर सना गट कूठरे अनि गाश वुजमुत स्व प्रकाश।
वांदिवान.चि बेडि फुटरित खोलि बर. श्री कृष्ण देव०

३. वैर लोभ त. द्वेष ता'य अन्याय रूपी दानवन
चक्र सू.ति अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव०

४. ज़ोर जर रस्त्यन दरिद्रन दलितन करि यावरी
द'दिम.त्यन शेहलावि दित शीतल नज़र श्री कृष्ण देव०

५. अर्ज़ुनस दित आज्ञा बदलदिल म. बन थोद वुथ च. लड
कासि ना असि दीनता पस्ती ह्चर श्री कृष्ण देव०

६. कृष्ण पूज़ा क्या छय ? पालुन त'मि सुंदुय थोद कर्म योग
धर्मचे वति हुंद वनावुन राहबर श्री कृष्ण देव०

७. यमि न. वरतावस श्रोनुन गीतायि हुँद अक ओड श्लोक
लाभ क्या थयक.नावनुय लूकन अंदर श्री कृष्ण देव०

८. का'र नोभरित दित बुथिम अध अ'सि वदय ना शर्मि सू.ति
वुत्रक्यनस असि मंज़ अगर इयि च़क्रधर श्री कृष्ण देव०

९. सा'नि दुख ता'य दा'दि त'मिस दि इम्तिहान निष्टायि मंज़
हाल निशि न त. सानि व'निज्या बेखबर श्री कृष्ण देव०

१०. कृष्ण सं.दे लोल दम आम.ति छि यो.त श्री कृष्ण भक्त
अज कर्यक प'जि किञ सफल ज़न्मुक सफर श्री कृष्या देव०

❖❖❖

पा'नि पानस दितो वो.नये।
हाविय शुभ दर्शुनये।।

१.संसार कठोर छु हुन्ये.नये
कुनि रंग नाव तारुनये
वुछत यति केंह न. लारुनये
हाविय०

२.भक्ति कामधेन रछुनये
गुरू शब्द वो.छ लागुनये
वासनायि घास दिस ख्योनये
हाविय०

३.विचार ह्यस दिस घोनये
संतोष दज्जि फयारुनये
ज्ञान अमृत ह्ययि ह्युनये
हाविय०

४.वैराग ल्यजि कारुनये
ह्यन लो.लि ललनावुनये
द्यान. ज़ागि सू.ति ह्ययि ज्योनये
हाविय०

५.चि़त्त क.यि शेहलावुनये
रात दोह ह्यन मुंदनये
सोऽहं दोन त्रावुनये
हाविय०

६.नेर्यस प्रकाश. थ'ञिये
आत्म देव ग़्यव रछुनये
देह गुरसस मंज़ न'ञिये
हाविय०

७.दारि बर बंद करुनये
दो.गुन गछि ओंगुनये
यि रत्न ह्ययि चमकुनये
हाविय०

८.प्रज़नाव पान पनुनये अद
चि़त्त प्रकाश ह्ययि उलसुनये
कति ज़गत भ्यो.नये
हाविय०

९.फलि निश कुल कति भयोनये
सुय फोल. ह्यवान फो.लुनये
फ'लिस.य मंज़ सु आस. वुनये
हाविय०

१०.कति रोज़न त. मरुणये
कुस धारि कस होरुनय
दु.य नलि पत रोज़ि कुनये
हाविय०

११.इच्छा कुल गालुनये
'भक्तिस' हाल भवुनये
त्यलि क्याह नो.न वनुनये
हाविय०

–स्व० श्री नन्द लाल श्री त्रालवासी

१. परिपूरण छु नूर. भो.रमुतये-सूर.मोतये आंगन चाव।

२. शांत निर्मल व्रोंत कास.वुनये
भास वुनये सास रव जन
शिव शंभो अलक्ष्य वोल वुनये सूर०

३. नंग भस्मा अगन मो.लमुतये
हटि भुजग जटि छस गंग
डयूकि चन्द्रम टिक. शोलवनये सूर०

४. अलक्ष्य बूज़ित तिम. गूर्य भाये
जसुधायि सान करान विनती
धन. धारव भो.रहस फो.तये सूर०

५. जोगि दोपनक योगी ज़ा'निव
भोग त्रा'वित छुस निराहार
कामदेवस भस्म कोर मुतये सूर०

६. लोभ क्षोभ नहीं ना अभिलाषा
आशा यह एक मन में
कृष्ण दर्शन करनि आमुतये सूर०

७. राधे श्याम को बोलो आदेश
ईश जोगी वेष धर के
तमि अभिप्राय योर आमुतये सूर०

८. बूज जसुधायि ह्यस व्यस.रा'नी
स्वामी सा'ञ विनती बोज़
खोचि़ बालुक छु रात ज़ामुतये सूर०

९. चानि दर्शन गछि तस छाये
राय क्या छय माय मरहस
अघोर भैरव फेर गछ पो.तये सूर०

१०. जोगि वो.नस छक अनजा'नी
मान योगियन हुँद सरकार
राज़ ज़गि हुंद माजि ज़ामुतये सूर०

११. भार ज़गि हुँद वार-छुस वालुन
गालुन छुस दुष्ट संबन्ध
पालन कर्म वेदव वो.नमुतये सूर०

१२. त्र्यन भवनन भय. सुय कासान
भासान सु नित्य ननि नो.न
मूल ज़गि हुंद व्योल वोव.मुतये सूर०

१३. योग. मायायि संयोग क'र्यथ य
प्रेम. भ'रिथ.य नित हर्षाण
कृष्ख. शंकर क'रित नाल.मोतये सूर०

१४. ईक्षण. किञ कीरुक वार. संवाद
दर्शन. आ'सि हरषा'णी
ती वो.नुक ई ज़गतस द्योतये सूर०

१५. देव आकाश पोश वर्षा'णी
अछ-रछ मच़ नच़नस गयि
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये सूर०

१६. नाद लोयुम त'तिय लोल म'तिये
रासुक भास या'ञ वनि आम
सास "भास्कर" ज़न पूरि खो.तये सूर०

१.वन्दयो मुञ य. पादन छारथो राम. राधन।

२.विच़ार ना'गि वति लारै ब्रह्म.सर. किञ दिमै वन्य
नुनर.कि तार. प्रारै छ़ारथो०

३.अ'छिन हुंद गाश म्योनुय का'लि राव्यम हिये तन
खुश इव.वोन नुंद. बोनुय छ़ारथो०

४.कश. तीर लोयथं म्य अशि फय'र्यन ईयैम तन
लशि छम नार.ञ रेह छ़ारथो०

५.महा'लिशि किञ इमा'यो हंस. द्वार. ग'छित रटै वन
हरमुख व'नि दिमा'यो छ़ारथो०

६.च़. रूदहम कथ शाये गंग.बल युन छु आदन
क्रेंक. न'दियि वो.ठ व.लाये छ़ारथो०

७.गोस. नो केंह म्य चोनुय चार. नो ला'नि वादन
दयन य'लि वान. ज़ोनुय छ़ारथो०

८.च़. ज़ि गोक म्य निश दूर वुज़ि पोञ नाग. राद़न
इज़ि त्यलि यलि गछ़यं सुर छ़ारथो०

९.नाव तन त्राव कीनह़ हाव मुख थाव लादन
भाव सीर दो.द म्य सीनह छ़ारथो०

१०.बरञि बल युथ न. रावैं आलव दिज्यम म्य नादन
राम. राम क्रख त्रावे छ़ारथो०

११.नेत्रन मंज़ रटै पाद मरयो वुञि छु आदन
बुथि शेरि किञ दिमै नाद छ़ारथो०

१२.नाराण नाग. प्रारै प्रारै सूति साधन
वांगत जाय छ़ारै छ़ारथो०

१३.सिर्यस छु गाश चोनुय सो.य छै योग. साधन
तस छु "प्रकाश" चोनुय छ़ारथो०

१. सिर्यि वुज़ने.वुम चंद्रम. सोवुम
तारकन दोवुम शून्य मंज़. थान।
गाश. सू.ति गाशुक गाश प्रज़नोवुम
सुबह रूप होवुम श्याम. लालन।।

२. दिन त. रात पा'द गयि सिर्यि प्रक्रम. सुबह
चन्द्रमन प्याल. भ यं शबनम सू ति
तमि प्याल. श्याम.लाल दामा चोवुम सुबह०

३. मन गुलि आफताब ज़न फो.ल नोवुम
सिर्यि गंज़रोवुम परमात्मा
तत कुन मुख हा'वित सुख प्रोवुम सुबह०

४. आत्म. तीर्थ.मार्तण्ड मंज़ तन ना'वम
पितृ लोकस दा'वम तृप्ती
तमि कर्म.त्र्यन हुंद ऋण.मो.कलोवुम सुबह०

५. निर्वासनकुय आसन प्रोवुम
तति बेहनोवुम प्रत्यक्ष देव
निर्मल पंपोश. डल फोलनोवुम सुबह०

६. श्री 'कृष्णस' सू ति दोह गुज़रोवम
शामन होवुम त'मि श्याम. रूप
सुबहस सू.तिन शाम मिल नोवुम सुबह०

❖❖❖

१. अ'रिञि रंग गोम श्रावन हिये
कर इये दर्शन दिये।।

२. श्याम. सोन्दर पामन ल'जिस
आम. तावह कोताह ग'ज़िस
नाम. पैगाम तस कुस निये कर०

३. कंद नाबद आरुदमुतुय
फंद क'रित चोलुम कोतुय
स्वंद. क'र्यनम लूकन थिये कर०

४. सुलि वोथवो संगर मालन
लाल. छारोन कोहन त. बालन
प्रारान छस ब. तहंज़ि जिये कर०

-अरञिमाल

❖ ❖ ❖

१. मुझे राम से कोई मिला दे।
बिन लाठी का निकला अँधा - राह से कोई लगादे मुझे०

२. कोई कहे वह बसे अवध में
कोई कहे वृंदावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
कोई कहते मिलते वन में
देख सकूँ मैं उनको मन में- ऐसी जोत जगादे मुझे०

❖ ❖ ❖

उँों नमो भवान्यै।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(अष्टम्-तरंग)

१. स्मरणि चाञि पाप सा'री हा'री-हारै पर्वत चि हा'रिये।

२. संकट कट छक हे मुकट धारी
तेज़ चानि प्रज़लन आव संसार
सिंह आसान चिय छय सवा'री हारै०

३. गौरी नावस लगोय पा'र्य पा'री
चाव प्रेम दो.ध चड़वा'रिये
जाञनक अभिनव गुप्त आचारी हारै०

४. न'टि लछलि आकाशन ग्रटन ता'री
नोन नीरित वोन महिमा चोन
परम शक्त मा'ञिक शंकराचा'री हारै०

५. शिव शक्ति रूप ज़ा'नित चो.पा'री
गुलि ग'डित नन्य वुन्य या'री म्य कर
ह्यथ नखस नियक मं'ज कष्टवा'री हारै०

६. नितय सुमेरुस ता'ञ ला'र्य ला'री
कति आ'स वातन. चि शक्त ओस सख्त
पर्वत. प्रदक्षिण. पाप निवा'री हारै०

७. शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय
नो.व न'वराव त्राव प्रोनुय याद
हाल भोव वाल पापन हंदि बा'री हारै०

८. आद्य शक्त पान.छक सर्व अधिका'री
पूज़ा करव.नि सा'रिय च्यय
साध सत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचा'री हारै०

९. चक्रेश्वरस य छु जय जय कारय
सार्यव.य रो.ट दरबार.य सुय
सिद्ध पीठ प्यठ गयि सिद्ध ह्यत सा'री हारै०

१०. स्वानि सू.ति सा'र्य देव जीव व्यवहा'री
चानि सू.ति उल्लसन आव संसार
चानि सू.ति सा'नी छय दुनियादा'री हारै०

११. अष्टादश भुज़वय सू.ति पर्वत.
हित.कार. पुछ़ि छक वत. वा'गरान
सब व्यापक छक सर्व उपका'री हारै०

१२. कर्म लेखा छक पान. परम शक्ती
कर्म सान्य पनञिय भक्ती लेख
क्रत कर्म फल छक दिव. व.नि सा'री हारै०

१३. अज़पा गायत्री ज़होथ अंन्दरी
श्री सुन्दरी योग. न्य'न्दरे मंज़
मन. प्राण. ध्यान ज्ञान. विचा'री हारै०

१४. परमात्म. रूप. छक ज़गत.चि साक्षी
जितेन्द्रिय इन्द्राक्षी छक
प्राण शक्ति सू.ति छक पान. व्यवहा'री हारै०

१५. पान. छक योगी पान. ज्ञा'नी
वाणी रूप भवानी छक
वुज़ सृ.ति ह्यस रटन.चि विस्ता'री हारै०

१६. चामर लाग.होय पोश चा'र्य चारी
चण्डी च.य छक चेतन स्वरूप
चित्त शक्त छक चेनव.न चोपा'री हारै०

१७. मोह ज़ाल मंज़. नेरनुक उपाया
कर राज़ हंसुन साया त्राव
हंस नाद सू.ति तार यमि हंस द्वा'री हारै०

१८. हीमाल पर्वत.न राज़. कुमा'री
चरणन लगोय पा'र्य पा'रीये
'कृष्णन' भक्ति बोज़ कन धा'र्य धा'री हारै०

❖❖❖

१. हीमाल. पर्वतने घरि ज़ायक।
आयक करने जगि पालना।।
परम शक्त परम. शिव छांड.नि द्रायक
कर्म. सू.ति सां'पनिक शिव शक्ति रूप
भगवत् माया बोज़.न. आयक आयक०

३. परमात्म. सिर्यि मंज़. तेज़ा द्रायक

प्रज़ल.नि आयक संसारस
यमि मंज़ द्रायक त'थि मंज़ चायक आयक०

४. ज़गत.चि दाता छक फल दायक
यस च़.य दिख तस दियि शिवजी
सुय च्य लायक च़.य तस दायक आयक०

५. वरण इयिय ह्यथ बैकुँठ नायक
वीगिस खसनस छुय छायक
मान.र्यञ पतिव्रता सती द्रायक आयक०

६. 'कृष्ण' लोल. तारव सेतार वायक
वाणीभवानी च्यय गछिय सिद्ध
सुय करि नाद बिंदु बोज़नस लायक आयक०

❖❖❖

मिलाप

१.पानै म्य पान हा'वित आशायि धारना'वित।
तन्हा चो लुक म्य त्रावित कस त्री म्यानि जोगि रायो।।

२.वुछनोवथस मनुक मल सो.न म्योन द्राव सरतल
वुछमक न. वार. को.रथं चस म्यानि जोगि रायो

३.ह्यकखे वुछित च़. तिम छोख मुचरित ब. सीन. हावय
च़य वन च्य रुस्त भावय कस ? म्यानि जोगि रायी

४.यव किञ बे सुम छय कोमल हृदयस कठोर वाणी
ग्रावन दिमव यतिय छ़यन बस ? म्यानि ज़ोगि रायो
५.लो.भमक त. वो.ञ म रावुम बालन कोह्न म. छावुम
सत्संग. प्लाल. चावुम मस. म्यानि जोगि रायो

६.भगवान सोन बूज़िन असि आश चा'ञ रूज़िन
हथ वा'सी माजि मा'लिस लस. म्यानि जोगि रायों

७.नित्य इष्ट देव. सद्यन पंपोश. पादन य तन
बंबुर ब'नित चवान गछ रस. म्यानि जोगि रायों

८.पज़ि प्रेयमके प्रभावय भोगान सुख त. सावय
निराग राज़. योगस खस म्यानि जोगि रायो

९.दय. सुद प्रसाद सतूज़न भक्तन छि बा'ग रावान
प्रेमुक चवान त. चावान मस. म्यानि जोगि रायो

१०.उपकार. म्यानि बापत थो.द योग. पोठ त्रा'वित
असि निशिति क्यूंच काला बस. म्यानि जोगि रायो

१२.भाषण मधुर मधुर कर फुटराव शकरस मो.ल
अभिमान कोसमन हर अस. म्यानि जोगि रायो

❖❖❖

१.आमच़ मनस रच़ वासना ईश्वर सफल करिनासना।
२.एकांतकिस गुह्लिस अंदर उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपोश. पादन दो.न मलान पननिस गुरुस बो आस हा०

३. पूजायि विध केहें ज़ान मा
छ्यूपि चूरि कुनि म्यूठा दिवान
लोलस निषध मान मा हा०
लो.त तथ खो.रस बो आस हा०

४. य'च़ लोल. अ'छि वछ़ थववुन
सुन्दर मुखचि इकांती वुछान
अ'छ टींटि रुस्त वो श त्रावुन
तस सुन्दरस बो आस हा०

५.वाणी तस ज़ विज्ञान मय
तन मन व'नित कन बोज़वुन
ज़न साम ग्चवनस पान दय
मधुरिस बो आस. हा०

६.सत् शब्द नोन विस्तारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान
उद्गीत स्वर थोद खारिहे
श्रवणुक सुरस बो आस हा०

७.बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत
पुशरित पनुन सोरुय गत
संसार निश मोकलित गोमुत
परमेश्वरस बो आस हा०

८.'वुज़ तात.' व'नि व'नि गारिहम
कर. पदन. हृदयस सारिहम
जल बिंदु ज़न मीलित. गोमुत
सुख. सागरस बो आसहा०

❖❖❖

१.हतो जीवो तसंज़ थव कल
च़. प्रावक सर्वदा मंगल

२.खबर.म छै व. क्व. ज़ायोस
सु मेहनत कर लभक रुत फल
करनि क्याह योर ब.य आयोस
च़०

३. म. रावर क्षण त. दिन तस विन
प्रेयम ज़ल चय मनुक मल छ्ल
सोरुन हरदम च़ जीनित मन
च़०

४. सतन सू.तिन च़. सत् सांपन
अचल आ'सित म. वन च़स्रचल

च़० सत् आसित असत् मो वन
च़०

५. क'रित तय वोथ च़. थानन फेर
वज़िय ज्यीति वुज़ी शशिकल

र'टित दम दम क'रित च़्य नेर
च़०

६. इमन अंदर नज़र था'वित
सिर्यि च़न्द्रम अग्न वुज़मल

पनुन तेज़ा दियम हा'वित
च़०

७.म्यज़ितहठ वठ च़. इन्द्रिय ज़ाल
उदासीन रोज़त. भोग अन्न ज़ल

यि काम क्रोध लोभ त. मोह मद गाल
च़०

८. गछुन युन योस गछ्यि च्यय हान
विच़ार कर बनि सू मुश्क्रिल हल

तम्युक काहण च़. जान अज्ञान
च़०

९.च़. भूतन करत. विसर्जन
ज़्यनह मरण. चि च़लिय गांगल

स्व आत्म चि ज़ान आबाहन
च़०

१०.च़ मित्रस पनुन जर थाव
च़ लाल खारकत. लाग ड्रूंगल

समुद्रस वस त. वस्वास त्राव
च़०

११.हंस आसित च मो बन काव
ज़व स्मृत अन सिरन मो डल

हेस बन दीघ त. पोज़ अज़राव
च़०

१२.अं'द.र्य किञ सारिकुय कर त्याग
वैराग तनि राग. ज़ाम वल च़०

न्यब.र्यकिञ सारिकुय थव राग

१३.च़. 'नीलकंठ' कर सन्यास
च. सू.तिन तव समुद्रस रल

नदी उपाध पानस कास
च़०

१. मनि मंज़ ललवथ कन्हैया लालो।
भय हर बाल. गोपालो वे।।

२. भय. मज कडतम् दयि अकालो
रक्षपाल. हा कृपालो वे
प्रेम. रस. भरतम् मनक्‍ुय प्यालो भय०

३. गोपियन सु.तिन मारव.नि छालो
दुख हर, भक्त रक्षपालो वे
ज़न्म गम कास्तम् कठ.नि कालो भय०

४. दूर्यर चोनुय कोताह चालो
वलनै आस ज़न्म ज़ालो वे
ध्यान. दुकारि तथ बनि परनालो भय०

५. खटतं मत. पान रटथो नालो
आस्तम् च़. ना'ली नालो वे
लूस्मुत प्रार. वोञ कोताह कालो भय०

६. हारान वुछत. छुस अशञे चालो
लालो ! छंति गा'म लालो वे
वालि आम बुज़र ता'य क'हि संभालो भय०

७. दोह आम सोरान छ'ति गा'म वालो
पलि केंह ति पोवुम न. मालो वे
अथ छोन त. न्यथ नोन छुस बे हालो भय०

८. यलि बनि सयोग आसि कुस कालो
दूय रोज़ि न. कुनि कालो वे
गुरू शब्द एकुत बनि नन्दलालो भय०

९. नय छुक आकाश नय पातालो
नय छुक जंगल त. बालो वे
वनि छुकन इवान आ'सित ना'ली नालो भय०

१०. मन सर.कुय बन राज़ निरालो
'नीलकंठनि' छुय सालो वे
रछतम संकट यमि कलि कालो भय०

❖ ❖ ❖

१. **नाद विन्द. परमानन्द नन्द लालै।**
गोकुलानन्द. गोविन्द. गोपालै।।
२. मधु कैटभ मारक.नि हा दो.ध चूरे
मन. मंज़लिस मंज़ करै गृर गरै
गोपी नाथ. वाल. त्रिज़गत पालै गोकु०
३. यादव कुलके माधव रामै
हे निर्मल निष्कल. निष्कामै
गूर्य बालकन सू.ति मारवनि छालै गोकु०
४. राधा-कृष्ण च्यय नादा लायय
श्रीधर प्रेम. स्वर मुरली वायय
रोज़ राम. बोज़ साम वे.दचि तालै गोकु०
५. हृदयस मंज़ बसवनि नित्य लसव.नि
असवनि आसवनि गरुडस खसव.नि
नाल.मति रटहत मो दिम डालै गोकु०
६. हनि हनि मंज आसवति वासुदेवै
रास मंडल खेलव नि कृष्ण देवै
नित्य भासवनि सत यमि कलि कालै गोकु०
७. पंकज़ तनि वैजयन्ती माला
तरज़ अकि ना'लि ता'य मौज दुवाला

संत छिय व'लित बसंत दुशालै गोकु०

८. केशव. शिव रूप नारायणै
वुन दित नोन गोक बिंदावनै
चोन ह्योत चे न प्रेम. मस प्याल प्यालै गोकु०

९. विदुर जियनुय घर. यलि चाख.य
भावनायि सू ति ख्योथ सिवमुत हा.खय
कति गोख तति कोरवन हंदि सालै गोकु०

१०. द्रौपदियि अकि कृष्ण. नाव सू.ति शामै
पैद.नयि तस ति कू.ति वस्त्र त. जामै
ईति क'डिस दुर्योधन.य नालै गोकु०

११. चाञि मायायि सूति मंज़ द्वारिकाये
मधुरायि हंज़. हिश. लरि ता'य जाये
पैद. गयि अकि दम. मंज़ कमि हालै गोकु०

१२. अज़ामल द्राव बोड भाग्य वान.य
निचविस नाव तस ओस नाराण.य
मृत. विजि फूर तस श्री श्रकालै गोकु०

१३. श्री भगवान् छुख पान. प्रत शाये
कुस वोत कुस वाति चाञि मायाये
मोकलाव असि यमि मोहनि ज़ाल गोकु०

१४. 'कृष्णस' शिव रूप. दर्शन दित च़य
सुय च़य च़य सुय केवल छुख न. च़य
श्याम. प्रभात. रूप हावतस कालै गोकु०

❖❖❖

१.लत ला'इथ ससारस– **पत. लारस ल'तिये।**

२.हंस. नादकिस जानवारस ना'लि जाम. छिस छ'तिये
वुफि तार्यम हंस. द्वारस पत०

३.सूर कोर त'मि अंधकारस युस वोर सूर म'तिये
बु.ति धारणाय ध्यान धारस पत.

४.अथ तेज़ रूप आकारस फेर बुठ ता'य प'तिये
पोंपुर ज़न गत. मारस पत०

५.लोल फंबकिस अंवारस रेह म्य दिच़ सूर. म'तिये
स्नेह म्य छुम वोज़ कति प्रारस पत०

६.आरवल मंज़ लोल नारस द'ज़मच़ प्रियम् सू.तिये
शेहजारस मंज़ छ आरम पत०

७.नित्य लग.हा सत विचारस सत भास्नाव स'तिये
स्वर फिरत. चित्त सेतारस पत०

८.वंदुन छुम पान यारस अंदुन छुम य'तिये
च़न्दुन गोम देव. दारस पत०

९.ग्रज व'छ़ सोंद.य नारस यति आ'सित छु त'तिये
वन. वन स.य कन धारस पत०

१०.छाल मा'र्य मा'र्य लोकचारस क'र्य म्य पोशन फो.तिये
शेरि लागस जटा धारस पत०

११.'कृष्णन' दप बाल यारस करहस नाल य'तिये
मेलि श'स्तर त. संगि पारस पत०

१. चाल. छम आशिञे कोताह ब. चाल. लाल.।
बाल. गोपाल म्या'ञ पालना कर।।

२. गिंदनस आमुत पायस न. प्योमुत
न्याय अ़जराव नत रावय बो
त्रा'वित म्य कर-म डाल बाल. विशाल लाल. बाल०

३. कृष्ण ! चा'ञ द्र य छम वायै बोज़क
लायय न. मोक्त मालि पुछि मो खोच
अक रटत नाल लाल. ब्ययि गंडै लोल माल. बाल०

४. देवता यी आ'सि अंदि प'खि बोज़नस
सेव करनस तस भगवानस
संतूर वायनस भैरव वेताल ताल. बाल०

५. पुशरुन छु मोक्त मालि माल कव छच'थं
मोक्त हार पुछिञ्ज ब. मोक्त हारन छस
वात्यक न पनञिय वनतम छिनाल. लाल. बाल०

६. ह्यरि बोन लोभमक न. लूक मा ह्यडनम
छुक बालुक त. छुय न. हर्ष-शोक केंह
कृष्ण इम वनान छिय बननै छ़नाल.लाल बाल०

७. मनस ब्राह्मणस व'निस मंज़ न. आखो
ज़नार्दन. सु न. व.निस मंज़
काल ओस पोज़ त म्य मारने अकाल लाल. बाल०

८. मोक्त मालि पुछि पुक्त. प्राण गव ब्राह्मणस
सक्त गोस पानस ज़ि वापस चाव .
इयि नय कद वुछान पान ज़ाल लाल. बाल०

९. अ'रिस वुरिस रूग प्योस वा'तित
च'रिस गाटस खुर क्याह आस
राज हंस ज़ाल लोग चलनस न. ज़ाल. लाल. बाल०

१०. संसार भ्रम छुय वा'ज्या त. व़ाज़ा
सूरमुत बाज कस फीरित आव
शश, पंज, चहार, सेह ब्ययि दुखाल लाल. बाल०

११. परमानन्द मोक्त हार. कथि कन थव
स'नि स'नि यति क्याह छि सोन डेशान
मुक्त गछि युस करि मोक्तस माल. लाल. बाल०

१२. 'परमानन्द' चन्द. छोन वुछान पानस
नत कति ओस तति मोक्तस मोल
प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्यार माल लाल. बाल०

❖❖❖

भगवान् कृष्णुन मोक्त ववुन

१. गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान।
चित् विमर्श दीप्तिमान. भगवानो।।

२. मोक्त मालि रोस्त ताम कृष्णस डेंशान
लारन त. नाल. मति रटानो
मुख डयूंठनस ता'य मुक्त आ'स गछ़ान. चित्त०

३. शाह छुसन फोरन त. तोरै छुस प्रछ़ान
मा'जि मोक्त व्योल छा ववानो
म्य'ति वोव व्योल खल कोन छक सोंवरान. चित्त०

४. हाव वो कृ.ति लछ कुलि खसान.
वागस छि सास व'दि बागवानो
तसली गोस छुम कृष्ण म'चरावान चित्त०

५. मोक्तस त. म्य'चि छुन बालुक जानान.
म्य च्य क्याह छि य'च फिकिर असानो
मोचि क्याह पतकुन यि यस आसि मोचान.चित्त०

६. कृष्ण य ह्यकि स्यकि मोक्त आसि करान.
यछ पछ़ कोन छव आसानी
रूदमुत संशय रूद मोक्त. वालान. चित्त०

७. जरुधायि मोह. माया ह्यस डालान.
मोक्त क्याह ज़ि त्युथ मोक्त आसानी
युत छुन मोक्त मज़ राज़ ह्वारस ति मेलान.चित्त०

८. अंवना'वित छुसन. तमन्ना नेरान

रंबवञि मोक्त मालि सोरानो
छ'करित मालि बालि छुम तंबलावान. चि़त्त०

९. ह्यत क्या गछ़ि वोञ सु प्रोहत वनान.
हीत छुमन रीत क्याह कव ज़ानो
ब'नित क्याह आम वनित कव ज़ान. चि़त्त०

१०. करनम न. पछ़ मोक्त छुन आसान.
पछ क्याह छय श्री नाराणो
म्यचि़ मुर्य आ'स दित य'च़ आ'स भरान चि़त्त०

११. जसुधायि ह्यस होश नज़ि रूदमुत दान.
मोक्त दान. पुछि दान मनसानो
मोक्तसर ज़ि मायायि कांह छुन ज़ानान. चि़त्त०

१२. ज़गतस मोह अंधकार आव वलान.
वुद्ध छकन सिद्ध छिन प्रावानो
ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोष आसान चि़त्त०

१३. गरज़मंद लूक आ'सि गा'मति देवान
कृष्णञि कथि पछ छिय करानो
नेरि मा बीरि टंग ह्यव नेरि अरमान. चि़त्त०

१४. पकन कृष्णस पत. पत. लारान.
जंगलस मंज़ बाग डेंशानो
मोक्त कुलि भ'र्य भ'र्य त. मोक्त फल नेरान. चि़त्त०

१५. भ'र्य भ'र्य छि मोक्त लंग पथर नमान.
मुफ्त ज़न सु मोक्त डार मेलानो

मथुरायि बूज़मुत मोक्त ह्युन गुर्यन दान. चि़त्त०

१६.आश्चय मायायि आयायि वुछान.
कारण त. ऋषि मुनियन सानो
अ'नि ज़न छि तिम ति तति असि हिव्य गछ़ान. चि़त्त०

१७.सोबरा'वि लूकव मोक्त अंबर खान
नन्द गोप मोक्त. ओस बा'गरानो
पंच, त्र्य भाग.नि फो.त फो ति मेनान. चि़त्त०

१८.प्रोहूत सूजमुत गणेष्ट त्रक सोंबरान.
दक्षिणा यि पूरि पूरि रिंज़वानो
पछ़ छयन लूकन इवान त. नवान चि़त्त०

१६.घर. आख भ'र्य भ'र्य वो.ञ छुकन. रोचा़न.
मोक्तय छि लूख तृप्त गछ़ानो
भगवान छु चो़.पा'र्य मोक्तय छकान. चित्त०

२०.घर. आव प्रोहूत ह्यत सोरि सामान.
धर्म त. दान य'य छु करानो
गूर्य कामधेनन मो.क्त. माल. पा'रान. चि़त्त०

२१.सास. बोज़. मोक्त. माल. तमि मालि खोत. जान.
रत्नव ज'र्य ज'र्य छि वुरानी
सो.ञन छि बोग ह्यत सु प्रोहत सोजान. चि़त्त०

२२.तव पत गोकुल. कि जग होम करान.
देवता कृष्णस छि पूज़ानो
इच्छा भोजन ब्राह्मणन ति ख्यावान चि़त्त०

२३.नच़नस त. गिंदनस गूर्य भायि तोषान.
शुर्यन रटनस न. पोशानाि
कृष्णस त. राधा मातायि वनवान. चि़त्त०

२४.प्रोहृत सु सूजमुत मोक्त. दक्षिणायि सान
ग्यवान त. य'य़ गव रिवानो
धन. श्रवणस छुन. म्योन ह्युव खज़ान चि़त्त०

२५.बक्ष भानस वति कुन अ'छि लोसान
ब्राह्मणस छु ताम दूरि डेंशानो
राज्य ज़न प्रा'वित बाज ह्यत ईवान. चि़त्त०

२६.भा'रन छु मोक्त सो.न स्वार्गी सामान
सास. ब'दि लूक ह्यथ छि पकानो
वार. बार. डेंशान त. वार. बार. वनान चि़त्त०

२७.कोरमुत सु तदबीर घरि छुक रोज़ान.
भगवत मायायि डेंशानो
वुछनस न. वननस न. बोज़नस न. ईवान. चि़त्त०

२८.वनि क्याह कांछ वनि छा ईवान.
ब्रह्मणस ति छिन. प्रज़नावानो
सुशीलायि ज़न त. सुदाम वातान. चि़त्त०

२९.डीशित मोक्त माल रत्नव त. सो.न सान
मोक्त. मोल पनञिय छय मंदछानो
पन. पहा'र पनञिय छु सुदाम छ़ारान. चि़त्त०

३०.डीशि डीशि सोर देश असन त. गिंदान.
राधा मातायि तुतानो
डयक ब'ड कोस इछ़ प्रज़ि मंज़ आसान. चि़त्त०

मथुरायि बूज़मुत मोक्त ह्युन गुर्यन दान. चि़त्त०

१६.आश्चय मायायि आयायि वुछान.
कारण त. ऋषि मुनियन सानो
अ'नि ज़न छि तिम ति तति असि हिव्य गछ़ान. चि़त्त०
१७.सोबरा'वि लूकव मोक्त अंबर खान
नन्द गोप मोक्त. ओस बा'गरानो
पंच, त्र्य भाग.नि फो.त फो ति मेनान. चि़त्त०

१८.प्रोहृत सूजमुत गणेष्ट त्रक सोंबरान.
दक्षिणा यि पूरि पूरि रिंज़वानो
पछ़ छयन लूकन इवान त. नवान चि़त्त०

१६.घर. आख भ'र्य भ'र्य वो.ञ छुकन. रोचा़न.
मोक्तय छि लूख तृप्त गछ़ानो
भगवान छु चो़.पा'र्य मोक्तय छकान. चित्त०

२०.घर. आव प्रोहृत ह्यत सोरि सामान.
धर्म त. दान य'य छु करानो
गूर्य कामधेनन मो.क्त. माल. पा'रान. चि़त्त०

२१.सास. बोज़. मोक्त. माल. तमि मालि खोत. जान.
रत्नव ज'र्य ज'र्य छि वुरानी
सो.ञन छि बोग ह्यत सु प्रोहत सोजान. चि़त्त०

२२.तव पत गोकुल. कि जग होम करान.
देवता कृष्णस छि पूज़ानो
इच्छा भोजन ब्राह्मणन ति ख्यावान चि़त्त०

२३.नच़नस त. गिंदनस गूर्य भायि तोषान.
शुर्यन रटनस न. पोशानाि
कृष्णस त. राधा मातायि वनवान. चि़त्त०

२४.प्रोहृत सु सूजमुत मोक्त. दक्षिणायि सान
ग्यवान त. य'य़ गव रिवानो
धन. श्रवणस छुन. म्योन ह्युव खज़ान चि़त्त०

२५.वक्ष भानस वति कुन अ'छि लोसान
ब्राह्मणस छु ताम दूरि डेंशानो
राज्य ज़न प्रा'वित बाज ह्यत ईवान. चि़त्त०

२६.भा'रन छु मोक्त सो.न स्वार्गी सामान
सास. ब'दि लूक ह्यथ छि पकानो
वार. बार. डेंशान त. बार. बार. वनान चि़त्त०

२७.कोरमुत सु तदबीर घरि छुक रोज़ान.
भगवत मायायि डेंशानो
वुछनस न. वननस न. बोज़नस न. ईवान. चि़त्त०

२८.वनि क्याह कांछ वनि छा ईवान.
ब्रह्मणस ति छिन. प्रज़नावानो
सुशीलायि ज़न त. सुदाम वातान. चि़त्त०

२९.डीशित मोक्त माल रत्नव त. सो.न सान
मोक्त. मोल पनञिय छय मंदछानो
पन. पहा'र पनञिय छु सुदाम छ़ारान. चि़त्त०

३०.डीशि डीशि सोर देश असन त. गिंदान.
राधा मातायि तुतानो
डयक ब'ड कोस इछ़ प्रज़ि मंज़ आसान. चि़त्त०

३१.संपता नचनस त. वचन वनान.
हर्षस गोमुत सु वृक्ष भानो
शरण कृष्णस छय राधा गछान चित्त०

३२.ब्राह्मण अभ्यागत त. ऋषण सोंबरावान.
पजन. खोत आरि धन. खर्चानो
रजि़ता'य प्रज़ि मंज़ आश्चर्य ज़ानान चित्त०

३३.जग. होम ज़प तप ऋषि मुनी पूज़ान.
तुतान दोशवति त. वनवानी
देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यवान. चित्त०

३४.देवियि त. देवता धारणायि धाराण.
राधा कृष्ण. कृष्ण. ज़पानो
राज्य लक्ष्मियि मा'जि को.छि को.छि क्यत ह्यवान चित्त०

३५.व्यस. ता'य दास इम० खास खास आसान.
तिमन.य मू.ति घरि गिन्दानो
घरि घरि करिहे मनि कृष्णन ह्यान. चित्त०

३६.यी मनि फोरान त. ता आस सो.रान.
प्रेम सू.ति वा'णियि वनानो
व्ययि व्ययि व'नि व'नि त. व्ययि व्ययि वनान.चित्त०

३७."परमानन्द" तति पादन प्यवान.
साधन सुय फल मंगानो
टोठिनस राधा सहित कृष्ण. भगवान. चित्त०

१. मधु कैटभ मारवनि युद्ध वेष धारवनि।
शुद्ध शान दोध चूर. गूर.गूर. करयो।।

२.शहर शहर. गाम गाम. राम. राम. परयो
दक्षण उत्तर पछम पूर. गूर०

३.छिय बसंत रग जाम इन. चानि फोजम शाम.
लजि-लजि मूर. मूर. गूर०

४.कर ह्यो केश. राग द्वेषकिस शीशस
खजि खजि चूर.चूर. गर०

५.बंबूर. गीता छय गोपियि गावान
स्वर्ग. मंडल.चि हूर गूर०

६.सिर्यि दर्शन दित. मोह गटि मंज़ नित
इत. नूर.कि नूर गूर०

७.होश अ'लिशि पोश. किस गोशस प्यठ बेह
श्याम. रंग बंबूर. गूर०

८.तुलमी छावय हियि तन नावै
फ'लिल. मुश्क. काफूर. गूर०

९.मन.नकि तेलन. निधि ध्यासन टोठ
श्रवण.कि कन.दूर. गूर०

१०.राज़. योग राज़ बोज़ सा'नि ताज ताज स्वर

प्रेम. साज़. संतूर.　　　　गूर०

११.देह. अभि मानुक　　　　कुल ह्यथि छननुय
तीव्र. वैराग. सूर.　　　　गूर०

१२.हे हरिहर. ! पाप　　　　पाप हर "कृष्णस" कर
अनुग्रह पूर. पूर.　　　　गूर०

❖❖❖

१. मंज़ पोश. बागन प्यठ नागरादन।
फेरनि द्राहम साधन सू.ति।।

२. कन थावतं प्रेम भ'रत्यन नादन
आदन बाजि छम लादन चा'ञ
पूर्यर करतम था'विम.त्यन वादन
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति

❖❖❖

शिव निर्वाण

शिव शंकर भव भय हर हर, लगयो चरणन।
गुरू लगयो पादि कमलन् सत् गुरू लगयो च़रितन्।।

१.च़रणन् तल वार. वरतन्　　　　वरदा छुक शरणन्
शरण.य च्यय आस कासतम　　　　मल म्य अन्तःकरणन्
कर शंकर कर रटहम　　　　कर अर हर मरणन्
मर मर छुम ज़्यन मरनुक　　　　अमरेश्वर भगवन्

पादि कमलन तल म्य पालतम पालवुन छुक कालहन्
हन्य हन्य चय शिव वुछहथ यव दु.य गल्य हन हन शिव०

२.दय अदुय द.इ म्य गच्छतम कर, दय दय निशि दिन
दीन दयाल कन म्य थावतम दीन वचनन त. वदनन
ज़र ज़र छुम जुज़रणक्य ज़ीरनावतम मत. हन्
हननावन. हननावतम मन्य मोह युथ मुनियन्
देहपुष्ट मन तुष्ट थावतम देवजुष्ट छुक दुष्टहन्
वानै ईश्वर पानै तोषतम् पान वन्दयो तोषणन् शिव०

३.अन्त कुस ज़ान्य च्य अनन्तस सन्त व्यसरेय चिन्तनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्तीय यत्य वेद लग्य पन्थनन
ब्रह्मादिक गय मोहस् तत्व च्योन क्या व्यज़रन्
तत्पुरुष चय तत्व म्य भावतम वथ म्य हावतम ज़ाननन्
गथ छय सिद्ध शुद्ध मुनियन् सध छथ्‌म शाप मोच़नन
शाप मोच़न ज्ञान लोचन पार्थ्य आर्या लोचनन शिव०

४.तेजोरूप तेज़ चय छुक सोम सूर्यन त. अग्नं
तेजोरूप च.य भासान बाह्य अन्तर योगियन्
स्वप्रकाश त. स्वानुभवगम् शान्ततेजः ज्ञानियन्
शिष म्यत्य दित कर्म सुम स्यज़ ज़ान यछ ज़न कादिकन
ज़ान ज़ानुन जान्नीय च.य क्याह ब. ज़ान. च्यान्य ज़ान्य व्यन
त्रान उपदेश वार. वरतम् फर अज्ञान पटलन शिव०
५.निष्कारण सर्व कारण चय कारण कारणन
त्रेकार छुक च.य कारण सष्ट स्थिच तय प्रलयन

च.य कर्ता च.य भर्ता
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत
भुज़ि क्याह वन. चज़ि क्याह
ज़ान सोरुय चान्य दया

च़.य हर्ता ज़गतन्
च़य निरन्तर भवनन्
छुक युस न ज़ोन कांसि ज़ान्य ब्यन
चान्य कृपा भगवन शिव०

६.देव पोज़ छुक देव पूज़नीय
विज़ि विज़ि भुजि पनि पूजह्थ
भाव वामन फुलनाविथ
बो से मन्य ब्यन लागह्य
सोवुन्द यछि पछि हन्दय् पोप
पादि कमलन तल म्य पालतम

पूज़ा व्यध पूज़नन्
युथ च़ पूज़नख विष्गन
माल करह्य कौसमन्
भ्यय गुन्ध्य करह्य कौसमन्
लागह्य पादि कपल।
तल ह्यथ क्यथ विघ्नन शिव०

७.शुद्ध निर्मल शिव पूजह्थ
शुद्ध मन च्यय ध्यान धारीथ
नीलकण्ठस च्यय हटि वासुक
सुधा धारा गंग ह्यरि शेरि छयय
शिवा धारमंच वाम भागस
धर्म रूप वृषभ वगि त्रिशूल

यव सपन्य शुद्ध मन
शुद्ध स्फाटिक विकसन
चि़त्त् आत्मस तमोगुण
तारव.ञ् सु.ज़ि नरकन
चि़त्त शक्त चित्त् आत्मन
त्रि अवस्थाय अथि सन् शिव०

८.श्वेत सुन्दर छुत भस्मा
रुण्ड माला गल्य गंडम.च
क्याह छय जटा मुकट शोभान
टिकि शाय हिरि डिकि चन्द्रभ
दिक् वासन निर्वासन

तन्य प्रकटयोग सत्वोगुण
रोष कोतमुत इन्द्रियन
छ्ल गुण्डमुत रजोगुण
प्रकटयुथ च्योन शुद्ध मन
वास च्योन मन्य सुमनन

त्रिवाम छुख ज्ञान बुज़तय		त्रिकार रूप त्रिनयनण शिव०

९.माया तीत माया चान्य		त्रिगुण सू.ति विकसन
निर्गुण छुक गुण उल्लङ्गित		माया गुण विलसन
भूत भावत भूत पंचक		देह खर कुर अहमन
दह इन्द्रिय मन बुध ह्यथ		प्राणबल सू.ति प्रसरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन		जीवभावस कुर शयन
तादात्म भाव देह के लोभ		प्राकृत बल ज़ीवनन शिव०.

१०.मोह ज़ाल सू.ति ज़ीव गण्डन		आव कर्मनिन बन्धनन
काम क्रोधन स्थित रटनरस		प्यठ मनस बुज़ त इन्द्रियन
द्वन्द्वभावत रागद्वेष सू,ति		काप्य लुग षट् शुत्रन्
गुण सङ्ग सू ति व्त गछ्य् लुग		पुण्य पाप वश बांध.जन
मुक जा रोक पाय चय शिव		मोक्षदा छुक भक्ति न
भव बन्धन मुक्लावतम		छुक च़ य भव. ! भव. भयहन् शिव०

११.निष्क पञ्च च्योन सोरुय प्रपञ्च		वाञ्च छम करस वर. कन
हे हरे हर विरिञ्चि बोज़तम		क्याह वन पञ्च दैवतन
वन च़. क्याह कर. चञ्चल मन.		संसार क्यन ख्येंचलन
पञ्चवदन मुक्लावतम केंह्		अन्त छुन न च्यान्य व्यन
कून. कून. कून मुनोय तोषतम		केंह् अन्त छुन ह्येरि बुन
रुति मुख मुख सुख वरतम		सुख सुन्दर दुःख हन् शिव०

१२.सम दितम संपदा यव सम		सुम रोज़हा समयन
सम यस गछ़्यि चान्य दया		लग्य सुम स्यज़ संयन

सम्य समिरस. प्रथ गुण किञ | समयन तय साधनन
सुम आहार सुम विहार सम | निद्रा त. जागरण
संभालिथ पानस सुम | सुम शुज़रिथ शायहन
लग्य समाध योग सम स्यज़ | विज़ि सत् गुरू वचनन् शिव०

१३.भक्ति प्रिय भक्ति दायक. दय | युस इच्छहन भक्ति जून
भक्ति भावत. भक्ति भावनाय | च्यन कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छ्लबल. | बल. फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धारीथ | रटि प्राण बुद्ध चित्त त.मन
यम नियम शम दम सम्य मन. | सुरि सुय दय क्षण क्षण
मन ज़ीनिथ पोज़ चीनिथ गछि | ज़ीनिथ भवनन शिव०

१४.यस संक्षति पोत अच्य मन | सुरत्त आस्यतन विभवन
लोर आस्यन अन्न धन्नन् | घरबारन त. सन्तनन
व्यवहार क़्यन काम्यन प्यठ | परद्यन हज़्य काम्य ज़न
प्रारब्धुक भोग भोगान् | भेगवुन ज़न स्पप्नन
रागीज़न सार्यस.य सू.ति | त्यागित सर्व कामनन
गच्छि संसार सर तरीथ | लड करान सूह ज़न शिव०

१५.युदवै कांसि ओरै यीयि भंग | संग मेल्यस साधुज़न
साधुजन युस सम्य चित्त ताय | समताय निश आस्य भिन्न
भ्युन्न रूत क्रत द्वन्द्व भावन | छ्यन दिस सर्व कामनन
शम दम ज्ञान विज्ञान सुरत्त | रुरत्त कपटन त. कल्पनन
ब्रह्म तत्पर आस्य आस्यस | परेह्ट सर्व विषयन
बुड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्योग | लभ्य ज्य वु ह्योह साधुजन शिव०

१६.युस कांह यछि पानस रुत   क्रुत त्राव्य प्राव्य मन
शुद्ध मन भक्ति भावतगुण   कन थाव्य साधु वचनन
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत   ज़ाग्य ज़ाग ह्यथ समयन
समय वातयस शम यम नियम.   पानै ता'र्य तस मुच़रन
दीन दयाल. हे कृपाल   कांस्य गट छयन चाञ्य ब्यन
सत् भाव छम सथ चाञ्यी   सत् गथ दिम भगवन् शिव०

१७.त्यल्य च्योनुम भुज़ि क्याह छुस   यलि वाच़म चेनवन
चेनन आयम दया चा'ञ   चेननावान सेवकन
भक्त युदवै मुक्त थावहम   मुक्त छुस निष बन्धनन
सुप्रकाशतः अविनाशी   माशवीथ ज़्यन मरणन
सत चित्त आनन्द रूपस स्थिथ   न्यन ह्यथ निगुर्ण. गुण
प'ज़ दया चा'ञ भगवण   करि क्याह म्या'ञ वन.वन शिव०

१८.शांत निर्मल भांत छम चा'ञ   मानतम सार वन.वन.
अख शुभ दृष्टि शिव करतम   नाव चोन शुभाअशुभन
शीादायक शुभ दृष्टि चा'ञ   सार शोभा शोभियन
शोभवुन च़.ई त्रिन भवनन   शोभ्रहथ पोषवर्षअन
शोभरावतम ज्ञान सादा   शोभ यथ. यीय ज़गतन
शोभ स.रुय चा'ञ दया   चा'ञ कृपा भगवन् शिव०

१६.अविनाश बढ आश पूरतम   नाश करहा कल्पनन
आशा पूर. आशा चा'ञ   आश छम राश पपनन
गटि हन्दि घाश. चित् प्रकाश.   घाश अनतम नेत्रन्
माशविथ रूज़ सर्व कल्पनन   नाशविथ सर्व वासनन

प्रकाश. शान्त. सु प्रकाश. | च़.ई घाशुर घाशरन्
पर. प्रसाद गुरू प्रसाद | करू प्रसाद भगवन् शिव०

२०.संसारचीय. छुच़ आशा | शुर्य मुर्य ताय सन्तनन
भा'य बन्ध तय धन संपत | घर बार तय सोज़न
सोर असोर भ्रम सोरुय | मृगतृष्णा यिथ ज़न
शिव च़.य म्योन शुर्य मुर्य | तय भा'य बन्ध तय सारी ज़न
च्यय मोल मा'ज च्यय घरबार | च्यय संपत् द्यार धन
च्यय सो'रुय च्यय सारय सह्य | रोज़तम भगवन् शिव०

२१.लोभ छुम न सुरगण हुन्द | क्षोभ तित. भिय नरकुन
रुत क्रूत सुख दु:ख भोगान | फल पनन्यन कर्मन्
हर नाव सूति थर. थर अच़ान | दूरि यम. क्किंकरण
शिव भक्त सज़ सहाय छांडान | माय. पनन्य देवगण
अख शुभ दृष्ट शिव छम चाञ | लछ विभवन त. स्वर्गन
सुय शुभ दृष्ट शिव करतम | पानै वरतम भगवन् शिव०

२२.नव नाथेश्वर च़य छुक | नव निधान छुक सेवकन
नव्य खुत.नुव नुव बु वुछहथ | लगि नुव नुव नवनन
नव गंडिथ नव रटीथ | नव प्रणव व्याहरण
नव दक्षपाल ह्यथ रोज़तम | ईश राछ निश भ्निन
नवदुर्गा करि पक्ष म्योन | युस रक्षक शनणन्
नव द्वार पुर. खस वुफ ह्यथ | नववुन्य शिव भवनन् शिव०

गोविन्द माला

१.निस्पन्द सांपन सो वुन्द सू.ति नित्य भगवत धारणा धर
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द कर।

२.मनाुष्य जन्म दुर्लभ देवन सुलभ जीव प्रोवुत चे
गुरू शास्त्र पुर्पारथ पूर्वक निर्मल बुद्ध सांपर्नी
क्यों सोया मोहनी सजया पर जाग रे चत्रे नर गो०

३.अब है गोविन्द मिलने की भारी सब काज तजा कर
गोविन्द चर्णारविन्द अमृत पी के मन रजा कर
मानुष्य देह फिर हाथ नहीं आवत भवसर पार उतर गो०

४.श्रीमान सर्व लोक पाल दीन दयाल भगवान बाल गोपाल
कोमल श्यामल अंग, देव आभरण, गल तुलसी माल
गगन सदृश्य अविभूत दर्शन आश्चर्य.मय अक्षर गो०

५.त्युथ शुभ समय कर सन ईयम युथ म्य वरि रघु राये
रघु कुल दीपक दर्शन दियं करि म्योन मोक्षोपाये
श्याम सुन्दर राम चन्द्र दर्शुन आसि नख़. शांत भासकर गो०

लेखक :- "संतोषी"

❖ ❖ ❖

दिम म्य रच. त. शुद्ध वाणी महाराज्ञी भवानी।
यछ़ त. पछ छम म्य च्या'नी महाराज्ञी भवानी।।

१.मंगहाय च़ेय ब. वरदान
रूज़ मा चा.ञ म्य निगरानी
छुम न. मंगनुक म्य त्युथ ज्ञान
महाराज्ञी०

२.यलि न. च. थवख म्या'ञ कल
कुस लभन च़ेय ह्यब. दा.नो
वन. कस ब. छुस दुर्बल
महाराज्ञी०

३.यल. छु चोनुय योत दरबार
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी
पूर. ब.रि ब.रि छि अंबार
महाराज्ञी०

४.कांह अखा ति आशवान
लभि न ज़ांह सु मान हा.नी
वाति युस च़े निश मायि सान
महाराज्ञी०

५.यस च़. रोज़ख पान डखिदार
पोरि कुस तस प्राणी
दिख सुमन भक्त अधिकार
महाराज्ञी०

६.भक्तिभावस च. छख ला'र
छुय च़े नाव ईशा.नी
फल दिनस छाचे निशि ता'र
महाराज्ञी०

७.छख शिवा . शिव शक्ति
च़य उमा च़य ब्रह्माणी
चय हय युक्ति त. मुक्ति
महाराज्ञी०

८. नव निधान छिय चे ब'डि कोश
छुस मंगान ब. सुय च्य ज्य'नी
दिम म्य परम सुख त. 'संतोष'
महाराज्ञी०

लेखक :- 'त्रैलोकी नाथ" हशरा

मा'ज्य शारिका.य कर दया
कर दयायि हंज़ दष्टी

वर दया ही भवा नी
सु.छि ब'ड मेहरबानी।

१.आय लारान चे़ निश योर
मत. वुछत. कर्मन कुन

कर्म खुरि बावा.नी।
सारी छी पशेमानी।०।

२.कुताम रोज़ि युन त. गछुन
तार दिवान सारिन.य छख

कुताम रोज़ि क्रेशुन त. वदुन
असि ति रोज़ तारानी।०।

३.कुपुत्र छु माजि आसान
असि भगान चा'नी दया

मा'ज्य छन तस.ति रोशान
जगतच राज. रानी।०।

४.नखि छख डखि छख चई
दौह त. रात चोनुय फिरान

चेय सिव काह ति छुन बियाख
अख अजाब रूहानी।०।

५.ओश वसान चालि चाले
कोंह ति छुन. वगान बोजुन

मा'ज्य भवा.नी हावी दर्शुन
कोंह नय छी असि ज़ानानी।०।

६.वूज़मुत छु हलि मुशिकिल
अख रछा करत वुन्य गोर

बनि असि तवय आय योर
हीमालच राज रानी।०।

७.दासा छु दर इन्तिजार
ल्यममि मंज़ पंपोश खार
मा'य शारिका.य कर दया।।

भवसागरस दिस तार
बोज़तय चय म्याञ ज़ारी

उों नमो भवान्यै।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(नवम्-तरंग)

लल वाख

१. अभ्यास किनि व्यकास फोलुम,
सौ प्रकाश जोनुम यिहोय दीह।
प्रकाश द्यान मौख यी दोरुम,
सौखय बोरुम कोरुम तिय।।

२. गौर. कथ, हृदयस मंज भाग रटम,
गंग ज़ल नाविम तन त मन।
सौ दीह जीवन मौखतय प्रोवम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख।।

३. पानय आव पानस सतिय.
पानय पनुन कोरुन व्यचार।
पानय पनुन पान नेछि नोवुन,
पानय गुपुन पनुन पान।।

४. ल्लिलि गौर ब्रमांड प्येटय किन्य वुछुम.
श्यशकल वाचम पादन. तान्य,
ज्ञान कि अमरयत प्रकरथ बग्म।
लूवय मोरुम अन्द वन्द तान्य।।

५. क्रया करम दग्म कोरुम,
तिरथन नावम पननिय काय।

पापन सौंबरिथ बसम क.रुम,
तत्ति कुस ओस तय योत कम. आय।।

६.पवन त प्राण सोमुय डयो.ठुम,
मीलिथ रूदुम शेर खोर तान्य।
दीह यलि मोठुम अद कयाह मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्राण।।

७.मनस स'तिय मन.य गोंडुम,
च्यतस रटम चौर्पाय वग।
प्रकच. सतिय पौदुय वोलुम
सर. मे कोरम लबम वथ।।

८.कथा बुज़म कथय करम,
कथाय करम चौपार्य सथ।
शास्त्र किनिय कथय बूज़म,
कथायि हावम सतच वथ।।

९.पूरक कौंबक रोच़क कोरुम,
पवनस त्रावम् प्यठय किन्य वथ
अनाहतस वसम कोरुम,
कैंह नो मोतुय सौय छम कथ।।

१०.कैंहनस प्यठय क्या छुय न. चुन,
मौचिय कैंह न त न. चुन त्राव।
पोत् फीरिथ छुय तोतुय अ चुन,
यिहोय व.चुन च्यतस थव।।

११.करमुक कुला नो छुय विनिथ ग़छुन,
वनिथ ग.छुन क्याह छुय पाय।
कशफुक फलछय मीलिथ ग.छन।
व.लिथ रो.जुन कुस छुय न्याय।।

१२.कायस अन्दर रुदुम अचिथ।
न्यायस थवनम चौपयि शाय,
पाय केंह लोबुम नो माय छस क'रिथ,
ज़ायस न आयास लोंगुम नाव।।

१३.कोसम बागस द्योतप्रय अ.चन।
पचियय मन त अ.चुन त्राव,
सरूप दरशुन छु तोतुय अ.चुन।
कोत छुय ग.छुन पकुन त्राव।।

१४.कामस सतिय प्रय नो ब.रम।
क्रूदस द्युतुम पवनुन फेश,
लूबस मूहस चरण चटिम।
तृष्णा चज़िम गयास खोश।।

१५.ल्यक न थौक प्यठ शोरि ह्यचम।
न्यंदा स. पतिम पथ ब्रोंठ तान्य,
ललि चिह्न कल ज़ाह नो छयनिम।
अद यलि स. पनिस व्यपिंहे क्याह।।

१६.ज़गस अन्दर कऽ त्याह पऽलिम।
सारिय छि छांडान दयि स'ज वथ,

लछि मं.ज अकिस दया ज़'निम।
मऽनिम यी दप्यजि ईशर गथ।।

१७.गायत्रेय अजपा छल. अकि ताऽजिप।
सूह्म सतचिय क'रमस थक.
अहमस लोत पऽठय जठरय वऽजिम।
गौर कथ पऽजिम च.ऽजिम चख।।

१८.कौल तय मौल कथ क्योत छुय।
तऽत. क्योत छुय शांत स्वभाव,
क्रयि हुंद आगुर वति क्योत छुय।
अन्तः क्योत छक्रय गौर. सोंद नाव।।

१९.श्रान तय ध्यान क्याह सन. करिय।
च्यतस रठ त्रकरय सन. करिय।
मनस त पवनस मिलवन क.रय।
सहजस मज़ कर तिरथ स्नान।।

२०.प्राणस सतिय लय यलि करम,
ध्यानस थवतम न रोज़नस शाय।
कायस अन्दर सो.रुय वुछुम,
पायस पोवुम कडमस ग्राय।।

२१.मनस ग्राय चज पजिकुय अन्न ख्योम,
तव कुय बल गौम करमस क्रय।
आगुर वतिथ अमरथय जल चोम,
छिवलय मन गोम बरमस प्रय।।

२२.स्यथ्या कपट असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय वोपदीश।
ज़नस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूष।।

२३.कायस बल छुय मायस ज़ागुन,
प्राणस बल छुय शब्द स्वरूप।
आयस बल छुय तत्व व्यद जानुन,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य।।

२४.गगनस भूलस शिव यलि ड्यूठुम,
खस लबि न रोज़नस शाय।
सिर्ययिकि प्रभाव. व्यशमय. ज़ोतुम,
ज़न गव थलस सत्य मीलिथ कयाह।।

२५.वा व, च ग्राया पानस वुछिस,
वानस डीठिस सोरि रंग वस।
ध्यासन अन्दर, दम. दम. मीलस,
गौनन त्रोवुम मुचरिथ बर।।

२६.रो.ज़नि आयास ग़छन ग़छयम,
पकुन ग़छयम वावलूक पाल।
केहनस प्यटय न.चुन ग़छयम,
अचुन गछयम सूक्षम प्रकार।।

२७.वाख छोह दिथ मौखस बीठम,
मौखस ठीठम रोज़नस शाय।
दौखस अन्दर न्यंदर मीठम,
बौद यलि ज़ीठम मीठम कथ।।

२८.शेलायि हंज़ऽय वौतमा बाज़म,
सोंबरूम ट्योग पोष आसन पठ।
मनस अन्दर व्य. चार कोरुम,
वुछम त डयू टुम शेल कनिवठ।।

२६.जनम प्राविथ व्यबव छोंडुम,
लूबन बूगन ब.रम प्रय।
सोमुय आहार स्यठा जोनुम,
चोलुम दौख दौख वाव पोलुप।।

३०.जल. प्येव पकुन थ्यकुन लूकन,
नारस अचुन मारस व्यद।
आकऽश्य गमनो वुफुन आसुन,
कपट वासुन आसुन च्यथ।।

३१.अन्दर अनिथ न्यवर छोंडुम,
पवनन रगन फयुर नंस सौर।
ध्यान किन्य दयदगि कीवल जोनुम,
'नन्ना गाव सन्नास सत्य मीलित कयथ

३२.ॐ कार शरीर कीवल ज़ोनुम,
शब्द रूप रस गंध्य स,तिय ह्यथ।
आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम तौथ दोरुम शेरस प्यठ।।

३३.जन्म प्रासिव केंम सोदुम,।
धर्म पोलुम सौय छम सथ।

न्यत्रन अन्दर प्रयम दोरुम,
चोरुम त मोनुम यिहोह अख।।

३४.सौरगस मा. जुन कयाह छुय वासुनो,
नरकस वासुन आसुन दूश।
चख र, शु न आसुन शिवमय खासुनो,
पान्य आसुन कासुन बीद।

३५.मनस गुन छुय चंचल आसुन,
च्यतस गुन छुय ग़छन दूर।
जीवस गुन छुय ब'द्धि त्रेश आसुन,
आत्मस गुन छुय न आसुन लीफ।।

३६.शिव त शक्त कत्यू डोंठिम,
तिमव र टम कामंस जाय।
दायस दऽर ससि सने मीठम,
तीलिथ रूजम त्राविथ लर।।

३७.शेरस सतिय सोदा कोरुम,
हरस कौरुम गौड सीवन।
शेरस प्येठव किन्य न. चान डयूठम
गछान डयूठुम आयम पछ।।

३८.कुनुय अछुर वु वरि पोरुम,
सोय म्य रोटम हृदयस मज
सोय म्य लोत पाट'य गोरुम त चोरुम,
आ स़ स सरतल ग़यस सोन।।

श्री कृष्ण कार जी

१. वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय　　श्री शारिका देवी नमः
म्यहरे चराचर सुँदरी　　श्री शारिका देवी नमः।।

२. अव्वल तुई आखिर तुई　　बातिर तुई ज़ाहिर तुई।
गईब तुई हाज़िर तुई　　श्री शारिका ....।।

३. जगरा सशे सामा तुई　　शाहे शहन्शाहा तुई।
जिसमें जहां व जान तुई　　श्री शारिका ....।।

४. लक्ष्मी जहां आरा तुई　　ममाई देश अफ्ज़ा तुई।
बुद्धी महाविद्या तुई　　श्री शारिका ....।।

५. देवी जगत माता तुई　　शिव शक्त गुरू दाता तुई।
माता पिता भ्राता तुई　　श्री शारिका ....।।

६. हाजत रवाऐ आलमें　　शाहे शुजाअत अक्रमे।
कायम मुकामे दाम में　　श्री शारिका ....।।

७. अज़हर से कारन वर्तनी　　दर्हर से आलम सर्वरी।
बर्फर कि इन्द्र मुश्तरी　　श्री शारिका ....।।

८. सीमवो ज़रो बहरे दुरी　　लोलोऐ लाला गवहरी।
ज़ेबे दु आलम अनवरी　　श्री शारिका ....।।

६. सहम व गजन फर वा हनत　　शिवजा अस्त ज़ेरे आसतल
लालो जवाहर दामनत　　श्री शारिका ....।।

१०. तू चार दह रत्ने गिरा　　तू नव निदाने बेकराँ।

तू कानि गवहर दर अमा श्री शारिका ....।।

११.शक्ते तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान।
तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका ....।।

१२.नागे त्रिलूको तिरथ जात सरचश्मे आबे हयात।
आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका ....।।

१३.गरदे रहत् कोहलये बसर खाके दरत् नूरे नज़र।
.संगे समीरत सीभव जर श्री शारिका ....।।

१४.नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहेर अनवरी।
माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री ....।।

१५.चिकरी शरवूहाजत् खा साजद् गदा रा पादश।
वाह-वाह चह लक्ष्मी थापना श्री ....।।

१६.रोगन चरागे पाम्परी सिन्दूरी खासा लाहोरी।
चहरव् कुनम् ज़रदोजरी श्री ....।।

१७.दर बारगाहत रोज़ व शब नारद मुनीशर बाअदब।
दरबानि दरगाहत् तलब श्री ....।।

१८.गुल अज़ सरे खुद मी कुनम, ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम्
पूजायतू खहम् कुनम् श्री ....।।

१९.अफ सुरदा अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा।
दस्तम् बिगीर अई देवता श्री शारिका ....।।

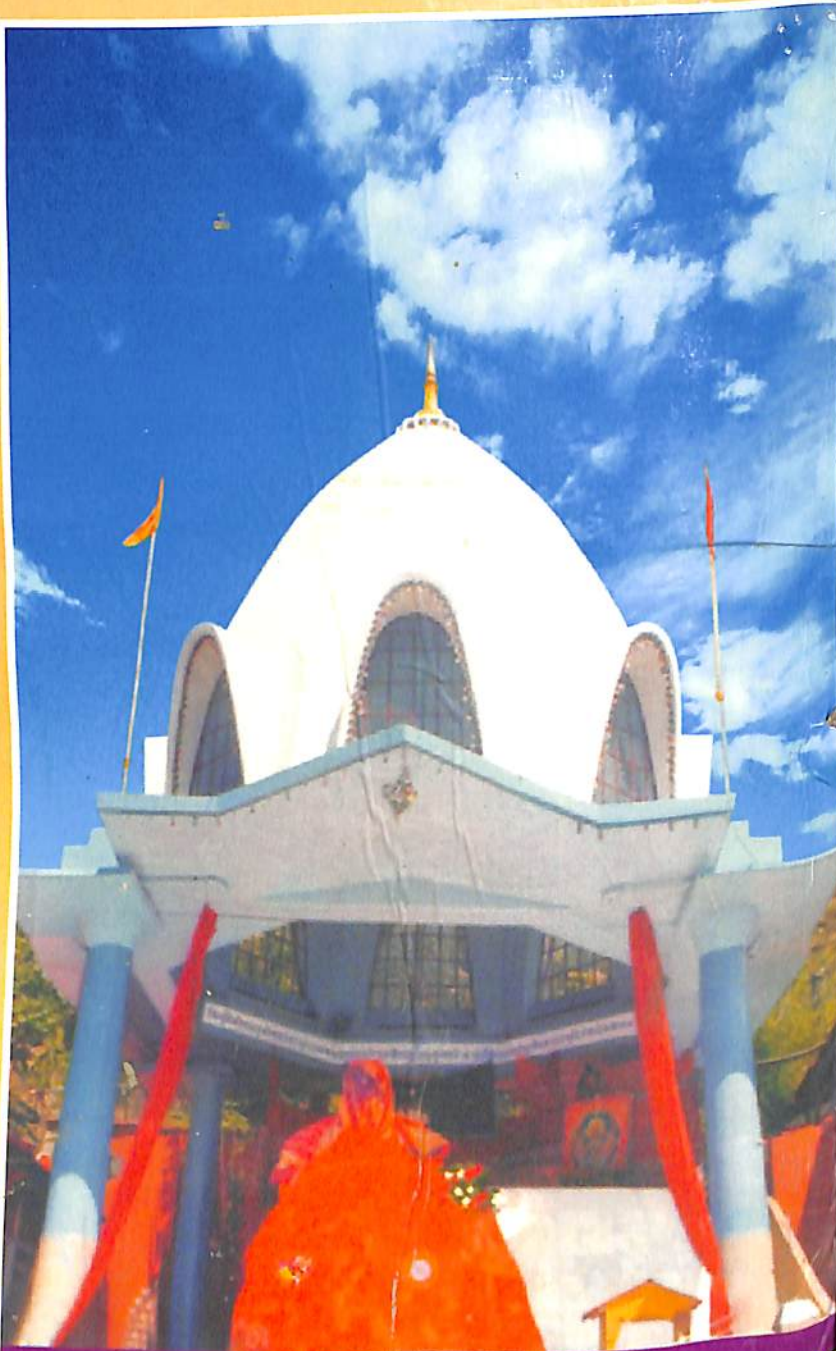
२०.ही इष्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्णकार।
गोयद त्वता जोयद दया श्री शारिका ....।।

पं० जानकीनाथ कौल 'कमल'

शिव-शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर
शिव-शंकर शम्भो !

मन शु'द्ध बनि साक्षात् ननि
हनि हनि गटि मन्ज़ गाश
सुव्यचार ब्ययि श्रद्धायि पर -शिव०
प्रभातस अछ मन्दिरस
गंग-ज़ल तन ना'विथ
ध्यान-धारणायि मनि-मन्ज़ सुर -शिव०
शिव नाथस गो'ड दि अशि-जल
शेरि लागुस भाव-पोष
मन-प्राण वार तुता कर -शिव०
इन्द्रिय नैवेद्य स्वम्बराव
मन-त्राम'रि मन्ज़ थाव
देह दीप ज़ा'लिथ वार पर -शिव०
वास'नायि धूप थाव दज़वुन
विज्ञान-दीप व्रजवुन
व्यज़-पूर्वक व्यज़ना कर -शिव०
सहस्त्रदल 'कमल' फोलराव
शिव-अनुग्रह यि'थ प्राव
शिव न्यथ सुर चलि ज़्यत मर
शिव-शंकर शम्भो !



SHRI SHRI JAGAT AMBA SHARIKA CHAKRESHWAR ASTHAPAN
DEVI ANGAN, HARI PARBAT, SRINAGAR (REGD.)